सन्तकवि बैजनाथ

व्यक्ति और साहित्य

सन्तकवि बैजनाथ महोत्सव

२८ जनवरी, ९५; दिन-शनिवार

इन्दिरा बाजार, बाराबंकी

अध्यक्ष - श्री लक्ष्मी कान्त वर्मा
कार्यकारी अध्यक्ष, उ० प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ।

मुख्य अतिथि - महामहिम श्री मोती लाल वोरा
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश।

विशिष्ट अतिथि - श्री बद्री नारायण तिवारी
अध्यक्ष, मानस-संगम, कानपुर।

राष्ट्रभाषा परिषद्, बाराबंकी, (उ० प्र०)

राम-कथा साहित्य के महान भाष्यकार

सन्त कवि बैजनाथ

का

संक्षिप्त जीवन-परिचय

शरद् पूर्णिमा, वि. सं. १८९०	श्रीहीरानन्द जमींदार मानपुर-डेहवा, नवाबगंज; बाराबंकी की १४वीं सन्तान के रूप में श्रीमती भगवती देवी की कोख से जन्म। बाल्यकाल से ही ग्राम-पाटमऊ के जमींदार-पितृव्य श्री फकीरे राम के पास रहकर शिक्षा प्राप्ति।
वि० सं० १८९८	ग्राम-पाटमऊ के जमींदार पितृव्य श्री फकीरे राम के यहाँ अयोध्या के प्रसिद्ध सन्त वैष्णव दास का आगमन, बैजनाथ जी के गुरु फकीरे राम का उनसे राम-मन्त्र की दीक्षा एवं शिष्यता ग्रहण।
माघ, वि० सं० १९०६	सिरौली (सिरौली-गौसपुर) गाँव के चौधरी देवता दीन की छोटी पुत्री गौरा देवी से विवाह।
फाल्गुन, वि० सं० १९०६	बैजनाथ जी के पितृव्य गुरु फकीरे राम का अयोध्या गमन एवं गुरु आज्ञा से स्थायी रूप से वहाँ रहकर श्री सिय-पिय-केलि-कुंज-रामकोट का निर्माण कार्यारम्भ।
वि० सं० १९०८	बैजनाथ जी का अयोध्या-गमन, गुरु फकीरे राम से भक्ति-धर्म-काव्य-इतिहास पुराणादि का गहन अध्ययन तथा श्री सिय-पिय केलि-कुंज-रामकोट निर्माण कार्य की देखरेख। अधिकांश समय अयोध्यावास गृहस्थ-धर्म पालनार्थ यदा-कदा मानपुर आना-जाना। धर्मपत्नी श्रीमती गौरा देवी से दो सन्तानें जानकी प्रसाद और रामलाल का जन्म।
वि० सं० १९१४	बैजनाथजी के पिता श्रीहीरानन्द का स्वर्गवास, तदनन्तर गुरु फकीरे राम की आज्ञा से गांव–मानपुर में निवास पैतृक सम्पत्ति की देखभाल के साथ श्री राम भजन एवं साहित्य-साधना।
वि० सं० १९१७	श्री राम-जानकी ठाकुरद्वारा मन्दिर–मानपुर का निर्माण कार्यारम्भ।
वि० सं० १९१८	श्री राम-जानकी ठाकुरद्वारा मन्दिर में भगवान श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा एवं श्रीराम-लीला प्रारम्भ। सम्प्रति उक्त राम-लीला पौष शुक्ल ३, ४, ५, को प्रति वर्ष होती है।

पौष कृष्ण ९, वि०सं० १९५०	गुरू फकीरे राम का १०५ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास। तदनन्तर बैजनाथ जी का घर परिवार की सारी जिम्मेदारी ज्येष्ठ पुत्र जानकी प्रसाद को सौंपकर गुरु फकीरे राम के उत्तराधिकारी शिष्य के रूप में श्री सियपिय केलि-कुंज - रामकोट, अयोध्या में निवास भगवद्-भजन, साहित्य-साधना एवं तीर्थाटन ।
वैशाखशुक्ल,७ बि०सं० १९५४	दतिया (म० प्र०) राजा के यहां प्रवास के समय रविवार को सायं ४ बजे स्वर्गवास ।

साहित्य-साधना

● प्रकाशित ग्रन्थ

१.	श्री सीताराम संयोग पदावली	मौलिक	– जुलाई,	१८८० ई०
२.	कवितावली सटीक	तुलसीकृत	– अक्तूबर,	१८८२ ई०
३.	तुलसी-सतसई सटीक	,,	– अप्रैल,	१८८६ ई०
४.	गीतावली सटीक	,,	– जनवरी,	१८८९ ई०
५.	रामचरित मानस सटीक	,,	– जनवरी,	१८९० ई०
६.	विनय पत्रिका सटीक	,,	– अप्रैल,	१८९१ ई०
७.	छन्दावली रामायण सटीक	,,	– मई,	१८९१ ई०
८.	छप्पय-रामायण सटीक	,,	– मई,	१८९१ ई०
९.	बरवै-रामायण सटीक	,,	– मई,	१८९१ ई०
१०.	वैराग्य-संदीपनी सटीक	,,	– अक्तूबर,	१८९१ ई०
११.	जानकी-मंगल सटीक	,,	– नवम्बर,	१८९१ ई०
१२.	रामलला नहछुर सटीक	,,	– नवम्बर,	१८९१ ई०
१३.	श्री सीताराम पावस विलास	मौलिक	– नवम्बर,	१८९१ ई०
१४.	श्री हनुमान बाहुक सटीक	तुलसीकृत	– दिसम्बर	१८९१ ई०
१५.	हनुमानाष्टक सटीक	,,	– दिसम्बर,	१८९१ ई०
१६.	कुण्डलिया-रामायण सटीक	,,	– जनवरी,	१८९२ ई०
१७.	श्री रामाज्ञा प्रश्न सटीक	,,	– मार्च,	१८९२ ई०
१८.	श्री रामनाम कलामणि कोष मंजूषा सटीक	,,	– जुलाई	१८९४ ई०
१९.	अध्यात्म-रामायण सटीक	वेदव्यासकृत	– दिसम्बर,	१८९४ ई०
२०.	षट्-ऋतु वर्णन	मौलिक	– दिसम्बर	१९०५ ई०
२१.	नख-शिख वर्णन	मौलिक	– मई	१९१३ ई०

● हस्तलिखित ग्रन्थ

२२.	काव्य-कल्पद्रुम (मौलिक रचना)	वि० सं० १९३५,	प्रकाशित प्रति अप्राप्त
२३.	वाल्मीकि-रामायण सटीक	महर्षि वाल्मीकिकृत	अप्रकाशित
२४.	लीला-प्रबन्ध (मौलिक रचना)		क्षतिग्रस्त प्रति उपलब्ध

आस्था

भगवान राम
हमारी बाँहों की शक्ति,
आँखों की ज्योति;
और हृदय के विश्वास के रूप में
सदा से सर्वदा के लिए
जीवित और जागृत हैं।

संकल्प

कानन सुयश राम ध्यान मन माहि देखि,
श्याम रूप नैन बैन राम गुण गाइहौं।
राघव प्रसाद माल सूँघि उर धारि नित,
रसना सो राम ही को जूठ अन्न पाइहौं।
कर राम मन्दिर को मार्जनादि सेव साज,
पाद राम धाम ही को नित प्रति जाइहौं।
धाम-धन-बाम-सुत मोहि एक रघुनाथ,
'बैजनाथ' माथ नित राम पद नाइहौं।।

निवेदन

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी;
आओ, बिचारें आज मिलकर, ये समस्यायें सभी।

– राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

हमारी आकांक्षा

१. बाराबंकी–जैदपुर मार्ग से मानपुर डेहवा होकर हैदरगढ़ मार्ग से जुड़ने बाली सड़क का नाम 'सन्तकवि बैजनाथ मार्ग' रखा जाय।
२. बैजनाथ-साहित्य का पुनर्प्रकाशन एवं विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में समावेश किया जाय।
३. सन्तकवि बैजनाथ के जन्म ग्राम–मानपुर डेहवा को साहित्यिक-सांस्कृतिक पर्यटन स्थल घोषित कर विकसित किया जाय।
४. भारत सरकार देश भर में सन्तकवि बैजनाथ निर्वाण शती–१९९७ पर राष्ट्रीय स्तर पर समारोहों का आयोजन एवं डाक टिकट का प्रकाशन करे।

राष्ट्रभाषा परिषद के महासचिव-अजय सिंह के लिए सरदार पटेल संस्थान, बाराबंकी द्वारा प्रकाशित एवं नव ज्योति प्रेस, बाराबंकी द्वारा मुद्रित।

सन्त कवि बैजनाथ

व्यक्ति और साहित्य

सम्पादक

अजय सिंह

प्रकाशक
अजय सिंह
महासचिव
राष्ट्रभाषा परिषद्
बाराबंकी

प्रथम संस्करण - १९९४

पुस्तक प्राप्ति का स्थान
राम प्रताप सिंह
साकेत मिष्ठान भंडार
नाका सतरिख, बाराबंकी

मुद्रक
अल्पना प्रिंटिंग प्रेस
मधु - निवास
सत्यप्रेमी नगर, बाराबंकी

मूल्य : इक्यावन रुपये

समर्पण

समस्त ज्ञात - अज्ञात
रामभक्तों
के
करकमलों
में
सादर
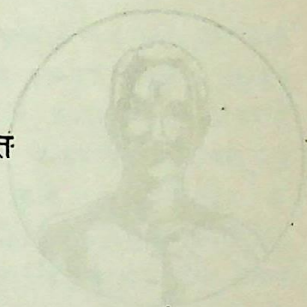
तजि सियराम भजौ नहिं आनहि ।
चन्द चकोर मोर घन चातक स्वाती सलिल रूप करि पानहि ।।
आन बस्तु कोउ कहै सुनौ नहिं सुबश चलै तौ जीभ मुख भा नहि ।
नत पराउ श्रुति मूंदि सडर ज्यों मृग शिशु सहि न सकत दुख बानहिं ।।
कलि पाखण्ड कुमतबादी कहि साखी शब्द कुमारग ठानहि ।
कौड़ी पाय त्रिपित लघु मति गुण रतन अमोल राम किमि जानहि ।।
जो श्रुति बिदित पुराण बेद युग शिव ब्रह्मादि रटत गुण गानहि ।
अविरल भक्ति स्वरूप महाछवि सीताराम चहत उर आनहि ।।
तकि सब मत सिद्धान्त शोधि करि आदि मध्य औसान प्रमानहि ।
'बैजनाथ' विश्वास हृदय दृढ़ कहै कोउ कोटि तनक नहिं मानहि ।।

पुरोवाक्

बाराबंकी जनपद की रत्न प्रसविनी उर्वरा भूमि ने गोस्वामी तुलसीदास के गुरु नरहरि दास (नरहरिया गाँव), निर्गुण ब्रह्म के उपासक सन्तकवि चतुर्भुज दास (रामपुर - जहाँगीराबाद), अकबरी दरबार के प्रख्यात कवि होलराय (होलपुर - चौबीसी), सत्यनामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक सन्तकवि जगजीवन दास (कोटवाधाम), प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा की अमर कृति 'हंस - जवाहिर' के रचनाकार कासिमशाह (दरियाबाद), रामकथा साहित्य के महान् भाष्यकार भक्त कवि बैजनाथ (मानपुर - डेहवा), हिन्दी साहित्येतिहास के आदि लेखक पण्डित महेश दत्त शुक्ल (धनौली), कृष्ण भक्तिपरक काव्य रचनाकार राय राजेश्वर बली (दरियाबाद), 'पारिजात' लोक महाकाव्य के प्रणेता गुरु प्रसाद सिंह 'मृगेश' (बुढ़वल - रामनगर), 'लक्ष्मण' महाकाव्य के रचयिता शिव सिंह 'सरोज' (डंडियामऊ) प्रभृति साहित्यकारों को जन्म देकर हिन्दी साहित्य की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान किया है ।

राम कथा साहित्य के महान् भाष्यकार सन्त कवि बैजनाथ (१८३३-१८९७ ईसाब्द) के आविर्भाव के समय देश में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन था । तत्कालीन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारतीय शासन के विषय में प्रसिद्ध अँग्रेज तत्ववेत्ता हरबर्ट स्पेन्सर लिखता है— "देशी नरेशों को धोखा दे-देकर एक दूसरे से लड़ाया गया, पहले उनमें से किसी एक को उसके विपक्षी के विरुद्ध मदद देकर गद्दी पर बिठाया गया और फिर किसी न किसी दुर्व्यवहार का बहाना लेकर उसे भी तख्त से उतार दिया गया । इन सरकारी भेड़ियों को किसी न किसी गँदले नाले का बहाना सदा मिल जाता था । जिन पर इन लोगों के दाँत लगे होते थे, उनसे पहले बड़ी। बड़ी रकमें बतौर खिराज के लेकर

उन्हें निर्धन कर दिया जाता था और अन्त में जब वे इन माँगों को पूरा करने के नाकाबिल हो जाते थे; तो इसी संगीन जुर्म के दण्ड स्वरूप इन्हें गद्दी से उतार दिया जाता था। यहाँ तक कि हमारे समय (१८५१ ई०) में भी उसी तरह के जुल्म जारी हैं। आज दिन तक नमक का कष्टकर इजारा और लगान की वही निर्दय प्रथा जारी है। जो गरीब रय्यत से जमीन की करीब-करीब आधी पैदावार चूस लेती है। आज दिन तक भी वह धूर्ततापूर्ण स्वेच्छाचारी शासन जारी है, जो देश को पराधीन बनाये रखने और उस पराधीनता को बढ़ाने के लिए देशी सिपाहियों का ही बतौर साधनों के उपयोग करता है। इसी स्वेच्छाचारी शासन के नीचे अभी बहुत साल नहीं गुजरे कि हिन्दुस्तानी सिपाहियों की एक पूरी रेजिमेंट को एक-एक कर इसलिए जानबूझ कर कत्ल कर दिया गया क्योंकि इस रेजीमेण्ट के सिपाहियों ने बगैर पहनने के कपड़ों के पहने कूच करने से इनकार कर दिया था। आज दिन तक पुलिस के कर्मचारी धनवान लफगों के साथ गरीबों से जबरदस्ती धन ऐंठने के लिए सारी कानूनी मशीन को काम में लाते हैं। आज के दिन तक साहब लोग हाथियों में बैठकर निर्धन किसानों की फसलों में जाते हैं और गाँव के लोगों से विना कीमत दिये रसद वसूल कर लेते हैं। आज के दिन तक यह आम बात है कि दूर के गाँवों के रहने वाले लोग किसी यूरोपियन की शक्ल देखते ही जगल में भाग जाते हैं।,,

इस प्रकार के विषम राजनैतिक-सामाजिक पीड़ा और सत्रास के युग में एक सम्पन्न जमींदार परिवार में जन्मे पले और ऐश्वर्यशाली जमींदार विद्वान् पितृव्य गुरु फकीरे राम के पास बाल्यावस्था से ही रहकर विद्याध्ययन किये युवा बैजनाथ ने विदेशी शासन के विरुद्ध लोगों के अन्तर्मन में जल रही आग की तपन का अनुभव किया था। भारतीय जनता द्वारा अंगरेजों को देश से बाहर खदेड़ देने के लिए लड़े गये प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम को उन्होंने देखा था, और देखा था विदेशी शासकों द्वारा किये गये उसके क्रूरतापूर्ण दमन को; तथा उससे उपजी जन-जन की व्यथा और हताशा का भी उन्होंने अनुभव किया था।

इस भीषण जन विद्रोह के परिणामस्वरूप देश का शासन इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया द्वारा सीधे अपने हाथ में लेने के समय की गयी मन-मोहक घोषणाओं को सुनकर लोगों ने क्षणिक सन्तोष का अनुभव किया था कि अब देश पर मँडराते अकाल, अभाव और अत्याचार के बादल छँटेगे। देश में सुव्यवस्था, सुख-शान्ति और न्याय सबको सुलभ होगा। जनता के दुख दूर होंगे। परन्तु शीघ्र ही यह सुख स्वप्न टूट गया। महारानी के आश्वासन कोरे वादे निकले। लोगों ने देखा कि रेलें अकाल पीड़ितों को अन्न पहुँचाने के लिए

नहीं वरन् बन्दरगाहों तक कच्चा माल ढोने के लिए हैं । देश के उद्योग और शिल्प को नष्ट करने का षड्यन्त्र आरम्भ हो गया । देश को महज कृषि पर निर्भर रहने को विवशता के हाथों सौंप दिया गया, जिससे आकाशी कृपा पर जीवित रहने वाली खेती हमारा साथ न दे सकी । देश में अकाल पर अकाल पड़े और महामारियों के शिकार होकर लाखों लोग काल के गाल में समा गये । अकाल के बावजूद लगान में बढ़ोत्तरी हुई । टैक्स बढ़ाये गये । इसके विरोध में उठे स्वर का गला घोंट देने के लिए १८७८ में वनक्यूिलर प्रेस एक्ट आया । दूसरी ओर सामाजिक स्थिति इससे भी अधिक भयावह थी । धार्मिक असहिष्णुता और अधिक कठोर हुई । विदेश - यात्रा, विधवा - विवाह का वर्जन तथा बाल - विवाह और बेमेल - विवाह की कुप्रथाओं से सामाजिक - पारिवारिक सन्तुलन गड़बड़ा गया । पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण से देश में भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों के प्रति भयावह खतरा उत्पन्न हो गया ।

इस भयावह स्थिति से हताश किंकर्तव्यविमूढ़ जनता को बैजनाथ जी ने राम कथा संजीवनी पिलाकर देश की संस्कृति और समाज की अस्मिता की रक्षा के लिए एकजुट होकर लड़ने की प्रेरणा दी ।

× × ×

बैजनाथ जी का व्यक्तित्व अवध की उस धरा की उपज है, जिसमें गेहूँ और धान की यौवनपूर्ण गन्ध तथा आमों के बौर की महक है । वह अवध जिसके शस्यश्यामलांचल में आदि गंगा गोमती, पुण्य सलिला कल्याणी और उच्छल तरंगतोया सरयू (घाघरा) सतत प्रवहमान हैं । जहाँ काली अमराइयाँ नील मेघों से घिरती है और शारद चन्द्र की चन्द्रिका से सुधा सिक्त होती हैं । वह अवध जो तुलसी, चतुर्भुज, जगजीवनदास की अमर वाणी और नवयौवनाओं के प्रेमगीतों से एक साथ नवजीवन और नव स्फूर्ति प्राप्त कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम के सत्य, संयम और मर्यादा का प्रचारक है ।

बैजनाथ जी के व्यक्तित्व के विकास में उनके गुरु संत फकीरेराम का महत्वपूर्ण स्थान है । श्री सिय पिय केलि कुञ्ज, रामकोट; अयोध्या के संस्थापक सन्त फकीरे राम जी रसिक भावान्वेषी भक्त थे । श्री सिय पिय केलि कुञ्ज मन्दिर के भव्य प्रवेश द्वार पर लगे एक प्राचीन शिलालेख में लिखा है—

"श्री सिय पिय कल केलि की, रसिक कुञ्ज विश्राम ।
श्री गुरु आयसु लहि रची, रसिक फकीरे राम ।।"

श्री सिय पिय केलि कुञ्ज, रामकोट, अयोध्या में श्री सीतावल्लभ नाम नामी ठाकुर जी की स्थापना कराकर भगवद् - भजन कर रहे अपने पितृव्य - गुरु सन्त

फकीरे राम के पास सम्वत् १९०८ में बैजनाथ जी चले गये और उनके पास ही रहने लगे। सन्त फकीरे राम ने उन्हें विधिवत् गुरु-मन्त्र देकर उनका नाम 'सिय बल्लभ शरण' रखा, जो लोक व्यवहार में साधु समाज में 'सिया सरन' ही प्रचलित रहा। 'गीतावली-टीका' के चतुर्थ संस्करण—१८८९ की भूमिका में बैजनाथ जी ने स्वयं लिखा है—

"रसिक लता सिय कल्पतरु, बैजनाथ पितु धाम।
सिय बल्लभ पद शरण युत, गुरु दीन्हों यह नाम॥"

यहीं अयोध्या में गुरु फकीरे राम से बैजनाथ जी ने श्रुति-पुराण, उपनिषद्, ज्योतिष, दर्शन, वैष्णव भक्तिशास्त्र, काव्य-शास्त्र आदि का गहन अध्ययन किया। वि० सं० १९१४ में बैजनाथ जी के पिता हीरानन्द का स्वर्गवास हो गया। तब से वे गुरु की आज्ञानुसार अपने जन्म ग्राम-मानपुर-डेहवा में आकर रहने लगे। घर-परिवार, जमींदारी की देखभाल के साथ-साथ अधिकांश समय भगवद्-भजन और स्वाध्याय में बिताते हुए उन्होंने ठाकुरद्वारा मन्दिर का निर्माण करा कर उसमें भगवान राम-जानकी की स्थापना की।

ठाकुरद्वारा मन्दिर में विराजमान भगवान राम-जानकी का नित्य प्रति विधिवत् पूजन, भजन-कीर्तन, कथा-वार्ता उनके दैनन्दिन जीवन का क्रम था। इसी ठाकुरद्वारा में बैठकर उन्होंने अधिकांश राम कथा साहित्य का अध्ययन एवं सृजन किया।

बैजनाथ जी के गुरु फकीरे राम का वि० सं० १९५० पौष कृष्ण-९ को निधन हो गया। तब वे घर-बार की सारी जिम्मेदारी अपने ज्येष्ठ पुत्र जानकी प्रसाद को सौंपकर अयोध्या चले गये और सिय पिय केलि कुञ्ज-रामकोट के उत्तराधिकारी शिष्य के रूप में ठाकुर श्री सीताबल्लभ जी की सेवा करने लगे। अधिकांश समय अयोध्या में बिताते हुए कभी-कभार विशिष्ट अवसरों पर गाँव-घर भी आया जाया करते थे। जनश्रुति के अनुसार 'बाल्मीकि-रामायण की टीका' का कार्य उन्होंने अयोध्या में ही प्रारम्भ किया था, जिसे वे सुन्दर काण्ड तक ही कर पाये थे कि उनका दतिया में असामयिक निधन हो गया।

× × ×

सन्तकवि बैजनाथ उच्चकोटि के रस सिद्ध कवि, कुशल लीला नाटककार प्रामाणिक लक्षण ग्रन्थकार तथा आचार्य मल्लिनाथ सदृश आचार्यों की परम्परा के महान टीकाकार थे। इनका काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'काव्य-कल्पद्रुम' इनके शास्त्रीय वैदुष्य का परिचायक है। इनकी सियाराम संयोग पदावली, 'नख-शिख-वर्णन' षट्-ऋतु वर्णन, श्री सीताराम पावस-विलास, लीला-प्रबन्ध

आदि मौलिक कृतियाँ इनके आचार्यत्व का उद्घोष करती हैं ।

वे ऐसे राम भक्त साहित्यकार हैं, जो देशकाल की छोटी सीमाओं में आबद्ध नही होते । आदिकवि वाल्मीकि रचित 'बाल्मीकि-रामायण', महर्षि वेदव्यास प्रणीत 'अध्यात्म-रामायण' सहित सम्पूर्ण 'तुलसी वाङ्मय' के सम्पादन एव भाष्य ग्रन्थों के प्रणयन के कारण इन्हे हिन्दी साहित्येतिहास में राम कथा साहित्य के महान् अध्येता के रुप में सदैव स्मरण किया जायेगा ।

खेद का विषय है कि आज तक उनके साहित्यिक योगदान का सम्यक् अध्ययन-और मूल्यांकन न हो सका ।

× × ×

राष्ट्रभाषा परिषद ने 'तुलसी-जयन्ती'-८६ के अवसर पर 'भारत-भारती' से सम्मानित प्रख्यात साहित्यकार डॉ० कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह की प्रेरणा से रामकथा साहित्य के महान भाष्यकार सन्तकवि बैजनाथ के जीवन और साहित्य से सुधी समाज को परिचित कराने के लिए जिला मुख्यालय पर उनकी स्मृति में स्मारक निर्माण कराने तथा स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशित कराने का संकल्प लिया था । इस संकल्प को साकार करने के लिए १२ नव०, ८६ को मैंने एक पत्र जिलाधिकारी को देकर उनसे इन्दिरा बाजार के मध्य निर्माणाधीन उद्यान का नामकरण 'सन्तकवि बैजनाथ उद्यान' रखे जाने का अनुरोध किया था । तत्कालीन जिलाधिकारी निरोतीलाल गुप्त ने अपने आदेश २९ दिसम्बर, ८६ द्वारा उक्त उद्यान का नामकरण 'सन्तकवि बैजनाथ उद्यान' रखे जाने का प्रस्ताव स्वीकार करते हुए नगरपालिका की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण प्रतिमा स्थापना में असमर्थता व्यक्त करके राष्ट्र भाषा परिषद, बाराबंकी को अपने व्यय से उक्त उद्यान में सन्तकवि बैजनाथ की प्रतिमा स्थापित करने की अनुमति प्रदान की । जिसकी सूचना मुझे तत्कालीन अधिशासी अधिकारी श्री राम नरेश पाल ने नगरपालिका पत्रांक-३४/मु० का०/दिनांक २७–२८ अप्रैल, ८७ द्वारा लिखित रुप से प्रदान की ।

इसी के पश्चात् मैं उक्त उद्यान में प्रतिमा स्थापना के प्रयास में लगा । प्रतिमा निर्माण की जिम्मेदारी प्रख्यात मूर्तिकार श्री रघुनाथ महापात्र-लखनऊ को सौंपकर मैंने स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशन के लिए सामग्री जुटानी प्रारम्भ की । मेरी जीवन यात्रा में आयी विभिन्न विघ्न-बाधाओं के कारण यह कार्य अपेक्षित समय में पूरा न हो सका, एतदर्थ मैं क्षमाप्रार्थी हूँ । सम्प्रति, स्मारक-निर्माण एव स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशन के सकल्प को पूरा होते देख मैं अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ ।

मैं अपने को परम धन्य समझूंगा, यदि मेरे जैसे अकिंचन का यह प्रयास लोगों को सन्त कवि बैजनाथ के जीवन और साहित्य के अध्ययन-अनुशीलन के लिए प्रेरित कर सके ।

× × ×

सन्त कवि बैजनाथ : व्यक्ति और साहित्य (स्मृति-ग्रन्थ) हेतु मेरे विनम्र अनुरोध को सहर्ष स्वीकार कर यथासमय लेख लिखकर देने के लिए विद्वद्वर डॉ० कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह, डॉ० ओमप्रकाश पाण्डेय, डॉ० अम्बिकानन्द मिश्र, श्री आनन्द मिश्र 'अभय', डॉ० त्रिभुवन नाथ शर्मा 'मधु', श्री हेरम्ब मिश्र, डॉ० (श्रीमती) अर्चना तिवारी और डॉ० भगवान वत्स के समक्ष मैं नत मस्तक हूँ, जिनके कृपापूर्ण सहयोग से ही यह कृति वर्तमान स्वरूप में अस्तित्व में आ सकी ।

सन्त कवि बैजनाथ के प्रपौत्र श्री रघुराज बहादुर वर्मा ने सन्त कवि बैजनाथ से सम्बन्धित दुर्लभ सामग्री के प्रयोग की अनुमति के साथ यथासामर्थ्य आर्थिक सहयोग भी प्रदान कर मेरा उत्साहवर्धन किया; ईश्वर ! उन्हें सपरिवार सुख-शान्ति-समृद्धि और दीर्घायुष्य प्रदान करे । सन्त फकीरेराम का दुर्लभ चित्र तथा अन्य जानकारी प्रदान करने के लिए उनके सुयोग्य वंशज श्री विश्वम्भर नाथ वर्मा का मैं कृतज्ञ हूँ । इस कृति के प्रकाशनार्थ साहित्यानुरागी श्री रमेशचन्द्र गुप्त (अमेरिका), सेठ आशाराम वर्मा (बम्बई) सहित जिले के प्रख्यात चिकित्सक डा० एस० एस० वर्मा, समाजसेवी संग्राम सिंह, पण्डित चन्द्रशेखर तिवारी, श्री काशीप्रसाद वर्मा, श्री अवध बिहारी शरण वर्मा, श्री रघुनाथ प्रसाद वर्मा ने जो उदारतापूर्वक आर्थिक सहयोग प्रदान किया है; उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता ।

सन्तकवि बैजनाथ के जीवन और साहित्य से सम्बन्धित छाया चित्रों के चित्रांकन के लिए श्री नीहार रंजन आचार्य-जुबली स्टूडियो तथा पुस्तक के आकर्षक आवरण चित्र के लिए श्री मो० यूसुफ-माइ आर्ट स्टूडियो का आभारी हूँ ।

सामग्री-संकलन तथा तथ्यों के सत्यापन के सम्बन्ध में की गयी यात्राओं में मार्गदर्शक की तरह सदैव साथ रहे सरदार पटेल संस्थान, बाराबंकी के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश सिंह एवं श्री रामजानकी ठाकुरद्वारा मन्दिर न्यास-मानपुर के प्रबन्धक श्री रामप्रताप सिंह के प्रति किसी प्रकार का आभार व्यक्त करना उनकी भ्रातृवत् आत्मीयता का निरादर होगा ।

श्रद्धेय गुरुवर आचार्य श्री शिवमोहन सिंह का प्रोत्साहन तथा पूज्य पितामह सुकवि श्री शिवराज सिंह का आशीर्वाद मेरा सम्बल रहा है ।

इस कृति के प्रकाशन के प्रति विशेष अभिरुचि प्रदर्शित करने के लिए समाज सेवी श्री जगदीश राय अग्रवाल, डा० एस० पी० टण्डन, डा० के० सी० बनर्जी,

सुकवि सुन्दर लाल 'अरुणेश', संस्कृतिकर्मी शशांक बहुगुणा, श्री के० एन० साहू, श्री धीरज कुमार अग्रवाल, श्री कपिलदेव कुसुमेश, श्री सूर्यनारायण टण्डन, श्री वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल, श्री रामेश्वर उपाध्याय, श्री सुरेश बहादुर सिंह 'कौशिक' श्री टी० के० राय, श्री हरिप्रसाद वर्मा, डॉ० श्याम सुन्दर दीक्षित, प्रदीप कुमार वर्मा और डॉ० (श्रीमती) अनिता सिंह का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ।

पुस्तक की छपाई के लिए अल्पना प्रिंटिंग प्रेस, बाराबंकी के स्वत्वाधिकारी श्री श्रीश शर्मा तथा उनके सहयोगी कर्मचारियों को हार्दिक धन्यवाद।

जाने - अनजाने और भी जिन मित्रों-हितैषियों ने इस कृति के प्रकाशन में किसी प्रकार की सहायता की, उन सबके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

'वत्सराज - सदन'
बच्छराजमऊ, बिसुनपुर
बाराबंकी

अजय सिंह
सम्पादक

अनुक्रम

परिचय - प्रभा

काव्य - चन्द्रिका

परिशिष्ट

परिचय-प्रभा

साहित्य-साधनारत बैजनाथ जी

वन्द्यः केन न भूतले

—डाॅ० अम्बिकानन्द मिश्रः

आद्या मानसी टीका कृता येन प्रबोधिनी ।
वैद्यनाथो महाभक्तो वन्द्यः केन न भूतले ॥१॥

श्रूयते तुलसीदासो रससिद्धः कवीश्वरः ।
वैद्यनाथ - स्वरूपेण भूतले शुशुभे पुनः ॥२॥

डेहुआ - मानपुरे ग्रामे ' हीरानन्द - निकेतनम् ।
आश्विने, पौर्णमास्यां हि जन्मना तेन पावितम् ॥३॥

वेदस्मृति पुराणानां सजातः पारङ्गतः ।
कृत्वा वासमयोध्यायां समधीत्य गुरु सन्निधौ ॥४॥

प्रायशः कृतयो निखिलास्तुलसीदास महाकवेः ।
वैद्यनाथस्य लेखन्या प्रज्ञया विशदी कृताः ॥५॥

श्री मता वैद्यनाथेन कृतं भाष्यं गुणान्वितम् ।
दृष्ट्वा विपश्चितः कस्य क्षिप्रं चेतो न मोदते ॥६॥

टीकां कृतवन्तो ये ये तुलसीदास - वाङ्मये ।
पन्थानं वैद्यनाथस्य स्वीचक्रुस्ते मनीषिणः ॥७॥

काव्यस्य सर्जने चापि स्तुत्या मतिरप्रतिहता ।
तस्य सन्दृश्यते यस्याः काव्य चारु विनिर्गतम् ॥८॥

काव्य - कल्पद्रुमे तेन कृत्वा सुष्ठु विवेचनम् ।
अलङ्कार रसादीनां स्वाचार्यत्वं प्रमाणितम् ॥९॥

राघवस्य कथा रम्या रम्यं काव्यञ्च मानसम् ।
वैद्यनाथस्य टीकासु द्वयमाप्नोति रम्यताम् ॥१०॥

कविषु टीकाकारेषु आलङ्कारिकेषु च ।
प्रथिता यस्य सुकीर्तिस्तं वैद्यनाथं नमाम्यहम् ॥११॥

यावद्रामकथा लोके पुनातीह जनम् - जनम् ।
सत्कीर्त्ति वैद्यनाथस्य तिष्ठत्यवनि - मण्डले ॥१२॥

बाबा बैजनाथ : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

—डॉ० कु० चन्द्रप्रकाश सिंह

बाबा बैजनाथ बाराबंकी जनपद के ही नहीं, अखिल देशव्यापी हिन्दी साहित्य के गर्व और गौरव हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के अनेक ज्योतिर्मय आयाम हैं, जिनका सम्यक् उद्घाटन और अनुशीलन आज तक नहीं हो पाया है। ये रससिद्ध कवि, कुशल लीलानाटककार, प्रामाणिक लक्षणग्रंथकार और संस्कृत के मल्लिनाथ जैसे आचार्यों की परम्परा के टीकाकार हैं। उनके कृतित्व के सभी पक्ष प्रौढ़ हैं। वे उपनिषद्, पुराण, वैष्णव भक्तिशास्त्र, काव्यशास्त्र, दर्शन आदि के पारदर्शी विद्वान् थे। उनकी सभी कृतियाँ ऊँचे स्तर की हैं। मानस के जितने तिलक-टीका और भाष्यकार हुए है, उनमें पंडित रामगुलाम द्विवेदी, अयोध्या के बड़ी जगह के महन्त श्री रामचरणदास करुणासिन्धु जी महाराज तथा बाबा बैजनाथ जी साहित्यिक दृष्टि से सर्वप्रमुख हैं।

'रामचरितमानस' की प्रसिद्ध टीका 'मानस-पीयूष' के प्रणेता महात्मा श्रीअंजनीनंदनशरण जी ने उनके सम्बन्ध में लिखा है, "श्री बैजनाथ जी डेहवा मानपुर, डाकघर-सतरिख, जिला-बाराबंकी के रहने वाले थे। वे अवधिय कुर्मी कुल के थे। कुलीन घराने के थे, जमीदार और नम्बरदार थे, साथ ही श्री रघकुलावतस श्री रघुनाथ जी के परम अनन्य उपासक और प्रसिद्ध संतसेवी महात्मा फकीरेराम जी (श्री रामकोट अयोध्या जी) के प्रिय गृहस्थ शिष्य थे। ये शृंगारी थे। हिन्दी साहित्य के विलक्षण पण्डित थे। श्री उपास्यदेव का नख-शिख वर्णन आपने ८३ कवित्तों में किया है और 'काव्यकल्पद्रुम सटीक' आपका अद्वितीय अनुपम ग्रन्थ है। साहित्यज्ञ इसे उच्चकोटि का मानेंगे। सम्भवत: इस पर अभी तक साहित्यज्ञों की दृष्टि नहीं पड़ी है। सुना जाता है कि आपको 'महामहोपाध्याय' की पदवी प्राप्त थी। 'अध्यात्मरामायण' पर आपका तिलक है और 'वाल्मीकीय रामायण' का तिलक, सुन्दर काण्ड तक का आप कर पाये थे कि शरीर का अवसान हो गया। शेष काण्डो के तिलक की पूर्ति उनके सुयोग्य पुत्र श्री रामलालशरण जी ने की। नख-शिख का तिलक भी उनके पुत्र ही ने किया है। श्रीमद्गोस्वामी जी के तो आप ऐसे प्रेमी थे कि आपने उनके समस्त ग्रन्थों पर बृहत् टीकाएँ लिखकर जनता को अपना ऋणी बनाया है— कम से कम दास तो ऋणिया है ही, दूसरे हों या न हों। मानस और विनय की टीकाएँ देखने का सौभाग्य दास को हुआ है। भाषा देशी देहाती होने से आजकल के स्कूली शिक्षा पाये हुओं के लिए समझने में कठिन है, पर ये टीकाएँ भाव, अलंकार, रस, नायक-नायिका-भेद और रूपकों के अत्यन्त विस्तार, भगवद्गुणों की परिभाषा,

श्रुति-पुराण, इतिहासादिक के प्रमाणों से अलंकृत हैं ।"

बाबाजी की मानस की टीका में पुनरुक्ति मिलती है । इसका कारण सम्भवतः यह है कि उन्होंने टीका लिखते समय मानस के कथावाचक व्यासों को भी ध्यान में रखा है । मानस के कथावाचकों को कथा कहते समय, जिन प्रसंगों को दुहराना आवश्यक होता है, उन्हीं की पुनरुक्ति बाबा जी की टीका में मिलती है । गोस्वामी तुलसीदास जी के नाम से जितने ग्रन्थ प्रचलित थे, चाहें वे उनके लिखे हुए हों चाहे न हो, उस पर बाबा जी ने टीकायें लिखी हैं ।

बाबाजी के पुत्रों, पौत्रों और प्रपौत्रों ने उनकी साधना-परम्परा और कृतियों को सावधानी से सुरक्षित रखा । इसलिए उनके संबन्ध में शोधपरक अनुशीलन सुगम हो गया है । उन्होंने अपनी गुरुपरम्परा, जन्मभूमि, जन्मकाल, जीवन और कृतियों के सम्बन्ध में स्वयं निम्नलिखित काव्यात्मक परिचय प्रस्तुत किया है—

सीताराघव कृपातन, प्रकट नमो गुरुदेव ।
जांघ्रितरी आरोह नर, पार भवाब्धीखेव ।।

राम सिया वेदतत्त्व निधि सिधि भूविलास,
क्रम मन शरन क्षमाधमलौं बसि भूरि ।
तातीताप जस होत शिव तात सर वास,
रामजसचरिनाश [illegible]ासमनसपूरि ।।
भूप भक्ति नवधाहि रभस सेवत पारमेश,
आशनाशकाम जपू विदुषन मूरि ।
करम अवधि ज्ञान जन्म भूमि गुणधाम,
गुरु श्री कृपालु राम नौमि पादपद्मधूरि ।।

श्रीमानन्दप्रकाश श्री, सीतायै रामाय ।
नमो नमो संतत सतर, भवसागर तरणाय ।।
श्री गुरु रामानन्द के, भये अनन्तानन्द ।
गया दास तिनके भये, लक्ष्मीदास अमन्द ।।
तिनके माधवदास भे, तिनके खोजीदास ।
चतुर्दास संज्ञा लिये, द्वारा प्रकटो जास ।।
रामदास तिनके भये, तिनके भे हरिदास ।
कृपाराम तिनके सु जे कृष्णदास भय तास ।।
संतोषदास तिनके भये, तास दास रघुनाथ ।
पूर्णदास तिनके भये, ब्रह्मदास यशगाथ ।।
श्यामदास तिनके भये, रामदास भे तास ।

मन्दिर सुन्दर विरचि करि, पञ्चवटीकृत वास ॥
तिनके वैष्णवदास जी, तिनके सब गुणधाम ।
कृपावारिधर स्वामि मम, विदित फकीरेराम ॥
अवधजन्म भ पूर्व बसि, दक्षिण मख को धाम ।
कहौं स्वगुरु को आपनो, जन्मभूमि को ठाम ॥

पूर्व लखनऊते द्वै योजन जिला बाराबंकी नाम,
हीरानंद पिता ग्रामाधिप डेहवा निकट मानपुरग्राम ॥
गुरू सोपि पितृव्यसवंशी ग्रामाधीश पाटमऊ वास ।
तिन मों पितुते बालप्रीति यों दुइ तन प्रकट जीव यक खास ॥
अष्टादश शत नब्बे संवत शुचि पूनव को जन्म हमार ।
ताछिनते गुरुदेव हमारे पिता मात सम पालन हार ॥
यद्यपि गुरु ऐश्वर्यग्राम में सचिव सुभट शिविका रथ घोर ।
तदपि सकल सुख त्यागि आश यक सीताराम भक्तिपथ ओर ॥
अट्ठानवे अठारहसै में दैवयोग यक समै स्वग्राम ।
वैष्णवदास स्वामि आये चलि मम गुरुउठि किय दण्डप्रणाम ॥
दै उपदेश कृपा बसि कछु दिन पुनि चलि गये अयोध्याधाम ।
मों गुरु भजन करत अतिआनँद आठ वर्ष निवसे निज ग्राम ॥
उनइससै षट संवत फाल्गुन बन्धु भार दै तजि जग आस ।
हौं सँग रह्यो मोहिं लौटारे आपु सु कियो अयोध्यावास ॥
पुनि द्वै वर्ष बाद मैं गमनेऊँ सेवा करत रह्यों गुरुपास ।
तब दीन्हें उपदेश आशिषा भजन भावना बुद्धिप्रकाश ॥
उनइससै चौदह संवत में जब मम पिता गये परधाम ।
तबते आज्ञा पाय गुरु की निश्चय वास रहो यहि ग्राम ॥
उनइससै बत्तिस संवत में श्रीगुरु हरिकरुणाबल आश ।
तुलसीकृत गीतावलि ऊपर मम कर टीका भयो प्रकाश ॥
पैंतिस में यक ग्रन्थ छन्दमय काव्यकल्पद्रुम भो निरधार ।
भो भादऊँ उनइससै अरतिस कवितावलि को तिलक तयार ॥
ऊनविंश शत अधिक बयालिस मार्गशीर्ष पूनव शशिवार ।
गुरु की कृपा रामसतसैया भावप्रकाशिका भयो तयार ॥
माधव शुक्ल पक्ष द्वितीया को उनइससै तेंतालिस पाय ।
रामसियासंयोगपदावलि ग्रन्थ माधुरी पूरण भाय ।
अब श्रीरामचरितमानसहौं भूषण करि गुरु पद धरि माथ ।
बुधि विद्या बलहीन दीनहौं पूरण करिय जानकीनाथ ॥

रसिकलता अवलम्बहित, कल्पद्रुमसीतास ।
गुरु सियबल्लभशरण कहि, बैजनाथ पितु पास ।।
ज्यों तुलसीतरुमूलकी, होत मृत्तिका पोत ।
त्यों तुलसीपद परस करि, मम वाणी उद्दोत ।।

उपर्युक्त विवरण के अनुसार उनका जन्म बाराबंकी के डेहवा ग्राम में संवत् १८६० की आश्विन पूर्णिमा को हुआ था । उनके पिता का नाम हीरानन्द था । वे मानपुर डेहवा के सम्पन्न जमीदार थे । उनके गुरु फकीरेराम जी उनके सजातीय और पितृव्य थे । वे निकटवर्ती पाटमऊ गाँव के रहने वाले थे । उनके यह पितृव्य-गुरु भी ऐश्वर्यशाली जमींदार थे । सवत् १८६८ में स्वामी वैष्णव दास उनके गाँव में आये । वे फकीरे राम को रामभक्ति का उपदेश देते रहे । महात्मा वैष्णवदास से उपदेश प्राप्त कर फकीरे राम जी अपने घर पर आठ वर्ष तक अखण्ड राम-भजन में लीन रहे । तत्पश्चात् संवत् १९०६ फाल्गुन मास में घर और जमींदारी का सभी उत्तरदायित्व अपने भाई को सौंप कर वे स्थायी रूप से अयोध्या में रहने लगे । दो वर्ष बाद संवत् १९०८ में बैजनाथ जी भी अयोध्या गये और संवत् १९१४ तक उन्हीं के साथ अयोध्या में रहे । इस अन्तराल में उन्होंने अपने गुरु फकीरे राम से जो कुछ प्राप्त किया उसको सार रूप में उन्होंने इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

पुनि द्वै वर्ष बाद मैं गवनेऊ, सेवा करत रह्यों गुरु पास ।
तब दीन्हें उपदेश आशिषा भजन भावना बुद्धि प्रकाश ।।

संवत् १९१४ में बैजनाथ जी के पिता हीरानन्द की मृत्यु हो गई । तब से गुरु की आज्ञा पाकर वे अपने ग्राम मानपुर डेहवा में ही रहने लगे । यहीं उनकी पहली साहित्यिक कृति 'गीतावली की टीका' सवत् १९३२ में प्रकाश में आई । सवत् १९३५ में उनका 'काव्यकल्पद्रुम' नाम का ग्रन्थ प्रणीत हुआ । संवत् १९३८ में भाद्रपद में उन्होंने 'कवितावली का तिलक' भी पूरा कर दिया । संवत् १९४२ में मार्गशीर्ष की पूर्णिमा को उन्होंने 'राम सतसई भाव प्रकाशिका टीका' तैयार कर दी । संवत् १९४३ की वैशाख शुक्ल द्वितीया को उन्होंने 'रामसिया संयोग पदावली' काव्यग्रन्थ की रचना की । पुनः उन्होंने 'रामचरितमानस' की टीका लिखने का का कार्य आरम्भ किया । इसका नाम उन्होंने 'रामचरितभूषण' रखा है । रामचरित-मानस की उनकी टीका उनके कृतित्व का सुमेरु है ।

वे तुलसी साहित्य के ऐसे विशिष्ट मर्मज्ञ हैं, जो वर्तमान वैज्ञानिक पाठानुसंधायकों का भी पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं । एक उदाहरण है— मानस के बालकाण्ड की यह प्रसिद्ध चौपाई गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित 'मानस' में इस रूप में पाई जाती हैं—

"बायस पलिअहिं अति अनुरागा । होंहि निरामिष कबहुँ कि कागा ।।"

'मानस-पीयूष' में भी महामनीषी महात्मा अंजनी नन्दन शरण ने यही पाठ स्वीकार किया है ।

श्री रामदास गौड़, सूर्य प्रसाद मिश्र, सुधाकर द्विवेदी आदि विद्वानों ने भी इसी पाठ को स्वीकार किया है । किन्तु बाबा बैजनाथ इस पाठ को स्वीकार नहीं करते । वे उक्त चौपाई को निम्नलिखित रूप में ग्रहण करते हैं—

'पायस पालिय अति अनुरागा । होहि निरामिष कबहु कि कागा ।।'

इस चौपाई की टीका करते हुए बाबा बैजनाथ लिखते हैं— यह बायस पाठ अशुद्ध है । एक तो पुनरुक्ति दूसरे काक को कुछ भोजन नहीं होत ताते पायस चाहिये । यथा पायस जो खीर सो परम पावन है, ताको भोजन दे अत्यन्त अनुराग से पालिये । अर्थात् मधुर बचन बोलिये । भाव उत्तम भोजन दीजिए, उत्तम बचन सिखाइये तथापि 'काक कबहुँ कि निरामिष होय ।' आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अपने रामचरित के काशिराज संस्करण में 'बायस' के स्थान पर 'पायस' पाठ ही स्वीकार किया है । महाकवि निराला जी ने 'मानस' की जो टीका की थी, उसमें उन्होंने भी 'पायस' पाठ स्वीकार किया है, 'बायस' नही । इस टीका के कुछ आरम्भिक खण्ड गंगा पुस्तक माला, लखनऊ से प्रकाशित हुए थे ।

बाबा बैजनाथ ने यथास्थान वैष्णव सौंदर्यशास्त्र के अनेकानेक तत्वों का भी उद्घाटन किया है । वैष्णव सौंदर्यशास्त्र अनेक दृष्टियों से सामान्य सौंदर्यशास्त्र से भिन्न है । अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए मैं मानस के निम्नलिखित दोहे की उनकी टीका यहाँ दे रहा हूँ –

नील सरोरुह नीलमणि, नील नीरधर श्याम ।
लाजहिं तनु सोभा निरखि कोटि कोटि शत काम ।।

बाबा जी लिखते हैं – "नील सरोरुह कहे कमल नील मणि नील नीरधर कहे मेघ तद्वत् श्याम तनु तामें एक एक अंग की शोभा निरखि सौ सौ करोरि काम लजात हैं इति उपमेय ते उपमान को अनादर ताते तीजी प्रतीपालकार है पुनः कमलादि तीन उपमान का हेतु दिये यहाँ तीन उपमानन के षोड़श धर्म हैं, तिन करिके तनुके षोड़श शोभामय गुण दर्शावत कमल के धर्म यथा सुन्दरता तथा प्रभु को सर्व अंग सुठौर बन्यो पुनः कोमलता सुकुमारता सुगन्धता ये तीन कमल में तथा प्रभु के तनु में पुनः रूप कमल सहज ही मनोहर तथा प्रभु को तनु बिना भूषणै भूषितवत् देखात पुनः कमल में मकरन्द तथा प्रभु के तनु मे माधुरी रस पान करते नेत्र भ्रमर तृप्त नहीं होते इति षड्गुण दर्शावने हेतु कमल की उपमा दियो पुनः मणिके धर्म यथा औज्ज्वलत्व जो कबहूं मलीन नहीं होत तथा प्रभु में रजोगुण को लेश नहीं यथा ।। निरंजन निर्मलमेकरुपम् ।। पुनः शुद्ध जो मणि कबहूँ अपावन नहीं होती तथा प्रभु में मन तन में अशुद्धता नहीं सदा शुद्ध पुनः मणि में सुखमा सदा एकरस तथा प्रभु में शोभा

सदा एकरस पुनः मणि में दीप्ति तथा प्रभु में रविवत् तेज है पुनः मणि सदा एक रस रहत तथा प्रभु में नवयौवन एकरस पुनः मणि में आब रहत तथा प्रभु में लावण्यता इति अष्टगुण दर्शावने हेतु मणि की उपमा दिये अथ मेघ के धर्म यथा गम्भीर श्यामता तथा प्रभु में श्यामता प्रसिद्ध मेघ में बिजुली ते शोभा होत तथा प्रभु में पीतपट आदि सुन्दर वेष हैं इति द्वै गुण दर्शावने हेतु मेघ की उपमा दिये इनमें वाचक उपमेय लुप्तालंकार है ।"

इसके अतिरिक्त बाबाजी को जहाँ कोई चित्र मानस में अपूर्ण प्रतीत हुआ हैं, वहाँ उसमें उन्होंने अपनी ओर से रंग भरने का प्रयत्न किया है । राम विवाह के समय जनकपुर के राजभवन में जो मंडप बनाया गया, उसके सब उपकरण सोने और मणियों के थे । सोने के केले के स्तम्भ, हरित मणियों के पत्र, पीले और अरुण रंग के पुखराज के फूल आदि बनाये गये थे । "माणिक मरकत कुलिश पिरोजा । चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ।" इस प्रकार के अनेकानेक महार्घ उपकरण उस मंडप में लगे थे । बाबाजी को इस वर्णन में एक चौपाई छूटी हुई प्रतीत हुई और मंडप की छाजन के विषय में भी स्पष्ट निर्देश का अभाव प्रतीत हुआ । उन्होंने लिखा, "इहाँ खम्भ अरु बांस तो है कोई पदार्थ छावने को नहीं है अरु चौपाई भी सात हैं । एक चौपाई तिलक में कहे देते हैं यथा "सरपत सदल रजत रुचि लाये । त्यहि सन सरल सघनतर छाये ।।" यह बाबाजी की सूक्ष्म अध्ययन दृष्टि का प्रमाण है ।

इसके अतिरिक्त बाबा बैजनाथ ने उन गुणों की भी विशद व्याख्या की है जिनका निर्देश गोस्वामी जी ने सांकेतिक शैली में किया है । उदाहरण के लिये यदि गोस्वामी जी ने 'रामकृपालु' शब्द का प्रयोग किया, तो उन्होंने उसकी व्याख्या करते हुए लिखा है, "कृपा क्या चीज है अर्थात् सब जीवन के रक्षा करिबे को हमहीं समर्थ हैं यह विचार दृढ़ मन में राखना सोई कृपा है यथा भगवद्गुणदर्पणे ।। रक्षणे सर्वभूतानामहमेव परो विभुः । इतिसामर्थ्यसन्धानं कृपा सा पारमेश्वरी ।।" इसी को और अधिक स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है, "पुनः कृपागुण यह है कि जीवमात्र को कालुष्यनाशन अपनी सामर्थानुसन्धानाधीन जानना ऐसा विशेष प्रेम-भावता को कृपा कही यथा ।। यद्वा स्वसामर्थानुसन्धानाधीनकालुष्यनाशनः । हार्दो भावविशेषो यः कृपा सा जागदीश्वरी ।।" इसी प्रकार भगवान के दयागुण का लक्षण बतलाते हुए उन्होंने लिखा है कि 'निरहेतु जीवन को सदा भला चाहना' ही दया है । करुणा के स्वरूप का निरूपण करते हुए उन्होंने कहा है, "जन को दुःख देखि आप दुःखित होना वाको निवारण सो करुणा है यथा भगवद्गुणदर्पणे ।। आश्रितार्त्याग्निना हेम्नो रक्षितुर्हृदयद्रवः ।। अत्यन्तमृदुचित्तत्वमश्रुपातादिकृद्भवेत ।।" अनुराग का लक्षण बतलाते हुए बाबा जी लिखते हैं, 'तैलवत् धार वा सरिता-

प्रवाहवत् जो अचल प्रीति सो अनुराग है यथा । व्यापकता जो प्रीति की, जिमि सुठि वसन सुरङ्ग । दृगनद्वार दरशै चटक, सो अनुराग अभङ्ग ।। इत्यादि जो अनुराग सोई पराग बिषे रस हैं ।। इसी प्रकार उन्होंने भगवान के अनन्त दिव्य गुणों की अत्यन्त विशद् व्याख्या की है । इस प्रसंग में निम्नलिखित छन्द विशेष रूप से स्मरणीय है —

करुणा उदार शील क्षमा दयाधार,
नीति प्रीति के अगारज्ञानचातुरी सुधरे हैं।
सुलभ गँभीर थिर सुहृदय सधीरकृत,
ज्ञातजनपीर जू शरण पाल करेहैं ।।
लोकन प्रसिद्ध वात्सल्यताको निधि,
एकरस जगवृद्ध रघुवंशकुल खरे हैं ।
दीनन उबार बैजनाथ निरधार,
इमि कोशलकुमार में अपार गुण भरे हैं।।
रूप सुकुमार नवयौवन उदार मृदु,
माधुरी अपारसों छबीले छैल छरे हैं ।
लावनी सुगन्ध भाग्यवान सत्यसंध,
तेज वीर्य दीनबन्धु वीरता सुवेष करे हैं।।
व्यापक रमण सौम्य सांचे शत्रुहन हैं,
अनन्त वशकरण सुबानी वेद परे हैं ।
प्रेरक अधार बैजनाथ जगसार इमि,
कोशलकुमार में अपार गुण भरे हैं ।।
कीरति सुकौमुदी सुयशकृत चन्द,
मंदवंतभा प्रभाकर प्रताप सो अधीर हैं ।
कामगौर सुदृष्टि कामतरु फलकरोदार,
चरित अमलकै समल गंग नीरहैं ।।
वीर्यसंहनन हैं सडरत कराल काल,
बैजनाथ भूविलास अग्निकृत शीर हैं ।
दीनजन दानन स्वलीन जनमाननसों,
वीर जनवाननसों जीते रघुवीर हैं ।।

बाबा जी ने मानस के रस-संयोजन और अलंकार-विधान एवं शब्द शक्ति विनिवेश की भी पाण्डित्यपूर्ण व्याख्या की है । इन काव्यतत्वों की व्याख्या करते हुए उन्होंने यथास्थान 'काव्य-प्रकाश' आदि मानक ग्रन्थों के संदर्भ यथास्थान प्रस्तुत किये हैं । पिंगल शास्त्र पर भी उनका पूर्ण अधिकार है । भाव किस प्रकार

प्रेम, मान, प्रणय, स्नेह, राग-अनुराग आदि रूपों में क्रमश: विकसित होता है, इसकी भी सटीक व्याख्या बाबा जी ने की है। अनुभावों तथा तैंतीस संचारी भावों के सुन्दर से सुन्दर उदाहरण की प्रस्तुति उन्होंने 'मानस' से चुन चुन कर की है।

टीका के इन सब पक्षों का उल्लेख करने का तात्पर्य यह स्पष्ट करना है कि बाबा जी गोस्वामी जी के कर्तृत्व की महत्ता को अपनी शक्ति भर समग्र रूप से प्रकाशित करना चाहते हैं। वे 'मानस' की श्रवण-मनन परम्परा को अधिक से अधिक समृद्ध बनाना चाहते थे, जो विद्वान् और साधारणजन दोनों का समान रूप से रंजन कर सकें। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भारत के सांस्कृतिक नव संघटन के लिए 'मानस' के प्रणयन के साथ-साथ 'राम-लीला' का प्रवर्तन किया था। उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए बाबा बैजनाथ जी ने 'रामचरित मानस' की टीका की। और अपने ग्राम में 'राम-लीला' की परम्परा चलायी। रामलीला की यह परम्परा आज भी चली आ रही है। इस रामलीला में 'मानस' के संवादों के साथ-साथ स्वयं बाबा जी के लिखे हुए संवाद भी बोले जाते हैं।

बाबा बैजनाथ अपने 'मानस' की टीका में भाषा-चिन्तक होने का भी आभास देते हैं—

'जे प्राकृत कवि परम सयाने। भाषा जिन हरिचरित बखाने।'

इस अर्धाली की व्याख्या करते हुए बाबा जी ने भाषा की परिभाषा भी की है—'यथा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, काशीभाषा, ब्रजभाषा, फारसी ये छ: मिली होइँ ताहि भाषा कही।' इस कथन में बाबा जी षड्भाषा परम्परा की ओर संकेत करते हैं। 'पृथ्वीराज-रासो' में उसकी भाषा के लिए यह परिचयात्मक श्लोक मिलता है—

"उक्ति धर्मविशालस्य राजनीति नवं रसा:।
षड्भाषा पुरानं च कुरानं कथितं मया।।"

धर्म, राजनीति, नवरस, पुराण और कुरान की ये उक्तियाँ षड्भाषा में कही गई है। भिखारीदास ने भी अपने 'काव्य निर्णय' में रासो की षड्विधि भाषा की परम्परा की पुष्टि की है

"भाषा ब्रजभाषा रुचिर, कहैं सुकबि सब कोइ।
मिलै संस्कृत पारसिहु, पै अति प्रगट जु होइ।।
ब्रज मागधी मिलै अमर नाग जमन भाषानि।
सहज पारसीहू मिलै षटबिधि कबित बखानि।।"

बाबा जी प्राकृत, व्याकरण के आधारभूत नियमों से भी परिचित हैं। वे ध्वनि परिवर्तन की उन सब स्थितियों को जानते हैं, जिनके कारण सीता शब्द 'सिया' बना, जीव 'जिया' बना, कवि 'किया' बना और दीप 'दिया' बना। इतना ही नहीं माता में 'ता' का लोप होकर किस प्रकार 'माय' बन जाता है

और गृह 'घर' बन जाता है, इसका भी सकारण निर्देश उन्होंने किया है।

बाबाजी के कर्तृत्व में साहित्य के उच्चतर अध्ययन की एक प्रणालिका अन्तर्निहित है। इनकी टीकाओं के अध्ययन से उसकी रूपरेखा निर्धारित की जा सकती है।

●

सीय राममय सब जग जानी।
करौं प्रणाम जोरि जुग पानी।।

संसार बिषे चराचर यावत् जीव हैं तिन सबको सिया राममय जानिकै दोऊ हाथ जोरि कै प्रणाम करत हौं। यही उत्तम भक्तन को लक्षण है यथा।। उमा जे रामचरण रत, गतममता मद क्रोध। निज प्रभुमय देखहिं जगत, कासन करहिं विरोध।। पुनः महारामायणे भूमौ जले देव नरासुरेषु भूतेषु देवि चराचरेषु। पश्यन्ति शुद्धमनसा खलु रामरूपं रामस्य ते समुपासकाश्च।। तामे द्वै भेद हैं प्रथम ऐश्वर्य रूप यथा।। रोम रोम प्रतिराजहिं, कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड।। तेहि मय देखना यथा।। जहँ चितवें तहँ प्रभु आसीना। सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रवीना।। पुनः दूसरा माधुर्य रूप यथा।। देखहु खोजि भुवन दशचारी। कहँ अस पुरुष कहां असि नारी।। तिनमय देखना यथा गीतावल्यां कौशल्या बचन।। लगे रहत मेरे नयनन आगे राम लखण अरु सीता ताते ऐश्वर्य रूप तौ जग को प्रकाशक है ताते सियाराममय अरु माधुर्यरूप मेरे नेत्रन में समाय गयो याते सर्वत्र सियाराम ही देखात ताते सब में राग द्वेष त्यागि समचित्त ह्वै सबके प्रणाम करत हौं।

—रामचरित मानस टीका-बाल काण्ड से

'मानस' के आदि सम्पादक और टीकाकार बाबा बैजनाथ कुर्मी

—डॉ० ओम प्रकाश पाण्डेय

इस वर्ष मई, ९१ में 'रामचरित मानस' की प्रथम टीका के प्रकाशन के १०१ वर्ष पूरे हो गये। मई, १८९० ई० में 'तिलक' नाम की यह टीका नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से छपी थी; जिसके रचयिता हैं—बाबा बैजनाथ कुर्मी।

सम्भव है, 'मानस' की वाचिक परम्परा में, कथावाचकों, पण्डितों और रामभक्तों के मध्य इससे पहले भी कोई टीका रची गई हो या प्रचलित रही हो लेकिन प्रकाशित रूप में ऐतिहासिक दृष्टि से, प्रथम टीका की मान्यता 'तिलक' की है। इसमें स्वीकृत पाठ को 'मानस' के सभी उत्तरवर्ती सम्पादकों ने सर्वाधिक महत्व दिया है। साहित्य-मनीषी सर जार्ज ग्रियर्सन से लेकर आचार्य विश्वनाथ मिश्र तक ने तुलसी-साहित्य के अनुशीलन में बाबा बैजनाथ के द्वारा प्रदर्शित सरणि को ही पाठ सम्पादन के सम्बन्ध में उपादेय समझा है। बाबू रामदीन सिंह ने खड्ग विलास प्रेस, पटना से जब गोस्वामी तुलसी दास जी की जीवनी निकाली, तो उसमें तुलसी-साहित्य के अध्येताओं पर बाबा बैजनाथ जी के ऋण को उन्मुक्त रूप से स्वीकार किया। महात्मा अञ्जनी नन्दन शरण जी ने 'मानस-पीयूष' के रूप में रामचरित मानस पर जो विशद भाष्य रचा है, उसमें भी शायद ही कोई स्थल ऐसा हो; जहां उन्होंने बाबा बैजनाथ के द्वारा अभिप्रेत अर्थ के उल्लेख की आवश्यकता न समझी हो।

बाबा जी का जन्म आज से डेढ़ शताब्दी पहले विक्रम सम्बत-१८९० (सन् १८३३ ई०) में उत्तर प्रदेश राज्य के बाराबंकी जनपद के ग्राम-मानपुर डेहवा में हुआ था; जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है—'अष्टादश शत नब्बे शुचि पूनव को जन्म हमार'—इस दृष्टि से तिथि हुई—आश्विन पूर्णिमा, वि. सं० १८९०। इनके पिता हीरानन्द सम्पन्न कृषक-जमीदार थे। रामानन्दी सम्प्रदाय की परम्परा में अयोध्या के सिद्ध सन्त फकीरेराम जी से बैजनाथ जी ने शिक्षा-दीक्षा ग्रहण की। टीकाओं की पुष्पिका में उन्होंने कहा है—

''अवध जन्म भू पास वसि, बिदित फकीरे राम।
भक्ति ज्ञान बुधि दानि श्री, गुरुपद करौ प्रणाम॥

प्रारम्भ में वे दीर्घकाल तक अयोध्या में ही रहे, लेकिन अपने पिता की मृत्यु के अनन्तर अपने गाँव को लौट आये, जहाँ गृहस्थ सन्त के रूप में घर,

परिवार और कृषि की देखभाल करते हुए साहित्य - साधना भी करते रहे । बीच - बीच में अयोध्या भी जाते रहे, जहाँ समकालीन सन्तो - महन्तों और रामभक्तों के मध्य उनकी मान्यता गोस्वामी तुलसीदास के अवतार रूप में ही थी ।

बाबा बैजनाथ जी की साहित्य-साधना मूलतः त्रिआयामी है, पहली कोटि में टीका परक कृतियाँ आती है । इसके अन्तर्गत 'मानस' के अतिरिक्त उन्होंने विनय-पत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली प्रभृति तुलसी-साहित्य पर टीकाएँ रची हैं, जिनमें से अधिकांश का प्रकाशन नवल किशोर प्रेस-लखनऊ से १९वीं शती के उत्तरार्द्ध में हुआ था । केवल 'विनय-पत्रिका' अपवाद है, जो सन् १९२९ में छपी । बाबाजी ने गोस्वामी तुलसीदास रचित सम्पूर्ण साहित्य की टीका के साथ महर्षि वेदव्यास प्रणीत 'अध्यात्म-रामायण' और आदिकवि वाल्मीकि रचित 'वाल्मीकि रामायण' नामक प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थों की भी टीका लिखी । जिसमें 'अध्यात्म रामायण' १८९४ ई० में प्रकाशित हुई और 'वाल्मीकि-रामायण' अभी अप्रकाशित है ।

रामकथा-मर्मज्ञ सन्त बैजनाथ के द्वारा प्रणीत टीकाओं की शैली संस्कृत के परिनिष्ठित मल्लिनाथ सदृश टीकाकारों की परम्परा का अनुवर्तन करती है । इनमें 'नाना पुराण निगमागम' के मूल का निष्ठापूर्वक सन्धान करने की चेष्टा की गई । वेद-वेदाङ्ग-स्मृतियों-दर्शनों-और भक्ति साहित्य के व्यापक अध्ययन का प्रभाव सर्वत्र परिलक्षित होता है । तुलसी शैली का अवलम्बन करके टीकाकार ने प्रायः सभी टीकाओं के आरम्भ में संस्कृत के कतिपय श्लोकों का प्रणयन भूमिका स्वरूप किया है ।

द्वितीय श्रेणी शास्त्रीय ग्रन्थों की है, जिनमें 'काव्य-कल्पद्रुम' उल्लेखनीय है । यह काव्यशास्त्र से सम्बन्धित है और रीतकालीन परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है । काव्य के विभिन्न अंगों का इसमें प्रौढ़ विवेचन है, जो बाबाजी के आचार्यत्व का प्रतीक है । अद्यावधि यह अप्रकाशित ही है ।

तीसरी कोटि में मौलिक काव्यग्रन्थ आते है, जिनमें 'नखशिखवर्णन' और 'षड् ऋतुवर्णन' प्रमुख हैं । रीतियुगीन परम्परा से सम्बद्ध होते हुए भी ये अश्लीलता प्रभृति दोषों से मुक्त हैं । 'नखशिखवर्णन' में भगवान राम की रूप-माधुरी का आकर्षक चित्रण है । एक छन्द में कवि राम के पग-तल का वर्णन करते हुए कहता है—

"लहलहे ललित ललाम लपलप होत,
पोत भवसागर के तारक सबल हैं ।
अंकुश, कुलिश, ध्वज, कमल, यवादि चिन्ह,
रंग रंग ऋक्ष किधौं ज्योति रवियल हैं ।

चीकने चमक चटकीले चोखे बैजनाथ
वट के गुलाबन के आबदार दल हैं ।
अमल कमल लहकि मंजु मखमल हैं,
कि माखन से कोमल कि राम-पग-तल हैं ।"

एक अन्य छन्द में कवि ने परमप्रेमस्वरूपा भक्ति को सर्वोपरि निरूपित किया है —

"कीरति अपार बैजनाथ कोशलेन्द्र जी की
धरा पै हिमाद्रि शृंग गंग उर्मि का सी है ।
गंग पै सुकर्म, कर्म ऊपर दया सो दान,
दान - सनमान परधर्म शीलता सी है ।
धर्मशील पर शम दम पै विराग त्याग,
त्याग पर शुद्ध रूप ज्ञान-दीपिका सी है ।
ज्ञानदीप पर मुक्ति चतुर मशाल ऐसी,
मुक्ति पर दीप्ति भक्ति प्रेम लक्षणा सी है ।।"

एक और छन्द को उद्‌धृत करने का लोभ हो रहा है, जिसमें कवि ने राम के नेत्रों का वर्णन किया है

"अजब रसीले समशीले हैं सुशीले कंज,
खंजन हँसीले मीन मंजुल मरोर के ।
सुजन अशीले उर अन्तर बसीले प्रेम
मादक नशीले हैं यशीले चित्त चोर के ।
कविन के बैन नैन उपमा बनै न देन,
बैजनाथ नैन चैन दैन दया कोर के ।
और हैं न नैन लोक हेरे निज नैन
जैसे हेरे हम नैन नैन कोशल किशोर के ।।"

टीकाओं के आरम्भ में भी जो पद्य प्राप्त होते हैं, वे भी बाबाजी की उत्कृष्ट कवित्व शक्ति के परिचायक हैं । 'विनय-पत्रिका' तिलक के प्रारम्भ का यह दोहा उल्लेखनीय है—

"सुखद जानकी जानकी, जासु जानकी पूरि ।
सुजन जानकी जानकी, कृपा सजीवनमूरि ।।"

वाल्मीकि-रामायण की टीका के आरम्भ में टीकाकार के द्वारा राम के स्तुतिपरक संस्कृत-पद्यों में से एक यह है

"दशरथसुतरामं शोभया कोटिकामं ।
सजल जलदगात्रं भूमिजास्नेहपात्रम् ।।

सुरनरमुनिपालं राक्षसानां हि कालं
रघुकुलमभिरामं देव देवं नमामि ।।"

'कुण्डलिया-रामायण' का यह श्लोक भी उल्लेखनीय है—

"जलधरद्युतिगात्र पूर्णचन्द्राभवक्त्रं
विमलकनक वर्णं पीतवस्त्रं दधानम् ।
तडित्निकरभासं जानकी वामभागं
गुणनिधि पररूपं रामचन्द्रं भजेऽहम् ।।"

बाबा बैजनाथ जी के सम्पूर्ण साहित्य का एक ग्रन्थावली के रूप में प्रकाशन यदि हो जाये, तो तुलसी-साहित्य के अध्ययन की दिशा में आज भी विद्यमान अनेक रूढ़ियों और ग्रन्थियों का निराकरण हो जायेगा ।
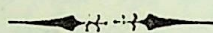
तुलसी भक्तश्वपच भलो, भजै रात दिन राम ।
ऊँचा कुल क्यहि काम को, जहां न हरि को नाम ।।

गोसाईं जी कहत कि भक्त श्वपच भलो अर्थात् डोम जाति महानीच कहावता है सोऊ भक्ति करत सन्ते भला है काहेते जो रातिउ दिन रघुनाथ जी को भजता है ताकि प्रभाव ते जाति की निचाई वाके जीव को कछु वाधा नहीं कर सकत अरु सज्जन तौ लोक ही में ऊँचा करि मनते हैं पुनः परलोक में सवते ऊँचा पद पावैगो इस हेतु नीचौ भला है पुनः जहाँ हरि को नाम नहीं अर्थात् जो रघुनाथ जी को नाम नहीं लेता है विषयासक्त हरि विमुख जो ऊंचौ कुल विप्रादि भया तौ क्यहि काम को है केवल लोक को कहै मात्र की ऊँचाई है कछु जीव को सहायक नहीं है पुनः सज्जन तो ऊँचा मानैंगे नहीं अन्त में नीचा पद पावैगो तौ देह की ऊँचाई कौन काम की है यथा भागवते ।। विप्राद्द्विषड् गुण युतादरविन्दनाभपादारविन्द विमुखाच्छ्वपच वरिष्ठम् । मन्ये तदर्पित मनो वचेन हितार्थः प्राणः पुनाति सकुलं न तु भूरिमानः ।। पुनः ।। यथा खरश्चन्दन भारवाही भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य । तथा हि विप्राः षट्शास्त्रयुक्तामद्भक्ति हीनाः खरवद्वहन्ति ।। चाण्डालं मम भक्तं च नावमन्येत बुद्धिमान् । अवमन्येद्धि मूढ़ात्मा रौरवं नरकं व्रजेत् ।

—'वैराग्य-संदीपिनी टीका' से

'षट् - ऋतु वर्णन'
एक सार्थक तूलिका की तलाश में

—आनन्द मिश्र 'अभय'

प्रकृति के इस अद्वितीय भू-प्रदेश में प्रचलित समस्त भाषाओं के साहित्य में षट् ऋतुओं का वर्णन अपने समस्त उपादानों के साथ उपलब्ध है। साहित्य का कोई भी अंग प्रकृति वर्णन के बिना अपूर्ण ही माना जाता है और प्रकृति का स्वरूप चित्रण बिना छः ऋतुओं के वर्णन के सम्भव ही नहीं है। पर्वत, नदी, सरोवर, वन, वृक्ष, लता, वेलि, पशु, पक्षी, जीव-जन्तु, शीत-ऊष्मा-वर्षा आदि के प्रभाव से मानव मन विलग रह ही नहीं सकता। इस प्रकार मानव और प्रकृति का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। प्रकृति के रूप परिवर्तन की अभिव्यक्ति का ही दूसरा नाम ऋतु है। ऋतुएं छः हैं- १– बसन्त (चैत्र-बैशाख), १– ग्रीष्म (ज्येष्ठ-आषाढ़) ३– वर्षा अथवा पावस (श्रावण-भाद्रपद) ४– शरत् (आश्विन-कार्तिक) ५– हेमन्त (मार्गशीर्ष-पौष) तथा ६– शिशिर (माघ-फाल्गुन)। बसन्त को ऋतुराज (ऋतुओं का राजा) माना जाता है। इसका सम्बन्ध कामदेव और शृंगार रस से विशेष रूप से है क्योंकि चैत्र-बैशाख मास में समस्त प्रकृति नव पल्लवो-पुष्पों और फलों से आच्छादित होकर नया रूप धारण करती है, जिसका प्रभाव न केवल मानव मन पर अपितु सभी जीव जन्तुओं और वनस्पतियों पर भी नयी सृष्टि रचना की दृष्टि से पड़ता है। इस प्रभाव का नाम ही काम देवता है। यदि मन में कामोद्रेक न हो, तो सृष्टि रचना सम्भव ही नहीं। सम्भवतः इसीलिए बसन्त को 'ऋतुराज' कहा जाता है। बिना ऊष्मा के कोई भी फल पक नहीं सकता और बिना फल के पके बीज परिपुष्ट नहीं हो सकता। इसीलिए बसन्त के पश्चात् ग्रीष्म ऋतु का महत्व है। परिपुष्ट बीज ही का अकुरण होता है, जिसके लिए रसवती भूमि के साथ ही जलतत्व का होना अपरिहार्य है; यही वर्षा ऋतु की सार्थकता है। जब अंकुर पादप का रूप धारण करता है, तो उस पादप का परिपुष्टता के हेतु आतप और शीत दोनों का समन्वय आवश्यक है; यही शरद् ऋतु का महत्व है। संसार में बिना तप (कठिनाइयों एवं संघर्षों पर विजय प्राप्ति) के कोई सिद्धि प्राप्त नहीं होती। यह तप ही हेमन्त है, जो पतझर के पश्चात नवांकुर प्रस्फुटन का आधार है। शिशिर (पतझर) को झेलने की क्षमता हेमन्त के तप से ही उत्पन्न होती है, जो बसन्त में परिणत होकर नवसृष्टि को स्वरूप प्रदान करती है। इसी का नाम ऋतु-चक्र है। यह ऋतु-चक्र जीवन की धुरी पर चलता है और यह धुरी ही पुरुष है। यही कारण है कि प्रकृति और पुरुष के

समन्वय में ऋतुओं का प्रभाव एक अनिवार्यता है। विश्व की किसी भी भाषा का साहित्य प्रकृति का तिरस्कार या बहिष्कार करके जीवित नहीं रह सकता। यही कारण है कि भारतीय भाषाओं के काव्य में प्रकृति-चित्रण ऋतुओं का अनुसरण करता चलता है। सभी भाषाओं की उपकारिका संस्कृत में तो ऋतु-वर्णन सूक्ष्मतम भावभूमि तक पहुंचा हुआ है। फलस्वरूप समस्त भारतीय भाषाओं में उसकी प्रतिच्छवि सुस्पष्टरूप से दृष्टिगोचर होती है। हिन्दी का रीतिकालीन काव्य इस दृष्टि से साहित्य में अपना अलग ही महत्व रखता है। उज्जयिनी-नरेश सम्राट विक्रमादित्य के नवरत्न महाकवि कालिदास का 'ऋतु-संहार' ऋतु वर्णन की दृष्टि से अद्वितीय है, उसी परम्परा में हिन्दी के रीतिकालीन कवियों के ऋतु-वर्णनों को भी देखा जाना चाहिए; जिन पर लोक जीवन में प्रचलित 'बारहमासा' लोकगीतों का भी प्रभाव परिलक्षित होता है।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में रीतिकाल की सान्ध्य-वेला में हुए 'रामचरित मानस' के प्रथम टीकाकार और रामभक्ति-शाखा के रसिक सम्प्रदाय में दीक्षित बाबा बैजनाथ कुर्मी का 'षट् ऋतु वर्णन' काव्य एवम् भाव-प्रवणता दोनों दृष्टियों से एक अप्रतिम रचना है। मंगलाचरण में जानकीनाथ भगवान् राम का स्मरण कर प्रथमतः ऋतुराज बसन्त का वर्णन किया गया है। बसन्त की सुषमा का निखार इस छन्द में देखते ही बनता है -

"रम्मित रसालन में तमसे तमालन में
किंशुकान जालन में लालिमा लसन्त है;
सरिता कलोलन में कोकिला के बोलन में
मन्द पौन डोलन में गन्ध बरसन्त है।
कमल अनारन में कुन्द कचनारन में
छबि डार डारन में सोहत अनन्त है,
बन बाग बेलिन में बरबाम केलिन में
चम्पक चमेलिन में बिलसि बसन्त है॥"

'बनन में बागन में बगरो बसन्त है, वाले पद्माकर के छन्द से यह छन्द कहीं पर भी उन्नीस नहीं प्रतीत होता। इस प्रकार एक से एक भावोद्दीपक, काव्यालंकार समलंकृत बीस छन्द केवल बसन्त-ऋतु पर हैं। जो विविध भाव-भङ्गिमाओं की पृष्ठभूमि में मन को आलोड़ित-विलोड़ित करने में सक्षम हैं। लुहार की दुकान का रूपक निम्न छन्द में मौलिक भाव का प्रतीक है—

"नव बेलि खलायट पौन लचै धमकावत फूक सुगन्ध भरे;
दय फूल पलाशन के कोयलारुण श्यामदिपात जरेधजरे।

करि वौर हथौरहि बैजसुनाथ गहै दिठ प्रीति सुसंसि करे;
विरहीजन लौह गलावन को जनु मैन लुहार दुकान धरे ।। ”

अब आइये, ग्रीष्म के प्रचण्डरूप में भगवान् शङ्कर के प्रचण्ड रूप की कल्पना का अवलोकन करें

“भूत से भयावने ह्वै भ्रमत भभूरि भूरि वृषराशि भानुनाहिं शृंङ्गीवृष गायो है,
धूरि न उड़ात भरि पूरित विभूति अंग लहरि उठत साँप सेल्ही गर छायो है ।
चलत प्रचण्ड पौन ज्वालन के जाल मेल बैजनाथ वीर अग्र वीरभद्र धायो है,
ग्रीषम त्रिनैन नैन खोलिकै कपाल केन फैन देखि मैन पै सुसैन सजि आयो है ।।”

बसन्त के कामदेव के दहन हेतु ग्रीष्म रूपी रुद्र अपना तृतीय नेत्र खोले, ऋतु-क्रम से यह कितना सुसंगत है । और आगे देखिये

“रथी चढ़ि रथ ऐसे भ्रमत भभूरे बड़े छोटे छोटे मानहुँ सवार देत काये हैं;
आँधी घोर पैदर से आवत अपार धारि उड़त डकूर आगे गजराज धाये हैं ।
बैजनाथ सरि सर शत्रु से सहमि सूखि आतप प्रताप पुंज लोक सब छाये हैं;
कोप करि आजु चतुरंग दल साजि मानो हिमिदल जीतिबेको भानु चढ़ि आये हैं ।। ”

राजा रूपी सूर्य भगवान् की यह चतुरङ्गिणी सेना निश्चय ही ग्रीष्म के विषम रूपों की छबि निखारती विजय-श्री का वरण करती है ।

इस प्रकार १० छन्दों में ग्रीष्म ऋतु का विभिन्न-रूपेण वर्णन है ।

वर्षा ऋतु के वर्णन में इस सन्त कवि ने १३ छन्द लिखे हैं । अनुप्रास की छटा इस छन्द में देखते ही बनती है—

“छटा मेघ मूलन में अवलि बगूलन की सुरधनु खूलनि सुहाइ रही घाहरै;
कोकिला कलोलन कलिंदजा के कूलनि में बोलनि मयूरन की चातक सुकाहरै ।
चन्दमुख भूलनि में कुसुम दुकूलनि में बैजनाथ जासु रूप कामबाम भा हरै;
नाह प्रेम फूलन में बाहगर मूलन में लै रही हिंडोलनि पै झूलनि की लाहरै।।”

पावस की महाराजी-शान भी अवलोकनीय है—

“वेलि वितान तने सघने हरिता बनि फर्स विछी वरसाजी;
दादुर झींगुर वाजन मोर नचै सपखाउज लौ घन गाजी ।
वृक्षगयन्द ध्वजा कदली तिमि गुल्म सफूल खड़े सजि बाजी;
बैजसुनाथ सिहात सबै अवलोकत पावस की महराजी ।। ”

कवि ने शरद् ऋतु पर ८ छन्द लिखे हैं । शरद् ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा सिंह के रूप में आकाश-मण्डल में किस प्रकार सगर्व विचरण करता है, उसकी आन-बान देखिये; इस छन्द में—

“प्रगट गुहा निवास पूरब दिशा सो गिरि मृगगन गह नभ कारन चरद को;
मत्त झुण्ड तम कुंभ कुंजर विदारि बर बिथरे नक्षत्र मुकुतावलि भरद को ।

भूषित शृँगारि नारि सुन्दरी निशा लै साथ बैजनाथ अरिमुख करन जरद को;
पेसरी प्रकाश देस देस री सवेस छाइ विचार स्वछन्द चंद केसरी शरद को ।।"

हेमन्त ऋतु तो शीत की खानि ही हैं । बड़े-बड़ों के शरीरों को ठण्ढ से कँपकँपा देती है । मार्गशीर्ष मास से बढ़ते-बढ़ते पौष मास तक शीत का प्रकोप अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाता है । हिमवन्त भी राजा की भाँति पदार्पण करता है –

"अंतक से विषधर संत के समान भये जंत आतताइन के कुंद भये दन्त है;
घहरि कपत जग अदल अनंत देखि गर्व बलवन्तन के टूटत तुरन्त है ।
पवन चलंत हिमि सुभट अनंत निशि सेन सी बढंत पाय सैनी निशिकन्त है;
बैजनाथ यशवंत कीरति सबलवंत प्रबल प्रतापवंत आयो हिमवन्त है ।।"

और—

"कंप सभीत करावन गात ससीत समीरहि धावन देतो;
बैजसुनाथ डरै मति तू पटरोमस तूल वोढ़ावन जे तौ ।
उच्च उरोज लगे उर में बिन शीत न जात तपावन के तौ;
आवत कंत तुरंत बनी घर बाल हिमतहि आवन दे तौ ।।"

विरहिणी नायिका को उसकी सखी किस प्रकार समझाकर उसके प्रियतम के घर आने को विवश करने में सक्षम हेमन्त ऋतु की शीत का अचूक विश्वास दिलाती है । इस छन्द में शृंगार-रस की मधुधार तो बहती ही है, लोक में प्रचलित इस कहावत का भी विलक्षण-रूप में उपयोग कर लिया गया है कि जाड़ा दूर करने के दो ही विकल्प हैं— "कै जाइ रुई, कै जाइ दुई" अर्थात् या तो रजाई ओढ़ने से शीत की कँपकँपी से मुक्ति मिलती है अथवा 'दो' के एक साथ आलिगन-बद्ध होकर लेटने से । यहाँ दुई, या 'दो' से तात्पर्य 'प्रिया और प्रियतम' से ही है अन्य किसी से नहीं । लोक-मानस से कवि की अन्तरगता का यह छन्द प्रमाण है । इस प्रकार के १० चोखे छन्द हेमन्त-ऋतु की शक्तिमत्ता के द्योतक रूप में हैं । प्रोषितपतिका नायिका क्या कह रही है, पौष की रात्रि के विषय में; जरा देखें तो—

"पौन पछू सँग सीत चमू सबहैं दिशि फैलि चहू समफैना;
फोरि घरू सहसा तन घूसत ओढ़ेहु तू सपटू सहमैंना ।
कौन उपाय बचूँ सजनी अब बैजसुनाथ जसूस के ढैना;
मूसत धीरज देह में घूसि कै खून को चूसत पूस की रैना ।।

और अन्त में १० छन्द संवत्सर की अन्तिम ऋतु शिशिर के सम्बन्ध में हैं । बाबा बैजनाथ जी ने शिशिर को ऋतुराज वसन्त का सरदार बताते हुए, क्या ही जोरदार शब्दों में उसका स्वरूप चित्रित किया है—

"शीतल सुगन्ध मंदमारुत मतंग झुण्ड मण्डित कुसुम-तरु तुरग लसंत को;
रचित रसाल रथरथी रतिनाथ हाथ फूलन धनुष सरसजि बलवंत को।
लता-गुल्म पैदर सोपाटल सो चोपदार कोकिल नकीब वैजनाथ बरनंत को;
जोरदार तोरदार बाँकुरो मरोरदार सिसिर उदार सरदार है बसंत को॥"

कवि की यह एक अत्युत्कृष्ट मौलिक उद्भावना है। बसन्त ऋतुओं का राजा है, तो उसका सरदार भी तो कोई ऐसा वैसा नहीं हो सकता।

और अब राधा-कृष्ण की इस होली पर भी एक दृष्टि चलते-चलते डाल लेंगे, तो जीवन धन्य हो जायेगा, इसमें रञ्च-मात्र सन्देह नहीं है--

"आधु पट कोट ओट चोटन बचाइ चोट छूटत बधूटिन ते छबि छलकत है;
दामिनि सी दमकि चमक अंग अंग जनु योबन उफान मैन फैन फलकत है।
फफकि फफकि फूटि फूटि निज सैनन ते जोटिन घरन बैजनाथ ललकत है;
चाँदभाग भाल पर गोर गोर गाल पर मणिगण जाल पै गुलाल झलकत है॥"

और एक दृश्य यह भी—

"होरी खेलि गोरी थोरे दिनन किशोरी आइ घर रंग बोरी अंग अंग रूप दून री;
छूटत सुगन्ध क्षिति छहरि प्रकाश ठाढ़ी आँगन अकेली साथ दूसरी बधू न री।
बैजनाथ खोलि बन्द कंचुकी उतारि उच्च कुचन बिलोकि होत बिलव मन ऊन री;
मोरि मुख नासिका सिकोरि दंत दाबि ओंठ मूठी चापि चुननि निचोरै चोखी चून री।"

इन छन्दों में निहित भाव-चित्रों को स्यात् किसी अलौकिक-प्रतिभा-सम्पन्न चित्रकार की तूलिका ही अभिचित्रित कर सकने में समर्थ हो सके।

'मानस-पीयूष' के रचनाकार महात्मा अञ्जनीनंदन शरण ने कहा -

"... ... ये शृंगारी थे। हिन्दी साहित्य के विलक्षण पण्डित थे। इनकी रचनाओं में दास्यभाव के भक्तों के संयम और रसिक भक्तों की उच्छ्वसित भावुकता का मणिकांचन योग मिलता है। इनकी टीकायें भाव, अलंकार, रस, नायक नायिका भेद ओर रूपकों के अत्यन्त विस्तार, भगवद्गुणों की परिभाषा श्रुति पुराण इतिहासादि के प्रमाणों से अलंकृत हैं। इन्हें 'महामहोपाध्याय' की उपाधि प्राप्त थी।"

साहित्य-मनीषी बैजनाथ की काव्य कला

– डॉ० त्रिभुवन नाथ शर्मा 'मधु'

जिस कोटि के कवियों और साहित्यकारों को लेकर 'साहित्यालोचन', 'कविता-कौमुद्री', 'हिन्दी नवरत्न' तथा 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' जैसे साहित्यिक ग्रन्थ हिन्दी-जगत में रचे गये हैं, इसी श्रेणी के साहित्यकारों में भारतेन्दु युगीन प्रातः स्मरणीय, पुराणों के विज्ञ व्याख्याता, तुलसी-साहित्य के मर्मज्ञ-विद्वान एवं टीकाकार, शास्त्रज्ञ, साहित्य-मनीषी, रससिद्ध कवि और कुशल लीलानाटककार सन्तप्रवर बैंजनाथ जी भी आते हैं। दुर्भाग्यवशात् हम हिन्दी भाषी लोग उनकी स्मृति तक को विस्मृति के पर्दे के पीछे छोड़ चुके हैं। यही कारण है, बड़े-बड़े इतिहासकारों की दृष्टि उन पर नहीं पड़ सकी है; यह महान् खेद का विषय है।

सन्त कवि बैंजनाथ की काव्यशास्त्रीय कृति 'काव्य-कलपद्रुम' उनकी दैवी काव्य-प्रतिभा का प्रतीक प्रतीत होता है। तद्युगीन (रीतिकालीन) मूल प्रवृत्ति की झलक, भाव-भाषा, नाद-सौन्दर्य, अलंकार आदि के प्रस्तुतीकरण में सन्त बैजनाथ किसी भी कवि से पीछे नहीं दिखाई पड़ते। लक्षण सहित-शिखरिणी छन्द की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

"दृग पग लाज अलान भरे मनमथ अंकुस मध्य धरे
समर सही परिणाम निसा गतिगज सीस सुखी रति सा।"

वास्तव में यह 'सुमुखी' छन्द है, जो 'शिखरिणी' के रूप में ढाला गया है; जो कवि की अपनी कला है।

अलंकार प्रिय कवि की इन पंक्तियों में उत्प्रेक्षा अलंकार कितना सुन्दर है, देखिए—

"अमल चन्द्र लखि हेत चन्द्रिका विपुल कला जनु भ्राज।
छवि तिय गौरि श्याम सुन्दर पिय मिलत हरख इमि राजै।
सदन व्योम बिच उक्त बस्तु सोइ जनु घन तड़ित बिराजै।

इस कलाकार की रीति कला गहन अध्ययन पूर्ण थी। पक्तियाँ प्रमाण दे रहीं हैं—

"भुजंग प्रिया ताप चौवोर लीन्हीं
करौ कौन संदेह पी रंग भीनी"

छन्द-लक्षण के साथ साहित्य-मनीषी बैजनाथ जी ने यहाँ अपह्नुति अलंकार की बड़ी झिलमिली झलक झलकाई है। यद्यपि अधिकतर संस्कृत छन्दों में ही रचना का मौलिक रूप सामने आया है।

सन्त कवि बैजनाथ को प्रकृति के व्यापक रूप का विशद ज्ञान था। प्रकृति का मनोहर दृश्य इसी ग्रन्थ के एक छन्द में दृष्टव्य है--

"पाट कल कलित जटित जरतार भार
सोह सुकुमार तन जगत ललाम के।
तड़ित विशाल की गिरिन्द नील मणिघेरि
श्याम घन भास की परे प्रभात घाम के॥
झलक झलाझल झपाक चकाचौंधि कौंधि
औचट परत दृश्य 'बैजनाथ' श्याम के।
अम्बक अपट होत चित्त में उचट की धौं
दामिनी सघट पीत पट कटि राम के॥"

इसी प्रकार इनकी कविताओं में ओज, प्रसाद, माधुर्य स्थानानुकूल कवि कला युक्त देखने को मिलता है।

सन्त प्रकृति के होते हुए भी उनकी क्रीड़ा-कौतुक वाली प्रवृति का सुन्दरतम निदर्शन है, उनकी लीला नाटक कृति– 'लीला-प्रबन्ध'। सभी सन्तकवि कविताकार, भजनकार, गीतकार और कथाकार भले रहे हों, किन्तु इनकी नाटक-कारिता का प्रमाण कहीं नहीं मिलता।

गोस्वामी तुलसीदास जी के पृथक्-पृथक् काव्य-ग्रन्थों को लेकर गत शताब्दी में अनेक भाष्य लिखे गये और नाना प्रकार के शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं; परन्तु इनकी प्रत्येक मौलिक रचना पर एक ही लेखक द्वारा भाष्य-रचना का प्रयास प्राय: नगण्य और शून्य है; यह श्रेय तो मात्र सन्तप्रवर बैजनाथ जी को ही जाता है। हमारे इस सन्त-मनीषी का टीका रूप में यह कार्य बहुत ही सहज-सरल तथा जन-मनभावन है।

तुलसी-साहित्य के महान भाष्यकार बैजनाथ जी के गद्य का पण्डिताऊ रूप हिन्दी गद्य के विकास का एक महत्वपूर्ण सोपान है। मूल कवि के आन्तरिक मनोभाव को अपनी सहज मौलिक प्रकृति में रंमकर एक अनोखा रंग साहित्य जगत को प्रदान कर देने में बैजनाथ जी सिद्धहस्त रहे हैं।

'विनय-पत्रिका' की "देहि सतसंग निज अंग श्रीरंग, भव भंग कारण शरण शोकहारी" पक्ति का विश्लेषण मानस-मनीषी बैजनाथ जी के शब्दों में इस प्रकार है--

"हे श्री रंगदेव! आप निज अंगों की सेवा मन, वचन, कर्म से तथा सत्संग में बास दीजिए। सतसंग कैसा है, भव भंग भव सागर नाश करने का कारण है। आपके अंग की सेवा कैसी है कि शरण शोकहारी शरणागतों के दुःख को हर लेने वाली है।"

इसी प्रकार "ईशन के ईश ...." की अन्तिम पंक्ति "महिमा अपार काहू बोल को न वारापार, बड़ी साहिबी में नाथ बड़े सावधान हो।" की टीका भी देखने योग्य है--

"महिमा अपार हैं। जो वेद, पुरान, संहितादि में देव, मुनि कवीश्वर आदिन के काहू के बोल को शक्ति नहीं है, जो वारापार पाय सकै। इतनी बड़ी साहिबी पाय कै जौ दीनन पै दया दृष्टि राखत हौ, तौ हे नाथ! बड़े सावधान हौ।"

कितना सुन्दर सीधे हृदय का परिचय दिया है। यह भी स्पष्ट है कि कविप्रवर बैजनाथ जी सन्त तुलसी की भाव भूमि के कितना निकट पहुँच गये हैं।

भक्त बैजनाथ जी जब अपने उपास्यदेव भगवान् राम के 'नख-शिख-वर्णन' में दत्तचित्त होते हैं, तो वह भी देखते ही बनता है। भगवान् राम के सुन्दर मुख का वर्णन देखिए--

"चन्द है समन्द अरविन्द है सदण्ड रैन
रामचन्द जो को मुख आनन्द को कन्द है।"

विद्वद् समाज के समक्ष हमने सन्त बैजनाथ जी की केवल उन रचनाओं का ही सूक्ष्म परिचय प्रस्तुत किया, जो समय-समय पर मुझे अध्ययनार्थ सुलभ हुईं। सम्प्रति, सन्तप्रवर बैजनाथ जी के अनेक प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रन्थ इनके वंशजों के पास आज भी सुरक्षित हैं।

प्रबुद्ध हिन्दी प्रेमियों का यह परम पावन कर्त्तव्य है कि वह ऐसे साहित्यकार के सम्पूर्ण साहित्य को प्रकाशित करा कर अपने को गौरवान्वित करें। हिन्दी साहित्येतिहास में उन्हें अमर करा देने वाला स्वयं अमरत्व को प्राप्त कर लेगा, मेरा यह एकांतमत है।

***"रामकथा सुन्दर करतारी।
संशय विहग उड़ावन हारी॥"***

-गोस्वामी तुलसीदास

'सीताराम-संयोग पदावली': एक दृष्टि

—हेरम्ब मिश्र

जब और जहाँ गोस्वामी तुलसीदास जी के वाङ्मय के अर्थों पर चर्चा होगी, उन पर निज-निज मतानुसार टीका-टिप्पणी की जायेगी, किसी प्रकार की शंका उत्पन्न होने पर उसका समाधान खोजा जायेगा, तो यह निश्चित मानिये कि परोक्ष रूप में वहाँ बाबा बैजनाथ कुर्मी अवश्य उपस्थित होंगे, जैसे राम-कथा के अवसर पर पवनसुत हनुमान् जी की परोक्ष उपस्थिति अनिवार्यतः मानी जाती है। भले ही कोई सिद्ध इस रामभक्त सन्त के नाम से अनभिज्ञ हो, परन्तु जो टीका-टिप्पणी या चर्चा होगी, उसमें जो अर्थ पर बहस होगी, तो बाबा जी की ही टीकाओं में दिये गये अर्थों की प्रतिच्छाया उस पर अवश्य होगी। नाम से अभिज्ञता वहाँ कोई अनिवार्य शर्त नहीं होगी। वैसे भी आज के तथाकथित हिन्दी विद्वानों में ऐसे नाम अगुली पर गिने जाने योग्य ही होंगे, जो तुलसी-साहित्य के सांगोपांग अध्येता हों या रहे हों। ऐसी स्थिति में दोष भी किसे दिया जाये? हिन्दी [illegible] दुर्भाग्य पर रोना ही आयेगा कि उसके तथाकथित मठाधीश मात्र राजकीय लाभ प्राप्ति हेतु आधुनिक वादों के प्रति जो अध्ययनशीलता दिखलाते हैं, उसका शतांश भी तुलसी-साहित्य के अध्ययन-अनुशीलन की ओर ध्यान नहीं देते। कुछ की तो तथाकथित 'प्रगतिशील छवि' ही इस बात पर निर्भर करती है कि वह तुलसी को पाठ्य-क्रम से बहिष्कृत कराने के उपक्रम करते रहे, ऐसे लोगों पर तरस ही खाया जा सकता है। अस्तु।

भला हो (स्व०) मुंशी नवल किशोर का जिन्होंने बाबा जी की अधिकांश कृतियों का प्रकाशन अपने प्रेस से करके उनके प्रचार-प्रसार में भरसक योगदान किया अन्यथा हिन्दी संसार सिद्ध साधक रामभक्त के अपूर्व कृतित्व से अनभिज्ञ ही रह जाता। 'रामचरित मानस' के इस अप्रतिम टीकाकार ने अपनी मौलिक-रचनाओं से भी हिन्दी-माता की सेवा करने में कोई कोर-कसर नहीं रखी थी। बाबा जी की ऐसी ही एक लघु-कृति 'सीताराम संयोग पदावली' की एक प्रति (नवल किशोर प्रेस) लखनऊ से १८८० ई० में छपी अपने एक मित्र के माध्यम से प्राप्त होने पर जब उसे पढ़ा, तो चित्त उल्लसित हो उठा। उसी का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

"जय जय जय श्री जनकसुता की" इस पद से इस पुस्तिका का प्रारम्भ होता है, जिसका वर्ण्य-विषय पुस्तिका के नाम से स्वतः स्पष्ट है। इस कृति की विलक्षणता इस बात में निहित है कि इस में मिथिला-नरेश महाराज सीरध्वज जनक

के घर में सीता जी के जन्म के शुभ अवसर पर जो उल्लास पाया जाता है, वह अन्यत्र सम्भवतः कहीं भी उपलब्ध नहीं है। पुत्र-जन्म पर तो बधाइयाँ बजती मिलती हैं; पर कन्या के जन्म पर तो आनन्दोत्सव मनाये जाने के इस वर्णन को तो अलभ्य ही कहा जायेगा –

"आजु जनकपुर धूम सुघर घर अनँदबधाई बाजत री।
प्रगटी भूप विदेह सुता घर मंगल साज सुसाजत री ।।
मुनि धुनि वेद वंदि विरदावलि नट कृत खेल कलाजत री।
दुंदुभि जय धुनि देव फूल झरि व्योम बिमानन राजत री ।।
रोचत फल दल फूल दूब दधि कंचन थारन भ्राजत री।
आरति लिये जात गावत तिय सुर मुनि कोकिल लाजत री ।।
याचक दानि निछावरि मंगल घट प्रति द्वार विराजत री।
बैजनाथ बाजत निशान पुर मनहु व्योम घन गाजत री ।।"

जनकपुर में बधाइयाँ क्यों न बजें, जगज्जननी ने जन्म जो लिया है। वैसे भी निःसन्तान दम्पति को कन्या-रत्न की प्राप्त पर उतना ही आनन्द होता है, जितना अन्य लोगों को पुत्र जन्म पर भी शायद नहीं होता होगा।

मिथिलापुरी की नारियाँ आनन्दमग्न हो मगल-गान गाती हुई राजप्रासाद की ओर तीव्र गति से जा रही हैं, उनकी भाव विह्वलता देखने योग्य है।

"गावत मंगल कोकिल बैनी।
मिथिलापुर सिय जन्म भयो सुनि उठि धाई कामिन बुधि पैनी ।।
झलकत वोप रूप योवन सो आननचन्द बाल मृग नैनी।
विचलित हार बार छूटे शिर विगलित बसन विभूषण सैनी ।।
विह्वल गात जात चातक सी दरशन आश स्वाति जल दैनी।
निरखि निहाल सुता आनन भा पूरणचन्द शारदी रैनी ।।
गोरी हाल चकोरी भोरी यकटक देखि निमेष सिरैनी।
वैजनाथ वलि जात सिया पर तन मन धन बिन मोल बिकैनी ।।

पुत्र-जन्म पर सोहर गाये जाते हैं। 'सोहर' लोकगीत है, इसे 'सोहिल' या 'सोहिला' भी कहते हैं। सीता जी के जन्म पर भी सोहर गाये गये—

"भूप सीरध्वज वाम सुता सिय जाई हो।
* * *
सखियाँ, बैजनाथ धनि भाग सोहिला गाई हो ।।"

एक अन्य लोक धुन पर गीत देखिये—

"दुख्तर के सदके जाओ। अवदान भली विधि पाओ।
* * *
इति वैजनाथ यश गाये। अजी वाह वाह है।"

नारद जी दी द्वारा कन्या का भविष्य कथन भी अनूठा बन पड़ा है।
सीताजी पालना ना झूलें, भला यह कैसे हो सकता है

"झूलत सीय झुलावत नारी।
कनक जटित मणि रूचिर पालने शोभित आँगन रूप उज्यारी ।।
कर कमलन सजि रुचिर पहुँचिया पगन पउटिया रुनझुनकारी।
सुखमा सदन वदन आनँदनिधि जननी निरखि जात बलिहारी ।।
मूरति मात-पिता सुकृत की निमिकुलपंकज प्रभा तमारी।
बैजनाथ सन्तन जीवन धन रघुकुलमणि की प्रानपियारी ।।"

सीताजी के जन्म तथा तज्जन्य हर्षोल्लास का वर्णन करने के पश्चात् इस पुस्तिका में रामचन्द्र जी के जन्म का वर्णन किया गया है, जो अत्यन्त सरस एवम् हृदयग्राही है। भगवान राम के जन्म पर महाराज दशरथ ने इतना प्रभूत दान दिया कि—

"याचक भये निहाल जन्म भरि फिर नहि दुसरे द्वार गये।"

जन्म के पश्चात् जितनी क्रियायें नाल काटना आदि तथा संस्कार छठी आदि का भी विधिवत् वर्णन विभिन्न पदों में है। यथा—

"पढ़ि शिवमंगल सूत बँधवाये। छूरा पूजि नार छिनवाये।"

प्रभु राम के पूर्वजों का संक्षिप्त वर्णन भी ज्ञानवर्द्धक है।
रामचन्द्र जी के पालना में झुलाये जाने का वर्णन देखिये—

"रघुकुल मनि वर पलने झूलत हैं मुदित झुलावत मात हो।
पीत रंग बर ललित झँगुलिया सोहत साँवले गात हो ।।
कर पद ललित अरुण पकज सो कोमलता झलकात हो।
अनखा भाल नयन अंजन लौ अरुण अधर दरशात हो ।।
कागभुशुंडि शंभु योगेश्वर निरखे नहीं अघात हो।
रामचन्द मुखचन्द विलोकत नयन पलक रहि जात हो ।।
कहि न सकैं विधि शेष शारदा नारदादि सकुचात हो।
बैजनाथ छबि कहँ लै बखानौं निगम नेति की बात हो ।।"

'निगम नेति की बात' का वर्णन भला कर भी कौन सकता है?

सूरदास के पद 'जसोदा हरि पालने झुलावत' से यह पद किसी भी प्रकार कम नहीं है।

प्रभु रामचन्द्र जी की बाल लीलाओं का अनुपम वर्णन गोस्वामी तुलसीदास जी ने जैसे 'कवितावली' के प्रथम सात छन्दों में किया है, उसी प्रकार सन्त बैजनाथ जी का बाल-लीला वर्णन भी अपने में किसी प्रकार न्यून नहीं है अपितु कहीं-कहीं पर तो अलौकिक सा है।

"राज सुवन खेलत आँगन में जननि निरखि मुख लेत बलैया ।
जैसे राम भरत तिमि श्यामल गौर लषन रिपुहन दोऊ भैया ।।
कठुला कंठ पहुँचिया रुनझुन तनु अनुहार झँगुलि छवि छैया ।
कर पग ललित अरुण पंकज से मन हरिलेत चलनि तिमि बैया ।।
चमक विकास युगल दँतियन की सजत विलास मुखनि मुसकैया ।
किलकि धाय लखि ललित खिलौना पीछे लागि फिरत तहँ मैया ।।
काकभुशुंडि इष्ट शंकर के धन्य भाग्य तन बाल भजया ।
मूरति चारि भूप सुकृति की बैजनाथ जीवन धन पैया ।।"

'अवधेश के बालक चारि सदा, तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं' के परिप्रेक्ष्य में राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न चारों भाई मानो दशरथ की सुकृति (सत्कर्मों) की मूर्ति हैं, यह भाव कितना हृदयग्राही है। और इस पद की भाव-प्रवणता का चित्रण करने में तो बड़े-बड़े कुशल चित्रकार भी स्यात् ही समर्थ हो पायें—

"मुख सिन्धु हलोरत मात पिता लखि खेलत आँगन चारि सुवन ।
तन श्याम झँगुलिया पीत गौर तन श्याम चैल हित शोभहु बन ।।
झलकै मणिभूषण राम अंग अंजन कठुला गर हरिनखु बन ।
उठि चलत लरखरत गिरत भूमि भाजत लखि धावत एक छुवन ।।
मणि खम्भन झाँकत लरत छाँह बतरात बुलावत देत युवन ।
नाचत गावत भाजत हँसि कै पाछे लगि आवत देखि बुवन ।।
जग व्यापि रही ज्यहि रूपप्रभा समदृष्टि दयानहि मित्र दुवन ।
सोइ भूतल खेलत जा तष में प्रति रोम विराजत कोटि भुवन ।।
ज्यहि थाह न पाये बैजनाथ शारद नारद विधि से पटुवन ।
मुख रूख करे सोइ भूख लागि जननी ढिग लागे आँगु चुवन ।।"

बैजनाथ जी ने 'बन्ना' गीत और 'गारी' का भी समावेश इस संयोग पदावली में किया है। आजकल के आपाधापी भरे जीवन में बारातें एक ही दिन में वापस हो लेती हैं। ज्योनार और कलेवा आदि की लोक-रीतियाँ विवाहोत्सव में अब लुप्तप्राय होती जा रही है। गांवों में अब भी इन रीतियों का किसी सीमा तक परिपालन हो रहा हैं। 'गारी' गीतों में भी व्यंग्य-बिनोद का प्रचुरपुट रहता था और भोजन करते समय मन प्रमुदित हो उठता था। देखिये रामचन्द्र जी को मिथिला की नारियां कैसी मजेदार 'गारी' सुनाती हैं—

"कहि साँचु हमारी जनि जानो कछु झूठ हहा ।
पितु गौर तुम्हारे तुम श्यामल आश्चर्य महा ।।
दूसरि सखि बोली और सुनी कछु बात महूँ ।
भगिनी मुनि ब्याही मिल्यो न राजकुमार कहूँ ।।

सुनतै यह बानी पुनि सखी तीसरि बात कहै ।
कै और कुँवारी तव भगनी घर माँझ अहै ॥
सीख मानो हमारी जो तुम्हरे मन बात ठनै ।
इह छैल कुँवारे ब्याहि दियो मिथिलाधि तनै ॥
ऐसे चलि आई कीधौं नई यह बात भई ।
कहुँ राजन माँहि की फूफू मुनि के संग गई ॥
यह रीति सदाई एक बात नहिं जात कही ।
रघुभूप दुलारी चन्द्रावति अस नाम रही ॥
तिनहूँ बिन ब्याही कुंवारि हतो उर गर्भ धरो ।
सुत नासा कि जायो नाशकेतु तेहि नाम परो ॥
घर छाँड़ि सिधारी आइ महावनवास करी ।
तिन देखि कुँवारी ऋषि उद्दालक आनि बरी ॥
कहि कौन बखानै बहुबातैं यहि भाँति भई ।
कुल माँहि तुम्हारे और सुनी यक बात नई ॥
कोउ राजन माहीं पुरुष रूप ते नारि भई ।
तिनका शशि भोगी तिन यक पुत्र अनूप जई ॥
सखी एक सयानी बोलि उठी मुसक्याय भला ।
एक बात अनोखी साँचु भई कीधौं झूठ लला ॥
कोउ भूप तुम्हारे पुरुष रूप उर गर्भ लये ।
सुत जायो अपूरब मानधात अस नाम भये ॥
अब कौन गनावै अनगनती गमि जात नहीं ।
समरथ कुल भूषण इमि शोभा कुल माँहि रही ॥
यहि भाँति अनोखी गारी दई बहु ब्यंगमई ।
अचवन करि बैठे मुख प्रछालि पुनि पान दई ॥
छबि कौन बखानै सह समाज आनन्द भरो ।
सुखमय सिय लालनि बैजनाथ उर बास करो ॥"

इस 'गारी' में इक्ष्वाकु-कुल की अच्छी खबर ली गयी है, हास-परिहास के माध्यम से स्पष्ट है कि बैजनाथ जी ने पुराणों का सम्यक् अनुशीलन किया था और उन्हीं में वर्णित आख्यानों का उपयोग उक्त 'गारी' में किया है ।

सीता और राम के संयोग का बारहों मास का वर्णन संक्षेप में करते हुए विशेष बल फागुन, होली और वर्षा ऋतु में हिंडोला झूलने के आनन्ददायक स्वरूप का है । 'आजु राम सिय फाग रचे री' पद में होली खेलने का बहुत ही सुन्दर वर्णन है । व्रज की होली का प्रभाव यहाँ स्पष्ट परिलक्षित होता है । होली के

रंग में सराबोर राम-सीता की युगलमूर्ति हृदय में वास करे, ऐसी भावना हर भक्त के हृदय में होना स्वाभाविक है—

'दोउ साज सहित आनन्दकन्द। बसौ बैजनाथ उर व्योमचन्द ॥'

और वर्षा ऋतु में— 'हिंडोरे युगल कुँवर झूलैं' पद में अयोध्या के दोलोत्सव का सरस वर्णन है। इस कृति के समापन में भक्तप्रवर बैजनाथ की अन्तरात्मा की आवाज इस स्तुति में प्रस्फुटित हुई है—

"जय राम सनातन ब्रह्म परे। सत चेतन आनँद रूप हरे ॥
बिधि जानन शंकर ध्यान धरे। शुक शारद नारद नाम ररे ॥
निगमागम गावति नेति करे। स्वइ रोवतु सूपहि भूप घरे ॥
नहिं पावत योग समाधि करे। मुनि ध्यावत ही नहिं नेम टरे ॥
गुण गावत व्यास पुराण नरे। तिन को जननी हँसि गोद भरे ॥
वय बाल भजै सनकादिक रे। यश आदि कवी शतकोटि करे ॥
वर काग अजा तरि जा बल रे। स्वइ लोटत आँगन भूतल रे ॥
ऋषि नारि तरी छुइ जा पग रे। परसे बनदण्डक होत हरे ॥
बल जा भय भक्ति मही बिचरे। धरु बैजसुनाथ हिय बिचरे ॥"

'रामचरित मानस' में 'जय राम हरे सुखधाम हरे' स्तुति से इसकी तुलना करके देखिये। भक्ति-रस क्या इस में कुछ कम है?
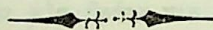
यहि घाट ते थोरिक दूरि अहै कटि लौं जल थाह देखाइहौं जू।
परसै पग धूरि तरै तरणी घरणी घर को समुझाइहौं जू ॥
तुलसी अवलंब न और कछू लरिका केहि भाँति जिआइहौं जू।
बरु मारिये मोहिं बिना पग धोये हौं नाथ न नाउ चढ़ाइहौं जू ॥

जब श्री रघुनाथ जी नाव माँगे तब केवट कहे हे महाराज यहि घाट ते थोरी दूरि पर सरिता थाह कटि तक जल है सो मैं देखाइ देहौं तहाँ उतरि जाइये भाव उतारिबे में मों को इनकार नहीं है काहे ते आपके पग की धूरि लागे अहल्या सम मेरी नाव तरि जाइ तौ घर में जाइ घरणी को कैसे समुझाइहौं भाव नारिन को जड़ता सुभाव होत ताहू में नीच जाति की नारी महा प्रबल दूसरे और अवलम्ब जीविका की मेरी कछु नहीं है तौ लरिका कौन भाँति जिवाइहौं ताते बरुकु मोको मारिये सो अंगीकार है कि सब परिवार तौ ना मरैगो ताते यह सांची बात मैं कहत हौं बिन पग धोये नाव पर न चढ़ाइहौं परिवार जीवन मुक्त करो चाहत ताते व्याज स्तुति है।

—'कवितावली-टीका' से

'नख-शिख-वर्णन'
राम रूप की काव्यमयी झाँकी

–डॉ० (श्री मती) अर्चना तिवारी

प्राय: सभी प्रबन्धकार कवियों ने अपने चरितनायक के अङ्ग-सौष्ठव का किसी न किसी रूप में वर्णन अवश्य किया हैं । स्वयं आदि कवि ने 'बालमीकीय रामायण' के मूल स्वरूप के अन्तर्गत श्रीराम के आजानुबाहु, सुशिरस्क, प्रशस्त-ललाटयुक्त, कम्बुग्रीव तथा समविभक्ताङ्गरूप का निरूपण किया है । कालान्तर से देह-यष्टि के वर्णन में सर्वाङ्गपूर्णता लाने के लिये इष्ट नायक के चरणों से प्रारम्भ कर केश पर्यन्त पृथक पृथक सभी अंगो की सुन्दरता का निरूपण करने की परम्परा का सूत्रपात हुआ। संस्कृत में शकराचार्य के तीन स्तोत्र इस परम्परा के प्रमुख प्रतिनिधि हैं । यह हैं– १. विष्णुपादादिकेशान्त वर्णन-स्तोत्र, २. शिवपादादिकेशान्त वर्णन-स्तोत्र तथा ३. शिवकेशादिपादान्त वर्णन-स्तोत्र । स्पष्ट है कि तृतीय स्तोत्र, द्वितीय के विपरीत अवरोहण क्रमानुसारी है । हिन्दी के भक्ति और रीति कालों में भी इस परम्परा का आगे चलकर अनुपालन हुआ और यह अत्यन्त स्वाभाविक था कि सन्त कवि बाबा बैजनाथ कुर्मी के सदृश प्रतिभावान कवि तथा सिद्ध भक्त भक्ति-भावना और साहित्य-साधना के मध्य विद्यमान द्वैत को समाप्त करने के लिए 'नख-शिख-वर्णन' जैसी काव्य-विधा को अपनाता। प्रस्तुत 'नख-शिख-वर्णन' शीर्षक ग्रन्थ के अन्तर्गत वस्तुत: बाबा बैजनाथ जी के दो ग्रन्थ संकलित हैं । पहला तो नख-शिख परक ही है और दूसरा राज्य तिलक की शोभा से सम्बद्ध है । दोनों में क्रमश: ६५ और १६ कवित्त छन्द प्राप्त होते हैं । एक ही जिल्द में बँधे दोनो ग्रन्थ एक ही शीर्षक से मुंशी नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से सन् १६१३ मे द्वितीय संस्करण के रूप में में प्रकाशित हुए हैं । इन पर बाबा बैजनाथ के ही अत्यन्त विदग्ध मनीषी कनिष्ठ आत्मज श्री रामलाल ने टीका की रचना की है ।

ग्रन्थ-रचना का प्रयोजन वास्तव में विद्वता या काव्य-शक्ति का प्रदर्शन न होकर भगवान् श्रीराम के स्वरूप का पूजा पाठ के समय ध्यान करना है, जैसा कि रामलाल जी का कथन है

"प्रभु की जो ऐश्वर्यमै, कीरति सुयश प्रताप ।
रूप-माधुरी गुणन के, अन्तरगत सब थाय ।।
अलंकार व्यंगार्थ धुनि, काव्य-रीति जनि जान ।
पाठ प्रयोजन ग्रन्थ ते, राम रूप को ध्यान ।।"

जैसा कि पहले कहा गया, शङ्कराचार्य-कृत 'विष्णुपादादिकेशान्त वर्णन स्तोत्र' का प्रयोजन भी यही ध्यान-धारणा हैं —

"आपादाद्य च शीर्ष्णो वपुरिदमनघं, वैष्णवं यः स्वचित्ते ।
धत्ते नित्यं निरस्ताखिल कलिकलुषे, सन्ततान्तः प्रमोदः ।।"

'नख-शिख-वर्णन' में मङ्गलाचरण के अनन्तर कवि ने सर्व प्रथम श्री राम के चरण-तल का जो वर्णन किया है, उससे उनकी दृष्टि और दिशा का आभास मिल जाता है —

"लहलहे ललित ललाम लप लप होत,
पोत भवसागर के तारक सबल हैं;
अंकुश कुलिश ध्वज कमल यवादि चिह्न,
रंग रंग ऋक्ष किधौं ज्योति रविथल हैं ।
चीकने चमक चटकीले चोखे बैजनाथ,
वट के गुलाबन के आबदार दल हैं;
अमल कमल लह कि मंजु मखमल हैं,
कि माखन से कोमल कि राम पगतल हैं ।।"

श्री रामचन्द्र जी के चरण-तल नवीन, अति कोमल, अत्यन्त सुन्दर और दीप्तिमय हैं, वे भवसागर से पार ले जानेवाली सुदृढ़ नौका स्वरूप है । उनमें अङ्कुश, वज्र, ध्वजा, कमल और यव आदि चिह्न विद्यमान हैं । अनेक रङ्गों वाले नक्षत्रों में युक्त ये चरण-तल ज्योतिर्मय सूर्य-लोक से प्रतीत होते हैं । ये अत्यन्त चिकने चमकीले, चटकीले और जीवन्त होने के कारण बरगद के कोमल-अरुण-दल, गुलाब की दीप्तिमयी पंखुड़ियों, निर्मल, कमल-कुसमों, सुन्दर मलमल और नवनीत के समान सुकोमल हैं ।

'लहलहे ललित ललाम लप लप होत' या 'चीकने चमक चटकीले चोखे' में वर्णावृत्ति-जन्य पद-लालित्य की छटा देखते बनती है । अंकुश आदि अड़तालिस चरण-चिन्हों की चर्चा कवि के सामुद्रिक शास्त्रीय वैदुष्य की ज्ञापक है । अप्रस्तुतों की तो झड़ी ही खड़ी कर दी गयी है ।

इन ६५ छन्दो में क्रमशः जिन छन्दों में अंगो का वर्णन किया गया है वह — अंगुलियुक्त नख (३), पद पृष्ठ (४), एड़ी (५), गुल्फ (घुटने) (६), जंघायें (६), नितम्ब (८), कटि (१०), करधनी (११), नाभि (१२), त्रिवली (१३), रोम-राजि (१४), उदर (१५), वक्ष (१६), पीताम्बर (१७), दिव्यमाला (१८), कर-नख (१६), अंगुलियाँ (२०), हाथ (२१), भुजा (२२), पृष्ठ भाग (२३), आजानुबाहु (२४), ग्रीवा (२५), चिबुक (२६), अधर (२७), दन्तावली (२८), मन्द

स्मिति (२६), जिह्वा (३०) कपोल-युग्म (३१-३२), मुख(३३), नासिका(३३-३८) नासिकाभूषण (बुलाक) (३६-४०), नेत्र (४१-४४), बरौनियाँ (४५), केश (४६), कान (४७-४८), भ्रकुटि (४६), मस्तक (५०), तिलक(५१), मुकुट(५२), सर्वाङ्गीण सुन्दरता (५३-६५)। नख-शिख-वर्णन के पश्चात् राम-राज्याभिषेक से प्रारम्भ कर के १२ कवित्त छन्दों में 'राजतिलक' की शोभा का वर्णन किया गया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ कवि की प्रेम-लक्षणा-भक्ति की भावना से अनुप्राणित है, जिस का लक्षण 'नारद-भक्ति-सूत्र' के अनुसार इस प्रकार है--

"अथातो भक्ति व्याख्यास्यामः। सा कस्मै ? परमप्रेमरूपा अमृतस्वरूपा च। पल्लब्ध्वा पुमान् सिद्धो भवति, अमृतो भवति, तृप्तो भवति। यत्प्राप्य न किञ्चिद् वाञ्छति, न द्वेष्टि, न रमते, नोत्साहो भवति।"

इस परम-प्रेम-स्वरूपा भक्ति को कवि ने सर्वोपरि निरूपित करते हुए कहा है—

"कीरति अपार बैजनाथ कोशलेन्द्र जी की,
धरा पै हिमाद्रिशृंग, गंग उर्मिका सी है।
गंग पै सुकर्म, कर्म ऊपर दया सो दान,
दान सनमान पर धर्मशीलता सी है॥
धर्मशील पर शम दम पै विराग त्याग,
त्याग पर शुद्ध-रूप ज्ञान दीपिका सी है।
ज्ञानदीप पर मुक्ति चतुरमशाल ऐसी,
मुक्ति पर दीप्ति भक्ति प्रेमलक्षणा सी है॥"

अभिप्राय यह कि प्रेम-लक्षणा-भक्ति की स्थिति मुक्ति से भी ऊपर की अवस्था है।

इस सन्त कवि की कामना केवल प्रभु के यश में, क्रोध बुरे कामों के प्रति और मोह श्रीराम के स्वरूप में अपनी सार्थकता की खोज में है— 'लोभ यश नाम ही, सक्रोध क्रूर काम ही, रह्यो है मोह राम ही।' राम-राज्य के प्रति भी कवि ने अपने आकर्षण को समुचित रीति से प्रकट किया है –

'राज शिरताज रघुराज महाराज तव समाजसाज राजश्री सदैव राज चाहिए'

ग्रन्थ का प्रत्येक छन्द कवि की भक्ति-भावना, कल्पना-वैभव, व्युत्पत्ति और काव्य-सामर्थ्य की साक्षी सँजोते हुए दिखलायी पड़ता है। उपमानों के चयन में कवि ने सम्पूर्ण पुराण साहित्य और आध्यात्मिक वाङ्मय विषयक अपने विशद ज्ञान का उपयोग किया है।

अलंकारों के प्रति कवि विशेष सजग नहीं रहा है। फिर भी स्थान-स्थान पर सन्देह, प्रतीप और उल्लेख अलंकारों की प्रयोग-पटुता से वर्ण्य विषय की प्रभावोत्पादकता में वृद्धि स्वतः परिलक्षित होती है। 'सन्देह' अलंकार के सुन्दर

प्रयोग का एक स्थल यह है, जहाँ दिव्य नखों के माधुर्य का वर्णन किया गया है—

"केसरिकली है किधौं माणिकफली है द्युति
विद्रुमदली है अमली है ज्योति जागुरी।
दल देवतरु, पञ्चदेवन को घरु, पञ्च
शक्ति रूप धरु पञ्चफरु किधौं नागुरी॥
कर्ष मोह मारण उचट वशकारण कि
बैजनाथ धारण कि पञ्चतत्त्व भागुरी।
कञ्जदल बगरी सु ता पै लाल नग री
सु दानन की आगरी कि राम-कर आँगुरी॥'

श्रीराम की करांगुलियों में यहाँ केसर-कलिका; माणिक्य-मणिकी फली, विद्रुम (मूँगा) को भी धूमिल करने वाली द्युति; कल्पबृक्ष के पल्लवों; ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, गणेश और सूर्य संज्ञक पाँच देवताओं; सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, सिद्धि, प्रभा मयी पाँच शक्तियों; देवादि यज्ञों के पाँच फल; आकर्षण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, मारण प्रभृति पाँच तान्त्रिक प्रयोगों के पञ्चमांशों का सन्देह प्रकट किया गया है।

श्रीराम की मन्द मुस्कान से संवलित रसना के वर्णन में, इसी प्रकार कवि ने 'उल्लेख' अलंकार का बहुत सुन्दर प्रयोग किया है—

"विद्रुम अगार देव शक्ति द्विज सेव ताहि,
कमल अमल सेज कमला सवारी है।
अक्षरक्षमानिनाद वेदन की खानि शुद्ध,
वचन की दानि रस परखनहारी है॥
आनँदप्रसूती, उर अन्तर की दूती, स्वर
सात हू करोती बैजनाथ गतिहारी है।
रसना हमारी एक तस ना बखानी जाय
जस नाम रूप राम! रसना तिहारी है॥"

नेत्रों के वर्णन से सम्बद्ध एक स्थल पर 'प्रतीप' अलंकार का प्रयोग भी उल्लेखनीय है—

"अजब रसीले समशीले हैं सुशीले कंज,
खंजन हँसीले मीन मंजुल मरोर के।
सुजन अशीले उर अन्तर बसीले प्रेम
मादक नशीले हैं यशीले चित्तचोर के॥
कविन के बैन तैंन उपमा बनै न देन,
बैजनाथ नैन चैन दैन दया कोर के।

और हैं न नैन लोक हेरे निज नैन,
जैसे हेरे हम नैन नैन कौशल किशोर के ।।"

इस प्रकार 'नख-शिख-वर्णन' बाबा बैजनाथ की काव्य-प्रतिभा का एक अद्भुत आकल्प है, जिस के प्रत्येक छन्द से भक्ति-भावना की गहराई, प्रभावमयी अभिव्यक्ति की सामर्थ्य, शास्त्रीय-वैदुष्य, साधना की सघनता तथा लोक-कल्याण की कामना प्रकट होती है ।

●

"आँगन खेलत आनन्द कन्द ।
रघुकुल कुमुद सुखद चारु चन्द ।।
सानुज भरत लषण संग सोहैं ।
शिशुभूषण भूषित मन मोहैं ।।
तनु द्युति मोर चन्द्र जिमि झलकैं ।
मनहु उमँगि उमँगि छवि छलकैं ।।
कटि किंकिणी पैंजनि बाजैं ।
पंकज पाणि पहुँचिया राजैं ।।
कठुला कंठ बघनहा नीको ।
नयन सरोज मैन सरसी को ।।"

आनन्द के कन्द कहीं मूल ते आँगन में खेलत हैं रघुकुल - कोकी हेतु सुन्दर चन्द्रसम सुखदायक हैं । सहित शत्रुहन भरत लषण संग विशेष शोभित हैं बाल समय के भूषण भूषित कहीं अंग - अंग में पहिरे हैं सो मन को मोहत है । तनु की द्युति मोर के चन्द्रिका सम झलकति है । कैसी द्युति है मानो छवि उमँगि कै अंग अंग पर छलकि रही है । कटि में किंकिणी अरु पाँयन में पैंजनी बाजत है कमल से कर में पहुँची राजत है । कण्ठ में कठुला तामें बघनहा राजत सुन्दर नयनकमल काम सरोवर के ऐसे हैं ।

—'गीतावली-टीका' से

काव्य-कल्पद्रुम : एक अध्ययन

– डॉ० ओम प्रकाश पाण्डेय

कविर्मनीषी और राम भक्तों की परम्परा में उच्चकोटि के साधक-सन्त बाबा बैजनाथ की मौलिक कृतियों के अन्तर्गत 'काव्य-कल्पद्रुम' का विशिष्ट स्थान है। रीति युगीन मानकों में कवियों के लिए केवल काव्य-साधना ही सर्वोपरि नहीं थी, उन्हें अपने 'आचार्यत्व' का परिचय भी किसी न किसी काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ रचना के माध्यम से देना पड़ा। इस परम्परा से केवल कुछ ही बोधा और घनानन्द जैसे सुकवि मुक्त रहे हैं। अवशिष्ट अधिकांश कवियों ने शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्तों और काव्य के विभिन्न उपादानों के परिचायक बहुसंख्यक ग्रन्थों का प्रणयन भी किया है। 'काव्य-कल्पद्रुम' भी इसी श्रेणी का उत्कृष्ट ग्रन्थ रत्न है। बाबा जी के जो ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हो सके, उन्हीं में एक यह भी है। पाण्डुलिपि रूप में उपलब्ध इस ग्रन्थ में कुल ६५ पर्ण अथवा १३० पृष्ठ हैं। सम्पूर्ण हस्तलेख बाबा जी के कर कमलों से ही प्रसूत माना जाता है। पुष्पिका से ज्ञात होता है कि इसकी रचना कार्तिक कृष्ण पञ्चमी-मंगलवार सम्वत् १६३५ विक्रमी को सम्पन्न हुई थी। यह समय रीतिकाल का प्राय: अन्तिम चरण रहा है। समसामयिक परिवेश में आधुनिकता की आहट तो हो गई थी; लेकिन पारम्परिक आग्रहों से सर्जक का मानस पूरी तरह मुक्त नहीं हो सका था। इसी कारण 'काव्य - कल्पद्रुम' संस्कृत के काव्यशास्त्र की पूर्व पीठिका पर ही प्रतिष्ठित दिखलायी देता है।

ग्रन्थ का प्रारम्भ जिस पद्य से हुआ, वह द्वयर्थक है – इसमें भगवान् श्रीराम के चरण कमलों के साथ ही 'श्री' प्रभृति छन्दों को भी नमस्कार किया गया है–

"कला वर्ण विश्वस्थितिर्पालयाये, गुणो निर्गुणात्मांस लै वेद गाये।
तमेकं विभु सार स्वछंद नामी, स श्री राम पादांबुजा तं नमामी॥"

मूल ग्रन्थ छन्दोवद्ध है, जिस पर स्वयं रचयिता ने टीका की भी रचना की है, जो गद्य में है। ग्रन्थारम्भ छन्दो विचार से है। बाबा जी का युग छन्दोवद्ध कविता का था, आज की तरह अतुकान्त कविता का नहीं। उस समय छन्द और उसके विभिन्न अवयवों की गहरी जानकारी कवि के लिए आवश्यक थी। गुरु और लघु की तकनीक को समझे बिना कोई व्यक्ति कवि के रूप में अपनी पहचान करा ही नहीं सकता था। इसी लिए गुरू - विचार से प्रारम्भ कर बाबा जी ने इस ग्रन्थ में गुरू-लघु-संज्ञा-कला विचार, मात्रा नष्ट, मात्रा उद्दिष्ट, वर्णपताका, वर्णमर्कटी, मात्रा प्रस्तार, दग्धाक्षर, वर्णवृत्ति प्रभृति का विशद परिचय दिया है। सुबोधता के आग्रहवश स्थान-स्थान पर चक्र भी अंकित हैं, जो ग्रन्थ गौरव में वृद्धि कर

देते हैं । उदाहरण स्वरचित हैं । इसके पश्चात् कवि ने 'नायिका-भेद' का विस्तृत विवेचन किया है । प्रमुख नायिकायें ये हैं— "ऊढ़ा अनूढ़ा सपर्कीय पंचालि मुग्धाज्ञज्ञाता समध्याक प्रौढ़ालि ।" आगे इनके भेद-प्रभेदों का वर्णन है । इस नायिका-ज्ञान का प्रयोजन लौकिक वासना में लिप्त होना न होकर मोक्ष-प्राप्ति है । स्वयं बाबा जी के शब्दों में—

"कामनायका धर्मवृति अर्थालंकृति धाम ।
लक्षनबोध सुमौक्षफल काव्य-कल्पद्रुम नाम ।।"

यहाँ रचयिता की अवधारणा यह प्रतीत होती है कि विविध नायिकाओं के प्रति मनुष्य के मन में आकर्षण अथवा राग तभी तक रहता है, जब तक वास्तविकता का बोध नहीं हो जाता । विभिन्न नायिकाओं के स्वरूप निरूपणार्थ बहुत सुन्दर पद्यों की रचना कवि ने की है, इस सन्दर्भ में रूपगर्विता नायिका का यह स्वरूप चित्रण द्रष्टव्य है—

"कसि कर वर वीन गान गुन परवीन साजि,
सुर लय लीन अमल अलापरी ।
मान तान रस बसि हाव भाव हसि कसि,
कर गर मोरि फेरि अलप कलापरी ।।
उझकि-उझकि झूमि चपल चलत भूमि,
तनुन टिपट घूमि मृदंग रंग थापरी ।
येक तीस वरन गुणन्त मन हरन सुआदि,
अन्त छेक गन गुन गनिका भरी ।।

मधुर मयंक मुख मृदु मुस्क्यानि सुख,
मनिन मयूख माल माधुरी मिली तनै ।
मैनकासि तैन मदमाती मिली मधुरद,
मुदमहा मंजुलद मुखर मजीरनै ।।
भूरिसुख मैन साल मागत मनिन माल,
मोल लेत मन लाल मानि माल जोवनै ।
मधुर बरन ईक आवै बार जो अनीक,
वृत उपनागरी करत गनिका भनै ।।
कोट पट चटकील चोटी लट लटकील,
कुटिलकटाक्षकी लखनि भाति-भातिनै ।
भृकुटी विकट वट ललित ललाट पट,
टीका टेढ़ि पाटी घट सुभट तटंकिनै ।।

छटा माल छटक सुलटि कटि लटक,

पटक पद झुभाक लूटती धनै मनै ।

संधि लौ समास लूप ओज साट वर्ग लूप,

वृति परुषासरूप गर्व गनिका भनै ।। "

टीका में एक स्थान पर ग्रन्थ के नामकरण को अन्वर्थ करते हुए नायिका-भेद, छन्द, अलंकार और लक्षणा-व्यंजना के ज्ञान को चार पुरुषार्थो की प्राप्ति में पृथक्-पृथक् निमित्त बतलाया गया है—

"यामे नायिका भेद सो कामफल है, छन्द ज्ञान सो धर्म फल है अरु अलंकार भेद सो अर्थफल है, लक्षना-व्यंजनादि सबके लक्षन को ज्ञान सो मोक्ष फल है, अर्थात अलंकार, नायका-भेद, लक्षना व्यंजना रसादि सांग सब उदाहरण नाम छन्द ही में है; ताते या ग्रन्थ को नाम काव्य-काव्यद्रुम है ।"

अलंकार निरूपण के प्रसंग मे लक्षण प्राय: नहीं दिये गये हैं— मात्र उदाहरण ही हैं । लुप्तपूर्णोपमा का एक सुन्दर उदाहरण यों है—

'कलिका सनग चंप शुभ पद मंद मद

टारी ऐसी दोऊ तापै गुरुता नितम्ब लेखि,

सिंह कटि निकट गभीर कुंड बीचिका सी

फैली स्याम सुक्षम उदरन सम पेखि ।

कुच्च उच्च श्रीफल कपोत की सी ग्रीव सित

कुन्द सी कटाक्ष अक्ष तिक्षन सुकीय वेखि;

बैजनाथ बालमुख सेत विधुपूरण सो फैली

फूलि प्रीति पीपरन दंड कंज देखि ।'

रसनोपमा का उदाहरण भी यहाँ उल्लेखनीय है—

"रसनोपमा कैसे, दीपक सो दीप जैसे'

दीपक सो दीप कैसे, जैसे तर्क दुब्धा को ।

दुब्धा को तर्क कैसे, मानिक को मोल जैसे,

मानिक को मोल कैसे, जैसे काम लुब्धा को ।

लुब्धा को काम कैसे, सुजनन को नाम जैसे,

सुजनन को नाम कैसे, जैसे बक्ष दुग्धा को ।

दुग्धा को वक्ष कैसे चंद्रमै चकोर जैसे

चंद्रमै चकोर कैसे, जैसे पीव मुग्धा को ।

'दुब्धा' है दुविधा, जिसका निराकरण तर्क से हो जाता है ।

काव्यशास्त्र की भारतीय परम्परा में वेदों की मान्यता स्वामी के आदेश के समान है अर्थात् वे शब्द प्रधान होने के कारण प्रभु सम्मित हैं, स्मृतियाँ सुहृदों

के वाक्यों के समान हैं; वे मित्र के समान शुभाशुभ का बोध कराती हैं। काव्य को आचार्यों ने 'कान्ता सम्मित' कहा है- अर्थात् प्रेयसी जैसे प्रिय को अपनी रसभरी बातों से कुमार्ग से हटाकर सत्पथ पर ले जाती है, वैसे ही काव्य भी रसानुभूति की प्रक्रिया से मानव-मन को इस प्रकार संस्कार सम्पन्न कर देता है कि वह रामादिवत् व्यवहार करने लगता है, रावणादिवत् नहीं। इसी मान्यता को बाबा बैजनाथ ने अपने एक छन्द में इस प्रकार व्यक्त किया है—

"प्रभु संमित सब्द जु वेद सरस
रस लहत अवगाहि न जाहि;
सुहृद संमित अस्मृतादिक बहु
भावन कहब तीस दिन ताहि।
कान्ता संमित काव्य पुरानै जुवति
सकल यक रसिक राज हरि;
बालमीक आदिक कबि सिंहनि
कहि तीस दिन भावन रसभरि ॥"

'काव्य' के समग्र व्यक्तित्व का निरूपण ग्रन्थकार ने एक रम्य रूपक के माध्यम से यों किया है—

"सब्द तन गुनौ गुन भूषनौ
भूषिता नारि आलंब पीरा समाही।
कोकिला मोर पिक सोर को
अर्थ तन सूक्ष्म उद्दीप बन फूल जाही।
दिसा दिसि दसौ सतवास कादंब की
झूलिये झूलना तास पाही।
व्यंग जिमि जीव रस मूल वीभावत्वै
होत श्रृंगार मृदु हास माही।"

इसके अनुसार शब्द काव्य का स्थूल और अर्थ सूक्ष्म शरीर है। माधुर्यादि गुण ही गुणालंकार हैं। व्यंग्य काव्य का प्राण तत्व है, जो रसमूलक अर्थात् रस ध्वनि है और रस का प्रमुख आधार विभाव है। यहाँ ग्रन्थकार ने 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' की परम्परा का आश्रय लिया है। रस निरूपण के सन्दर्भ में 'काव्य कल्पद्रुम'-कार ने विभिन्न रसों, उनके विभावों, अनुभावों और संचारी भावों का भी विशद वर्णन किया है। स्थानाभाववश उनके उदाहरण यहाँ नहीं दिये जा रहे हैं।

मम्मटीय परम्परा का अनुगमन करते हुए ग्रन्थकार ने विभिन्न शब्द दोषों, अर्थ दोषों और वाक्य दोषों के उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं।

ग्रन्थ की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि उदाहरणों की प्रस्तुति में किसी एक ही छन्द की पौनः पुन्येन आवृत्ति नहीं की गयी है । जिन छन्दों का आश्रय लिया गया है, उनमें सालूर, सुधाधर, मोदक, मुक्तक दाम, शिखरिणी, भुजंग प्रयात, बिम्ब, हलमुख, सेनका, तिलका, मल्लिका, चचला, चतुरसा, सम्मोहा, अमृतगति, अनुष्टुप्, चंचरीक, नील चक्र, स्रग्धरा, शंभु, वाम, चकोर, मनहरण, किरीट, सुखदा, छप्पय, मदनहरा, मोहिनी, पद्मावती, दण्डकला, हरिगीतिका, नाराच, जलधरमाला, विष्णुपद, प्रियंवदा इत्यादि प्रमुख हैं ।

ग्रन्थ के अन्त में पूर्ववर्ती और समसामयिक कवियों की एक दीर्घ नाममाला दी गयी है, जिसके सुमेरुरूप में गोस्वामी तुलसी दास प्रतिष्ठापित है; जो उचित ही है ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 'काव्य-कल्पद्रुम' बाबा बैजनाथ जी की समर्थ लेखनी से प्रसूत काव्य शास्त्र विषयक अत्यन्त प्रौढ़ और उत्कृष्ट ग्रन्थ है । यह उनकी भावयित्री प्रतिभा के साथ ही कारयित्री सामर्थ्य का भी निदर्शन है । इसके सागोपांग अनुशीलन से काव्य के विभिन्न उपादान तत्वों के अन्तरंग का सम्यक् रीति से उन्मीलन हो जाता है । यह ग्रन्थ अपने नामकरण की सार्थकता को सर्वथा उद्द्योतित कर देता है । जैसे कल्पवृक्ष अपने सान्निध्य सेवी को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चार पुरुषार्थों को प्रदान कर देता है, उसी प्रकार 'काव्य-कल्पद्रुम' भी छन्द, अलंकार, नायिका भेद और लक्षणादि ज्ञानरूपी चतुर्विध फल अपने अध्येता को सुलभ कराने में पूर्णतया सक्षम है ।

"मानस-रामायण कुल रामचरित को रोजनामा तहाँ गोसाईं जी के अपर ग्रन्थ सो सब खाता स्थाने है यथा-कीरति, माधुर्यलीला को खाता गीतावली है, प्रताप, ऐश्वर्य लीला को खाता कवितावली है, गुणन को खाता विनयपत्रिका है, नीति-कर्म-ज्ञान-भक्ति को खाता रामसतसई है, चरितन को सूची पत्र छन्दावली है, विरुदावली को खाता छप्पय रामायण है, शोभा को खाता बरवै रामायण है, वैराग्य को खाता वैराग्य सन्दीपनी है, चातुर्यता को खाता अंकावली है, मंगल को खाता जानकी-मंगल है, रक्षा हेतु हनुमान बाहुक है, प्रश्न हेतु राम शलाका है, सतसई ते कछु दोहा लै के दोहावली है, कुण्डलिया रामायण इत्यादि सब मानस के अंग हैं; ताते यह ग्रन्थ अगाध है ।"

—'रामचरितमानस-टीका' की भूमिका से

सन्तकवि बैजनाथ कुर्मी की काव्य-भाषा

—डॉ० भगवान वत्स

वैष्णव सन्त बैजनाथ की साहित्यिक मेधा का उन्मेष - काल १९वीं शताब्दी का तृतीय चरण है और उनका कर्तृत्व - काल चतुर्थ चरण के अन्तिम वर्षों तक परिव्याप्त है; यही समय हिन्दी साहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियों के उन्मेष का भी है। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की मासिक पत्रिका 'कवि वचन सुधा' के प्रकाशन वर्ष १८६८ से 'सरस्वती' के प्रकाशन वर्ष १९०० के मध्य की अवधि को हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का प्रथमोत्थान अथवा 'भारतेन्दु युग' कहा जाता है। इस युग में काव्य - वर्ण्य की भाँति ही काव्य - शिल्प पर भी परिवर्तमान परिवेश का प्रचुर प्रभाव पड़ा। प्रथमोत्थान के कवियों में काव्य - रूप, भाषिक - चेतना अलंकरण - प्रवृत्ति तथा छन्द - विधान की दृष्टि से प्रयोग धर्मिता परिलक्षित होती है। यद्यपि इस समय तक स्थापित काव्य - भाषा, ब्रजभाषा ही थी परन्तु खड़ी बोली भी शनैः शनैः काव्य जगत् में प्रवेश कर रही थी। भारतेन्दु जी सहित उनके अनेक सहयोगी कवियों ने भी खड़ी बोली में काव्य - सृजन किया। खड़ी बोली कविता में व्यावहारिक पक्ष अधिक प्रबल था, अस्तु ब्रजभाषा के कवि भी अन्य भाषाओं से शब्द - चयन में उत्तरोत्तर उदार होते गये। इसी के परिणामस्वरूप उनकी रचनाओं मे बुन्देली, अवधी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी आदि क्षेत्रीय भाषाओं के अतिरिक्त सत्ता - संरक्षित उर्दू तथा अँगरेजी के भी शब्द प्रवेश पाते गये।

अवधी भाषा का क्षेत्र किंचित् उत्तर - पूर्व हटकर हिन्दी भाषी क्षेत्र के लगभग मध्य स्थित है। डॉ० बाबूराम सक्सेना ने अवधी भाषा के तीन विभाग किये हैं। उनकी मध्य अवधी का केन्द्र बाराबंकी - जनपद है। जिसकी बोली अवधी भाषा का नाभिक (न्यूक्लियस) बनाती है। इसी जनपद के एक सम्पन्न ग्राम मानपुर को 'रसिक लताश्रित कल्पद्रुम सियवल्लभ - शरणागत भक्तशिरोमणि श्री बैजनाथ जी की जन्मभूमि और कर्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। व्यावहारिक एवं साहित्यिक अवधी का रिक्थ उन्हें जन्म से ही प्राप्त है। भारतेन्दु युग के अन्तिम ही नहीं वरन् द्विवेदी युग के प्रारम्भिक वर्षों तक साहित्यिक ब्रजभाषा समग्र हिन्दी प्रदेश में काव्यभाषा के पद पर प्रतिष्ठित थी। काव्य जगत् में प्रतिष्ठित होने के लिए तत्कालीन कवियों को इस काव्य - भाषा का ज्ञानार्जन करना अनिवार्य सा था। बैजनाथ जी ने भी यह भाषा अर्जित की। कोई भी सतर्क साहित्यकार युगीन गतिविधियों से नितान्त निरपेक्ष नहीं रह सकता। स्वयं भारतेन्दु जी सहित उनके अनेक सहयोगी कवियों ने ब्रजभाषा के साथ ही साथ खड़ी बोली को भी

अपनी काव्य-भाषा बनाया था। बैजनाथ जी पर भी इस का प्रभाव पड़ा था। परिणामस्वरूप उनकी पद-रचना तथा वाक्य-विन्यास खड़ी बोली-व्याकरण की दिशा में अग्रसर हुए। विद्या-व्यसनी सन्त ने अपनी साधना की सिद्धि के लिए संस्कृत भाषा और साहित्य का अतल अवगाहन किया था। उनकी संस्कृत ग्रन्थों पर टीकाएँ तथा मौलिक रचनाएँ इसका प्रमाण हैं ! इस सबका परिणाम यह हुआ कि गद्य एवं पद्य की ब्रज एवं अवधी अथच ब्रजावधी तत्सम प्रधान हो गई।

बैजनाथ जी की गद्य रचनाएँ समग्र तुलसी-साहित्य एवं वाल्मीकि रामायण की टीकाओं के रूप में हैं। इनकी भाषा कथावाचकों की-सी ब्रजभाषा है, जो तत्सम प्रधान है और सायास प्रतीत होती है। पद्य की भाषा संस्कृतनिष्ठ स्वाभाविक काव्य-भाषा है, जो भावों एवं छन्दों की प्रकृति के अनुहार कोमल-कठोर होती चलती है।

किसी साहित्यकार की भाषा के विवेचन की दो दृष्टियाँ होती हैं— साहित्यिक तथा भाषिक। साहित्यिक दृष्टिकोण से भाषा-विवेचन में प्रयोग वैशिष्ट्य अथच विवचन के परिणामस्वरूप उद्भूत भावाभिव्यंजक भाषा सौष्ठव का आकलन-उन्मीलन किया जाता है। भाषिक दृष्टि की विवेचना के अन्तर्गत रचनाकार की भाषा की ध्वनि-संयोजना, शब्द प्रयोग, एवं वाक्य-गठन आदि का अध्ययन किया जाता है। इस लघु प्रयास में बैजनाथ जी की काव्य-भाषा का भाषिक विवेचन ही हमारा अभिप्रेत है।

ध्वनि-संयोजना — बैजनाथ जी की काव्य-भाषा में, विदेशी आगत ध्वनियों को छोड़कर परिनिष्ठित हिन्दी की सभी ध्वनियाँ उपलब्ध होती हैं।

स्वर ध्वनियाँ — ए, ओ के ह्रस्व रूपों तथा ऐ, औ के सन्ध्यक्षरीय विकल्पों अ इ, अ उ सहित सभी स्वर निरनुनासिक जथा सानुनासिक उच्चारणों में प्रयुक्त है। लिखित रूप में ऋ का भी प्रयोग उपलब्ध है यद्यपि इसका उच्चारण 'रि' से भिन्न नहीं रहा होगा।

निरनुनासिक	सानुनासिक	उदाहरण
अ	अँ	आनँद, विहँसि, अँजुरी
आ	आँ	इहाँ, बाँदर, आँखि
इ	इँ	नहिँ, पहिँ
ई	ईँ	गईँ, भईँ, नहीँ
उ	उँ	पाउँ, कहुँ, चहुँ, तिहुँ
ऊ	ऊँ	ऊँच, मूँज, गूँजत
एँ (ह्रस्व)	एँ	जेँउँ, तेउँ

ए	एँ	एँडी, मेँ, भेँट, सतयेँ, फेँट
ऐ	ऐँ	हमैँ, सुगन्धैँ, अलकैँ, पलकैँ
ऐ (अइ)	ऐँ (अइँ)	ऐँचत, खैँचत
ओ	औँ	क्योँ (कै ओँ) ज्यों (जै ओँ) त्योँ (तै ओँ)
ओ	ओँ	सोँ, मोँ कोँ,
औ	औँ	औँधा, भौँ, कौँधा
औ (अउ)	औँ (अउँ)	कौशल्या, पाँचौ, चौँकी.

व्यजन —

सामान्यत: परिनिष्ठित हिन्दी के सभी व्यंजन बैजनाथ जीं की भाषा में प्रयुक्त हुए हैं ।

य. व, श, के ज, ब, स में परिवर्तित होने के उदाहरण भी उपलब्ध होते हैं । मूर्द्धन्य ष का उच्चारण श, स तथा ख हो जाता है । लिखित रूप में भी ख मिल जाता है ।

य > ज जपत जग जजाति जाप उत्तम भे नहुष आप,
उदित भूमि ते प्रताप देव लोक आये हैं ।

व > ब चैत शुक्ल नवमी पावन दिन, नटत प्रबीनी गान कला की ।
रुचिर विमान देव मुनि गन्ध्रब, गावत समय सो रागन में ।
दुंदुभि जय धुनि देव फूल झरि, ब्योम बिमानन राजत री ।

ष > स पाय दान महिदेव अशीसत अचल राज शिरताज ।

ष > ख सुखमा सदन वदन आनँद निधि, जननी निरखि जात बलिहारी ।

स > श तुम अहो वंश शिरताजा ।

समस्त उद्धरण लेखक को उपलब्ध पुस्तक 'सियाराम संयोग पदावली' से ही संकलित हैं ।

शब्द - प्रयोग —

बैजनाथ जी तत्सम शब्दावली के आग्रही हैं । परन्तु लोक छन्दों के प्रयोग एवं लोकाचार के वर्णनों में सुष्ठु तद्भव शब्दावली उन्हें विशेष प्रिय है । अर्द्ध तत्सम शब्दों की राशि कम नहीं है । इनके प्रयोग में मध्य स्वरागम के द्वारा व्यंजन गुच्छ टूट जाते हैं । वैष्णव सन्त को भाषा - प्रवाह में आए विदेशी शब्दों से भी परहेज नहीं है । यथा– जरी, जहाज, कतल, फील, सदके बकशीश, मौला, जवाहिरात, जेवर आदि । इतना ही नहीं– दुस्तर, फज्ल,

फरजन्द, हलाकी और रुक्म जैसे अप्रचलित शब्दों को भी प्रवेश दिया है ।

वाक्य गठन

पद्य में वाक्य गठन असामान्य हो जाता है । बैजनाथ जी के वाक्यों वाक्यों के गद्य कारण की आवश्यकता नहीं पड़ती । यथा—

राघव गोद खेलावत रानी ।
आजु गई सखि राजमहल में, देखि रूप बिन मोल बिकानी ।।
पूरण शरद चन्द आनन में, कजरारी अँखियाँ छवि खानी ।
करुणा दया कृपा रस पूरण, रंजन सन्त लोक सुखदानी ।।
पीत झीन झंगुली बिच तन की, दरशत श्याम प्रभा तेहि छानी ।
मानहुँ नील सजल घन ऊपर, सुथिर चारु चपला लपटानी ।।
वरणत शेष शारदा शंकर, जातन छवि नहीं बरणि सिरानी ।
बैजनाथ तेहि कौन बखानै, नैन समेत थकित मन बानी ।।

बैजनाथ जी का काव्य रचना-काल ब्रजभाषा और खड़ी बोली काव्य भाषा का संक्रान्ति काल था । उसके लक्षण भी इनकी रचनाओं में स्पष्ट परिलक्षित होते हैं । १९वीं शती के अन्तिम चरण में पूरे देश में सांस्कृतिक जागरण की लहर दौड़ चुकी थी । भारतेन्दु युग के साहित्य दर्पण में वह पूर्णतया प्रतिबिम्बित है । उस समय हिन्दी भाषा के दो छोर दिखते हैं— राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द तथा राजा लक्ष्मणप्रसाद सिंह । रामभक्त कवि बैजनाथ जी संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के पक्ष धर राजा लक्ष्मणप्रसाद सिंह के छोर पर खड़े प्रतीत होते हैं ।

❋

भजु मिथिलेश लली रघुलालन ।
सुलभ लोक उद्धार हेतु ज्यहि तजि ऐश्वर्य भये महिपालन ।।
सुखद मातु पितु प्रजा सपरिजन पुरजन वृद्ध युत्रा अरु बालन ।
सह समाज ऋषिराज सुखी करि राखि सुयश कियो खलघालन ।।
ऋषि तियतारि धारि मिथिला पगनखत से अस्त किये नृप जालन ।
उदित दिनेश भागि चिंता निशि तम सम सघन कीन धनुदालन ।।
केवट कोल गीध शबरी कपि करि पुनीत सुख देत कँगालन ।
महि मुनि नर सुर साधु सुखी किये सकुल ससेन खण्डि दशभालन ।।
प्रजा पाल शुभ धर्म नीति रत सुजन सुखद दुखदानि करालन ।
'बैजनाथ' त्यहि शरण अभय गहु पावन स्वामि प्रणत प्रतिपालन ।।

— 'बरवै-रामायण' टीका से

साहित्य - मनीषी बैजनाथ
के जन्म ग्राम - मानपुर की तीर्थयात्रा

– अजय सिंह

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से ४२ कि० मी० पूर्व और जिला मुख्यालय - बाराबंकी के सतरिख नाके से मात्र ११ कि० मी० दूर दक्षिण पूर्व दिशा में स्थित गाँव - मानपुर डेहवा । राम कथा साहित्य के महान भाष्यकार सन्त कवि बैजनाथ की जन्मभूमि तथा साहित्य साधनाभूमि होने के कारण अवध क्षेत्र में साहित्यतीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है ।

सन्तकवि बैजनाथ की प्रामाणिक जीवनी संकलन और साहित्य साधना भूमि के दर्शन की इच्छा मुझे सतरिख नाके पर स्थित साकेत मिष्ठान भंडार के मालिक श्री राम प्रताप सिंह से मिलने को विवश कर देती है । अस्तु, सत्यप्रेमी नगर निवासी अपने स्नेही सुहृद भाई ओम प्रकाश सिंह के साथ मैं संतकवि बैजनाथ के वंशज श्री राम प्रताप सिंह से मिलने पहुँच जाता हूँ । सत्कार प्रिय मृदुभाषी श्री राम प्रताप सिंह जी मेरी इच्छा जानकर अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक कहते हैं – ठीक है, आप जब भी चलना चाहें; मैं आपके साथ चला चलूंगा । आज तो देर हो गयी है, फिर किसी दिन चला जाये, तो ठीक रहेगा । पानी बूँदी, बरसात का मौसम है, कुछ रास्ता कच्चा है; पानी कीचड़ भरा होने से दिन ही दिन में जाकर वापस लौटने में सुविधा रहेगी । कल रविवार भी है, यदि समय हो तो सबेरे ही आ जायें; कल ही चला जाये । ठीक है, कल सबेरे मैं आ जाऊँगा; और आपके साथ ही चला चलूगा । अच्छा, अब कल सबेरे फिर मुलाकात होगी । अनुमति दें, कहकर उनसे मैं विदा लेता हूँ ।

× × ×

२९ जून, १९८६ ई०; दिन - रविवार प्रातः ९-१५ बजे । पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मैं साकेत मिष्ठान भण्डार पहुँचता हूँ । भाई राम प्रताप सिंह जी अत्यन्त आत्मीयतापूर्वक स्वागत करते हुए कहते हैं – " मैं आप लोगों की राह ही देख रहा था और आप आ गये । अच्छा, अब थोड़ा मुँह मीठा कर लें, तो चला जाय " कहकर वे जलपान कराते हैं । दुकान की जिम्मेदारी अपने ज्येष्ठ पुत्र अवधेश को सौंपकर वे हमारे साथ सतरिख नाके से हैदरगढ़ जाने वाली सड़क पर स्कूटर से चल पड़ते हैं । आगे - आगे वे और उनके पीछे हम दोनों । लगभग ७ कि०मी० दूरी तय करते ही नानमऊ आ जाने पर सड़क की बायीं ओर जाने वाले कच्चे गलियारा सम्पर्क मार्ग (जो अब पक्की सड़क में

परिवर्तित हो गया है) की ओर स्कूटर मोड़ते हुए वे बोले " हमारा गाँव मानपुर यहाँ से मात्र ४ कि०मी० दूर है। टेढ़े-मेढ़े रास्ते में जगह-जगह ट्रैक्टर-ट्रालियों, बैल गाड़ियों के आने-जाने से बनी नालियों में भरे पानी-कीचड़ के फैलने से रपटीली जमीन पर अत्यन्त कुशलतापूर्वक स्कूटर चलाते हुए, उन्होंने कहा " यही हमारे गाँव का पुराना मार्ग है। इसी मार्ग से कभी बाबा बैजनाथ जी घोड़े पर सवार होकर लखनऊ जाया-आया करते थे। इसी रास्ते बड़े-बड़े विद्वान, महात्मा लोग गाँव में बाबा बैजनाथ जी से मिलने आया-जाया करते थे।" थोड़ी ही देर में लगभग ४ कि०मी० की दूरी तय होते ही सम्पर्क मार्ग की दाहिनी ओर बसा गाँव मानपुर आ जाता है।

× × ×

भारत के हजारों गाँवों में से एक गाँव-मानपुर। गाँव के पश्चिमोत्तर दिशा से निकलने वाले सम्पर्क मार्ग से गाँव के अन्दर की ओर जाने वाले गलियारे में निकास की सही व्यवस्था न होने के कारण पानी भरा रहता है, जिस में जानवरों की आवा-जाही से कीचड़ दूर तक फैला है; जिससे स्कूटर आदि वाहन अन्दर ले जाना कठिन है। गलियारे में भरे पानी से दूर तक फैले कीचड़ के किनारे-किनारे बनी पगडण्डी से बड़ी मुश्किल से गाँव के अन्दर पैदल जाया जा सकता है। स्कूटर गलियारे के किनारे बसे पण्डित बाबा श्री चन्द्रशेखर मिश्र के दरवाजे खड़े करके आगे-आगे श्री राम प्रताप सिंह उनके पीछे श्री ओम प्रकाश सिंह और सबसे पीछे मैं, चार-पाँच घर अगल-बगल छोड़ते हुए; आगे बढ़ते है, तो सामने एक बड़ा सहन-मैदान आ जाता है। इस मैदान में चलते हुए भाई राम प्रताप सिंह जी बोले— " भैया ! यही आपका द्वार है। इसी मैदान में प्रति वर्ष रामलीला होती है। इधर सब जनता बैठती है। सामने के पंचायती घर में मण्डप-मंच बनता है। आपके दाहिने हाथ की ओर बरामदा ठाकुरद्वारे की अतिथिशाला है, इसमें औरतें बैठकर रामलीला देखती हैं। अशोक के पेड़ों की पंक्ति जहाँ खत्म हो रही है, वहाँ कुआँ और शिवालय ठीक हमारे पुश्तैनी घर के सामने है, जिसका मुँह उत्तर की ओर है। इसी दुमंजिले पक्के घर में कभी बाबा बैजनाथ जी रहते थे। कुआँ और शिवालय से सटे बिजली के खम्भे से पश्चिम बेला, कनेर, गुड़हल, गुलाब और तुलसी के फूल-पौधों की क्यारियों से घिरा बाबा बैजनाथ जी का बनवाया ठाकुरद्वारा है। इस प्रकार की जानकारी देते हुए, वे हमें पूर्वाभिमुख ठाकुरद्वारे के मुख्य प्रवेश द्वार के बरामदे में ले जाकर बिठाते हैं। घर-परिवार के लोग इकट्ठा होने लगते हैं। थोड़ी ही देर में घर के अन्दर से जलपान के लिए मिष्ठान्न और चाय आती है, अत्यन्त स्नेहपूर्वक आग्रह के साथ वे जलपान कराते हैं।

इसी बीच सामान्य कद-काठी, भरे-पुरे स्वस्थ शरीर, गेहुँआ रंग, चौकोर चेहरा, गले में तुलसी-माला और सलूका-धोती पहने, सरलता और सादगी की प्रतिमूर्ति लगभग ८५ वर्षीय वयोवृद्ध 'पुजारी-बाबा' पधारते हैं। भाई श्री राम प्रताप सिंह जी उनका हम दोनों से परिचय कराते हुए बतलाते हैं कि 'आप हमारे पिता श्री रघुराज बहादुर जी हैं। आपको गाँव में सब 'पुजारी-बाबा' के नाम से पुकारते हैं। हम दोनो उन्हें प्रणाम करते है। वे आशीर्वाद देते हुए 'बड़ी भाग जो आप पधारे' कहकर स्वागत करते हैं। अब तक गाँव घर के बड़े बूढ़े लोग इकट्ठा हो जाते हैं, जिनमें पण्डित चन्द्रशेखर तिवारी, अवध विहारी शरण, जगदम्बा शरण, रघुनाथ प्रसाद आदि प्रमुख हैं।

भाई राम प्रताप सिंह के निर्देशानुसार जूता-चप्पल उतारकर हाथ-पैर धोकर हम ठाकुरद्वारे के अन्दर प्रवेश करते हैं। बाहरी बरामदे के पश्चात् कमरे को पार कर आँगन में पहुँचने पर सबसे पहले सामने के कमरे-बरामदे में सिंहासन पर विराजमान भगवान राम जानकी के दर्शन होते हैं, मैं दूर से ही हाथ जोडकर प्रणाम करता हूँ। अगल-बगल निगाह डालने पर आँगन में चारों ओर गमलों में लगे फूल-पौधों के बीच कुछ बड़े गमले में लगा 'तुलसी-वृक्ष' दिखाई पड़ता है। आँगन के बायीं ओर छोटा बरामदा और दाहिनी ओर भण्डार-कक्ष बन्द है। आँगन पार कर सिंहासन पर विराजमान भगवान राम-जानकी वाले बरामदे में पहुँचने पर निगाह छत की ओर ऊपर जाती है, तो झाड़-फानूसों से अलंकृत छत के बीच टंगा पंखा धीरे-धीरे चलता दिखायी देता है। बरामदे की दीवारों पर लगे धार्मिक चित्रों के बीच गोस्वामी तुलसी दास, सन्त फकीरे राम, सन्तकवि बैजनाथ और त्यागमूर्ति रामदत्त जी के तैल चित्रों पर घूमती हुई दृष्टि सामने की दीवाल पर लगी दीवाल-घड़ी पर आकर क्षण भर के लिए ठहर जाती है, जिसमें इस समय १०.३० बजने वाले है। सिंहासन पर बिराजमान भगवान राम-जानकी के सामने मोजेक की रंग-बिरंगी फर्श पर चटाई बिछी है। एक कोने में छोटी चौकी पर बिछी सफेद बिछावन पर सन्त कवि बैजनाथ की चरण-पादुका रखी है। इसी के ठीक ऊपर खूंटी पर उनकी १००८ मनकों की तुलसी माला टंगी है। सिंहासन के पृष्ठ भाग में स्थित कमरे के खुले दरवाजे से कमरे के अन्दर रखी लोहे की अलमारियों में करीने से लगी मोटी-मोटी पुस्तकें दिखाई पड़ती है।

अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सिंहासन पर विराजमान भगवान राम-जानकी को प्रणाम कर सिंहासन के सामने बिछी चटाई पर हम दोनों बैठ जाते हैं। चटाई से थोड़ा हटकर बिछी कुशासनी पर बैठकर ठाकुरद्वारा मन्दिर के वर्तमान पुजारी 'पुजारी-बाबा' श्री रघुराज बहादुर वर्मा थोड़ी देर के लिए आँखे बन्द कर

ध्यानस्थ हो जाते हैं । धूप-दीप और अगरबत्ती की सुगन्ध से सुवासित; अलौकिक शान्ति और दिव्य आनन्द की अनुभूति से परिपूरित किसी तीर्थ स्थल सा सात्विक वातावरण का सम्मोहन बरबस मन को मोह लेता है ।

थोड़ी देर के पश्चात 'पुजारी-बाबा' श्री रघुराज बहादुर वर्मा बोले– 'ठाकुर भैया ! आप का - का जाना चाहति हो; हम का - का आपका बताई ? पुजारी-बाबा के चुप हो जाने पर मैंने कहा— साहित्य-मनीषी बाबा बैजनाथ जी के विषय में आप जो कुछ जानते हैं, कृपा करके सब बताने का कष्ट करें । पुरानी यादों में खोते हुए 'पुजारी-बाबा' ने बताया कि– "बाबा बैजनाथ जी हमरे परबाबा रहैं । हम उनका देखा नही है, मुला जो अपने बाबा श्री जानकी प्रसाद जी औ छोटे बाबा श्री रामलाल जी से सुना है, ऊ सब आपका बताइत है । हमरे परबाबा बैजनाथ जी अपने पिता श्री हीरानन्द जी की १४वीं सन्तान रहैं । १३ सन्तानै छुटपनै माँ जात रहीं; ई से हमरे परबाबा बैजनाथ जी के पिता श्री हीरानन्द जी औ माता भगवती देवी बहुत दुखी रहत रहैं । घर माँ नम्बरदारी-जमीदारी, घोड़ा-गाड़ी, जमीन-जायदाद, रुपया-पैसा सब सुख - साधन होत भये सन्तान बिना दुखी रहैं । तब्बै कौनउ सन्त कै सलाह पै बैजनाथ धाम कै जात्रा किहिन, लौटि कै भण्डारा किहिन औ यू शिवाला बनवाइन । वही साल माँ भगवान की किरपा से हमरे परबाबा बैजनाथ जी आश्विन पूर्णिमा; वि० सम्बत् १८९० का पैदा भये, तौ घर-परिवार माँ खुसियाली छाय गयी । खूब दान दक्षिणा दीन्ह गवा । बादि माँ उनका नाँव बैजनाथ रखा गवा ।

हमरे परबाबा बैजनाथ जी कै पढ़ाई-लिखाई छुटपनै ते हमरे परिवारी पाटमऊ के जमींदार श्री फकीरे राम जी के इहाँ भई । वि० स० १८९८ उइ अयोध्या जी के सन्त वैष्णव दास जी पाटमऊ पधारे, तौ उनते हमरे परबाबा बैजनाथ जी के गुरू श्री फकीरे राम जी गुरु मंत्र लै लीन्हिन । ऊ के बादि माँ आठ बरस तक गाँवैं माँ रहिकै राम - भजन करति रहे औ हमरे परबाबा बैजनाथ जी उनसे पढ़ति रहें । बादि माँ गुरू फकीरे राम जी वि० सम्वत् १९०६ के फागुन महिना माँ जमींदारी कै सारी जिम्मेदारी अपने छोटे भाई मक्का राम जी का सौंपिकै अयोध्या जी चले गे औ हुँवैं रहै लगे ।

गुरू फकीरे राम जी अयोध्या जाय के पहिले हमरे परबाबा बैजनाथ जी कै विवाह सिरौली कलाँ गांव के चौधरी देवतादीन की छुटकी लड़की गौरा देवी के साथ कराय दिहिन रहै । हमरे परबाबा का रंग साँवर रहै, मुला हमरी परदादी खूब गोरी रहैं । दूनौं जनन ते दुइ लरिका भये एक हमरे बाबा जानकी प्रसाद जी और दूसरि छोटे बाबा रामलाल जी ।

गुरू फकीरे राम जी के अयोध्या चले जाये के दुइ सालि के बाद हमरे

परबाबा बैजनाथ जी अयोध्या चले गये । ज्यादातर समय अयोध्या माँ गुजारी औ कब्बौ-कब्बौ घर-परिवार माँ आवा-जावा करैं । हमरे परबाबा बैजनाथ जी कै गुरु-मंदिर श्री सियपिय केलि-कुंज, राम कोट मुहल्ले माँ अयोध्या माँ है । जबै ई मन्दिर कै निर्माण शुरू भवा, तबै ज्यादा समय तक हमरे परबाबा हुवाँ रहे । यू मन्दिर श्री राम जन्मभूमि मन्दिर के नजदीकै है ।

वि० सं० १६१४ माँ बैजनाथ जी के पिता हीरानन्द जी का स्वर्गवास हुइ गवा; तब ते हमरे परबाबा बैजनाथ गुरू फकीरे राम जी की आज्ञा पाय हियाँ मानपुर गाँव माँ आय कै रहै लगे । घर-परिवार-जमींदारी का देखैं के साथ-साथ भगवान-भजन करति रहे । वि० सम्बत् १९१७ माँ ठाकुरद्वारा बनवाउब शुरू किहिन और वि०स० १६१८ माँ ऊ माँ भगवान राम-जानकी पधराइन, औ तबै राम लीला करवाउब सुरू किहिन । तबै से राम-लीला हमरे हियाँ हर साल पौष शुक्ल ३, ४, ५ का कीनि जाति है । राम-लीला माँ हमरे परबाबा बैजनाथ जी मुनि बशिष्ठ का पाठौ करति रहैं ।

भगवान राम-जानकी ठाकुर जी की सेवा, पढ़ै-लिखै औ भगवान भजनै माँ उनका सबिहौं समय कटति रहै । हमरे परबाबा बैजनाथ जी गावै-बजावै, चित्र बनावै औ कथा बाँचै माँ प्रसिद्ध रहैं । गुरू फकीरे राम जी की कृपा ते पाये ज्ञान ते गोस्वामी तुलसीदास जी की लिखी सबिहौं किताबैं उइ इकटठा कीहिन औ उनकी सबकी टीका लिखिन । भगवान वेदव्यास कै लिखी अध्यात्म-रामायण कै टीका लिखिन । ई के अलावा सियाराम सँयोग पदावली, भगवान राम कै नख शिख वर्णन, षड्-ऋतु वर्णन, काव्य-कल्पद्रुम, लीला-प्रबन्ध आदि अपनी नई किताबैं रचिन । ई सब किताबैं मुंशी नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से छपी रहीं ।

हमरे परबाबा बैजनाथ जी घर-जमींदारी देखत-भालत रहे औ हर दुसरे तिसरे महिना माँ अयोध्या जी जात रहे । गुरु फकीरे राम जी का अपनी सब किताबैं लिखि-लिखि देखावत रहैं । बुढ़ौती माँ गुरु फकीरे राम जी जब नहीं देख पावत रहैं, तब उनका बाँचि कै सुनावति रहैं । अयोध्या माँ संतन माँ हमरे परबाबा बैजनाथ जी गोस्वामी तुलसीदास जी के अवतार माने जात रहैं । विक्रमी सम्बत् १९५० की पौष बदी ६ का गुरू फकीरे राम जी का १०५ बरस की उमिर माँ स्वर्गवास हुइ गवा, हमरे परबाबा का बडा दुख भवा; तब से उइ एकै समय भोजन करै लगे । ई के दुइ साल बाद हमरे परबाबा बैजनाथ के मित्र औ किताबन के छपैया मुंशी नवल किशोर का १९ फरवरी, १८६५ ई० माँ स्वर्गवास हुइ गवा, ई तरह हमरे परबाबा पर एक के बाद एक दुख कै मानो पहाड़ टूटि परे ।

हमरे परबाबा बैजनाथ जी महर्षि वाल्मीकि कै लिखी रामायण कै टीका करि रहे रहैं कि तबै दतिया (म०प्र०) के राजा के बुलाये पर हमरे छोटे बाबा रामलाल जी औ दुइ जने नौकर-चाकर के साथ उइ दतिया चले गये। हमरे परबाबा बैजनाथ जी का ज्योतिष औ रमल शास्त्रउ का बड़ा ज्ञान रहे, उइ चोरी चली गयी चीज औ जमीन माँ गड़ी जयदाद का पता बताय देत रहैं । यही बदे चोरी गयी चीज का जानै खातिर उनका राजा बुलवाइन रहैं, तौ उइ गे रहैं । हुवैं उनका दूध माँ जहर दै दीन गवा । जहर देवैया का उइ जान गे मुला ऊका कोउक बताइन नाहीं औ ऊसे कहूँ दूरि देश चले जाइ का कहि दीन्हिन । ऊ भागि जाय औ ऊ की जानि बचि जाय ई बदे ऊका उइ रुपयव दीन्हिन । आपन अन्त बखत जानि कै हमरे छोटे बाबा रामलाल जी का बुलाय कै यू रहस कोई से न बतावै का कसम लीन्हिन औ वाल्मीक रामायण कै अधूरी टीका पूरी करै का कहिन । ई तरह हमरे परबाबा बैजनाथ जी बैशाख शुक्ल ७, वि० सम्वत् १९५४ दिन-रविवार, सायंकाल ४ बजे चलि बसे । हुवैं उनका दाह-संस्कार निबटाय के हमरे छोटे बाबा रामलाल जी घर लौटे तौ घर माँ हाहाकार मचि गवा ।

हमरे परबाबा बैजनाथ कै देश के बड़े-बड़े विद्वानन माँ गिनती होति रहै । उनका उइ जमाने के विद्वानन कै बड़ी पदवी 'महामहोपाध्याय' मिली रहै उनके समय माँ ई धरती पर देश के बड़े विद्वान औ सन्त आवा-जावा करति रहैं । हमरे परबाबा बैजनाथ के न रहे पर हमरे बाबा जानकी प्रसाद जी और छोटे बाबा रामलाल जी ठाकुरद्वारा माँ विराजमान ठाकुर जी कै पूजा-अर्चा करति रहे औ रामलीला करवावति रहे । हमरे परबाबा बैजनाथ जो बाल्मीकि रामायण कै, जौन सुन्दर काण्ड तक अधूरी टीका छोड़िकै चलि बसे रहैं ऊ का बादि माँ छोटे बाबा रामलाल जी पूरा किहिन । छोटे बाबा रामलाल जी भी कवितई किहिन औ हमरे पिता रामदत्तौ जी कबितई करति रहे । हमरे परिवार माँ तीनि पीढ़ी ले सरस्वती औ लक्ष्मी दूनौ की कृपा बनी रही ।

हमरे बाबा जानकी प्रसाद जी औ छोटे बाबा रामलाल जी के न रहे पर हमरे पिता रामदत्त जी औ दादू राम रतन जी घर-बार सम्हालिन औ उइ ई ठाकुर जो कै पूजा-अर्चा करति रहे । भगवान राम-जानकी कै पूजा उनके पाछे सदा विधिपूर्वक होति रहै यू बिचार कै दूनौ बाबा जने बाराबंकी कचेहरी माँ जायकै १२ सित०, १९३३ ई० का ठाकुरद्वारा माँ बिराजमान भगवान राम-जानकी के नाम पुख्ता २१ बीघा १६ बिस्वा १७ बिस्वांसी जमीन, मकान, हाता, फुलवारी, ठाकुरद्वारा सहित ४ बैल और २ भैंस वक्फ कै दिहिन औ ऊ की रजिस्टरी कै दिहिन । परिवार का कोई योग्य मुखिया ई वक्फ कै मुतवल्ली होति रहै औ ई जमीन-जोयदाद की आमदनी से आगे सदा ठाकुर जी कै पूजा-पाठ

शृंगार, बाल-भोग, उत्सव आदि होति रहैं, यही लिखि दीन्हिन। दादू रामरतन जी औ पिता रामदत्त जी के चलि बसे के बाद से ठाकुर जी की सेवा पूजा-पाठ अब हमहे करिति है।, इतना बतलाकर पुजारी बाबा रघुराज बहादुर चुप हो जाते हैं। थोड़ी देर चुप रहने के बाद वे कनिष्ठ पुत्र राम प्रताप सिंह को सम्बोधित कर कहते हैं "प्रताप! अब तुम ठाकुर भैय्या का बाबा बैजनाथ की लिखी किताबें लाइकै देखाव।" भाई राम प्रताप सिंह सिंहासन पर विराजमान भगवान राम-जानकी के पीछे सटे कमरे में रखी आलमारी से बाबा बैजनाथ की लिखी किताबें लाकर सामने ढेर कर देते हैं।

एक आदमी आसानी से जिन पुस्तकों के वजन को न उठा सके, इतना बाबा बैजनाथ लिखित प्रकाशित-अप्रकाशित साहित्य अपनी आँखों के सामने देख कर जिस एक व्यक्ति ने इतना साहित्य लिखा, वह कैसा रहा होगा! यह विचार कर क्षण भर के लिए मै कल्पना लोक में खो जाता हूँ; फिर एक-एक ग्रन्थ को उठाकर सरसरी दृष्टि से देखता हुआ, सूची बनाकर एक ओर रखता जाता हूँ। जो ग्रन्थ मुझे देखने को मिले, वे निम्नलिखित हैं—

१	श्री सीताराम संयोग पदावली-मौलिक		प्रकाशित	जुलाई, १८८० ई०
२	कवितावली सटीक	तुलसी कृत	,,	अक्तूबर, १८८२ ई०
३	तुलसी-सतसई सटीक	,,	,,	अप्रैल, १८८६ ई०
४	गीतावली सटीक	,,	,,	जनवरी, १८८९ ई०
५	(अ) रामचरित मानस सटीक	,,	,,	जनवरी, १८९० ई०
	(ब) रामचरित मानस सटीक	,,	,,	मई, १८९० ई०
६	बिनय-पत्रिका सटीक	,,	,,	अप्रैल, १८९१ ई०
७	छन्दावली-रामायण सटीक	,,	,,	मई, १८९१ ई०
८	छुप्पय-रामायण सटीक	,,	,,	मई, १८९१ ई०
९	बरवै-रामायण सटीक	,,	,,	मई, १८९१ ई०
१०	वैराग्य-सन्दीपनी सटीक	,,	,,	अक्तूबर, १८९१ ई०
११	जानकी-मंगल सटीक	,,	,,	नवम्बर, १८९१ ई०
१२	रामलला नहछुर	,,	,,	नवम्बर, १८९१ ई०
१३	श्री सीताराम पावस विलास-मौलिक		,,	नवम्बर, १८९१ ई०
१४	हनुमान-बाहुक सटीक	तुलसी कृत	,,	दिसम्बर, १८९१ ई०

१५	हनुमन्नाष्टक सटीक	तुलसीकृत	प्रकाशित	दिसम्बर, १८९१ ई०
१६	कुण्डलिया-रामायण सटीक	,,	,,	जनवरी, १८९२ ई०
१७	श्री रामाज्ञा-प्रश्न सटीक	,,	,,	मार्च, १८९२ ई०
१८	श्री राम नाम कलामणि कोष मंजूषा सटीक		,,	जुलाई, १८९४ ई०
१९	अध्यात्म-रामायण सटीक (वेदव्यास कृत)		,,	दिसम्बर, १८९४ ई०
२०	षडऋतु वर्णन	मौलिक	,,	दिसम्बर, १९०५ ई०
२१	नख-शिख वर्णन	मौलिक	,,	मई, १९१३ ई०

हस्तलिखित ग्रन्थ

२२	काव्य-कल्पद्रुम	मौलिक रचना वि० स० १९३५	प्रकाशित प्रति अप्राप्त
२३	बालमीकि-रामायण सटीक	महर्षि वाल्मीकि कृत	अप्रकाशित
२४	लीला-प्रबन्ध	मौलिक	हस्तलिखित क्षतिग्रस्त प्रति उपलब्ध

इन प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रन्थों के अतिरिक्त बाबा बैजनाथ के बनाये दो काष्ठ-फलक रंगीन चित्र, १००८ मनकों की तुलसी माला (जिससे वे प्रतिदिन नाम जपकर अन्न-जल ग्रहण करते थे) उनके हाथों से बुना गलीचा, उनकी प्रयोग की गई खड़ाऊँ इस ठाकुरद्वारे में सुरक्षित-सरक्षित सन्त कवि बैजनाथ के अन्य स्मृति चिह्न हैं, जिनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर मैं कृत कृत्य हो गया।

सन्तकवि बैजनाथ रचित साहित्य के अतिरिक्त अन्य समकालीन साहित्यकारों की बहुत सी हस्तलिखित पोथियाँ भी बस्ते में बँधी सुरक्षित रखी हैं, जिन को सन्तकवि बैजनाथ ने अपने अध्ययन-अनुशीलन के लिए सम्पूर्ण देश से एकत्र किया था। इस ठाकुरद्वारे में सुरक्षित साहित्य-सम्पदा का दर्शन सहज ही सहृदय को उल्लसित कर देने वाला है।

× × ×

दीवार-घड़ी १२.३० बजा रही है। ठाकुर जी को भोग-प्रसाद करा चुकने पर पुजारी बाबा रघुनाथ प्रसाद जी हम लोगों से भोजन-प्रसाद ग्रहण कर लेने के बाद फिर इत्मीनान से और लिखने-पढ़ने का आग्रह करते हैं। ठाकुर द्वारे के आँगन के बायीं ओर के बरामदे में बिछी चटाई पर हम लोगों को बिठाकर भाई राम प्रताप सिंह के बड़े भाई अवध बिहारी शरण जी भोजन परोसते हैं। जल परोसते हुए रघुनाथ प्रसाद जी बतलाते हैं कि "इसी बरामदे में बैठकर बाबा बैजनाथ जी कवौ कविता लिखति रहैं और सामने बिराजमान ठाकुर जी कै दर्शनो करा करति रहैं।" भाई अवध बिहारी शरण जी घी चुपड़ी रोटी, दो प्रकार की सब्जी, चावल-दाल और दही-बड़े थोड़ा-और, थोड़ा-और कह

कर थालियों में परोस कर भूख से अधिक स्नेह पूर्वक खिला देते हैं ।

भोजन-प्रसाद ग्रहण कर जब दुबारा बैठता हूँ, तो पहले बाबा बैजनाथ रचित प्रकाशित साहित्य का यत्र-तत्र अवलोकन करता हूँ; तदनन्तर हस्तलिखित साहित्य पोथियाँ देखना प्रारम्भ करता हूँ । सुन्दर, एकसार, चमकदार स्याही से लिखी समान अक्षरों की लिखावट से हस्तलिखित पोथियों के छपे होने का भ्रम उत्पन्न होता है । इन्हीं हस्तलिखित पोथियों में कुछ पुराने कागज-पत्र हाथ लगते हैं ।

× × ×

पत्र तो और भी रहे होंगे, पर इन्हें खोज पाना अब आसान नहीं । या तो जिन्होंने पाया, बेकार का सिर दर्द समझकर कूड़े दान में फेंक दिया, आग जलाने अथवा कूड़ा फेंकने के उपयोग में ले लिया या फिर घर के बाल-गोपालों के हाथ पड़कर नाव-नवैया बन गये । और यदि किसी सुकृती सुधी के हाथ पड़ गये; तो उसने गरीब के धन की भाँति छाती से चिपका कर रख-छिपा लिया या किसी को देने बताने की आवश्यकता न समझी और क्यों समझी जाय ! भले ही वे इनकी छाती से लगे-लगे पके फल की तरह डाल में ही लगे-लगे सड़ गल कर झर टपक जाँय; उनमें कितना साँस्कृतिक - सन्देश, कितनी चेतना थी, समय का संकेत था; इससे किसी को क्या !

इन पत्रों में से जिन ३ पत्रों को लिखने का लोभ नहीं संवरण कर पा रहा हूँ । उन में एक बाबा वैजनाथ जी द्वारा काशी निकटवर्ती भमुआ इखलास पुर निवासी किन्हीं चौधरी बैजनाथ सिंह को लिखा गया पत्र द्रष्टव्य है—

"सिद्धि श्री भगतपदारविंदलब्ध मधुव्रत शुभ गुनगनार्णव प० श्री चौधरी बजनाथ सिंह जी को लिखी वैजनाथ की सीताराम पहुँचै इहाँ सब प्रकार ते आनदु आपु की खुशी सदा चाहिए अगहन लागत आपु को पत्र आया रहै ताको जवाब आधे अगहन में हम लिखा सो आपु को नहीं पहुँचा तब ते महिना भरि देखि पत्र फिरि लिखा ताको जवाब माघ कृष्ण ११ को पहुँचा अवस्था ५२ वर्ष की दो पुत्र बड़े जानकी प्रसाद अवस्था ३१ वर्ष भाषा मात्र नागरी हिंदी पढ़े है शारकार इन्हीं के शीश है इनके दो पुत्र है बड़े रामरत्न १३ वर्ष के उर्दू नागरी मदरसा मे पढ़ते हैं हम सारस्वत प्रारंभ कराया है छोटे राम दत्त ९ वर्ष के नागरी पढ़ते हैं हमारे छोटे पुत्र राम लाल १९ वर्ष के सारस्वत पढ़ चुके उर्दू पास करि अँग्रेजी पढ़ते हैं गाँव में आमद ५०००) देना सरकारी २०००) तिहारा हीसा हमारा है कास्तकारी भी होती है ठाकुर की सेवा पूजा हमारा कार है छत्रिन की मर्याद कुनबी अकबर साह की दी पदवी कै न्याती कहावते है मर्याद सहित पार होती है इसी भाँति आपना हाल लिखो माघ शुक्ल ३ सम्वत् - १९४२"

(पत्र संख्या-१)

उर्पयुक्त पत्र से सन्तकवि बैजनाथ के परिवार की आर्थिक स्थिति, वंश-परम्परा और जीवनचर्या आदि का पता तो चलता ही है साथ ही साथ परिचित-अपरिचित किसी के भी पत्र का उत्तर देने की प्रवृत्ति भी प्रगट होती है।

इन्हीं साहित्यानुरागी चौ० बैजनाथ सिंह का सन्त कवि बैजनाथ को भेजा गया पत्र भी पढ़ने योग्य है— "श्री जानकी वल्लभो विजयते । सिद्धि श्री सर्वोत्तम गुण गणान्वित श्री जनकराजनन्दिनीवल्लभ पादारविन्दानुरागी श्री मद्-गोस्वामी तुलसी वान्यर्थ प्रकाशक सदा सेवकार्तिनाशक श्री ६ मद्‌बैजनाथ जी के पदकमलन विषे दीन दासानुदास बैजनाथ की साष्टांग प्रणाम । आपकी कृपाव-लोकन ते यहाँ सर्बदा कुशलानन्द है । श्री मैथलराज किशोरी की कृपादृष्टि सदा आपकी ऊपर सपरिवार बनी रहै जाते हम अधमन का जीवन धन है आगे बहुत काल ते कुशल पत्र की कृपा न भई ।। श्री मदध्यात्म रामायण पूर्ण भया वा नहीं, भया; तो छापे को गया वा अब जायगा वा कहाँ पर तिलक होत है कब तक होई सविस्तर बेगि लिखब वो हमरे देखै में तो श्री मद् गोस्वामी बानी में पार्वती मंगल वो श्रीराम लला नहछुर वो कृष्न गीतावली पर तिलक होब बाकी है सब भइल तौ उहो चाही परन्तु श्री जानकी मंगल पर जो तिलक भया है वह तो श्री तुलसीकृत से भिन्नै है एकौ पद नहीं मिलते और उस जानकी-मंगल और पार्वती मंगल से छन्द वो पद से सब मिलत है पूर्व में हमसे आप कहे रहे कि पार्वती मंगल हमारे पास नहीं है सो लिखा जाइ तो हम बेगि पार्वती मंगल बो जानकी मंगल वो राम लला नहछू भेजि देई देखिकै तिलक भी होइ जाय बो ई भी साफ ह्वै जाइ कि जानकी मंगल कवन ठीक है ।। वो अंकावली रामायण पर भी तिलक होब उचित है गँव पाई सब होना चाही इस महा दुर्घटकाल में परम आचार्य्य श्री किशोरी जू की कृपा पात्र हमन आपै को जानते हैं ताते यथाशक्ति परोपकारै वो अधमोद्धारणै मुख्य है ।। आगे लोग झूलन में गये रहे तो भइया जानकी प्रसाद जी द्वारा जान परा था कि आपकी इच्छा श्री काशी विश्वनाथ जी के दर्शन करते हम अधमन के कृतार्थ करवे का निश्चय दृढ़ हो चुका था पर दैवात् सिद्धि न भया ।। अब लिखते तो नहीं बनता क्योंकि कोई पर्व वा योग श्री काशी आगमन का नहीं है और भैया जानकी प्रसाद जी के बाक्य ते यहाँ दर्शन का उत्कठा बहुत से लोगन को जो पूर्व ही से थी और अधिक हो गई है तथापि वह श्री रायायणी पंडित जी जिन्ह ते श्री अवधपुर में भेंट भई थी यहाँ विराजमान और कथा हवै रही है बड़े महात्मा वो रामानुरागी वो अनन्योपाशक हैं और जिन-जिन को दर्शन का अभिलाषा है उनका कदापि सब लोगन का उहाँ तक पहुँचना दुर्घट है क्योंकि बहुत से लोग सरकारी नौकर हैं छुट्टी नही मिल सकती और श्रीराम विवाहोत्सव बो

धनुष यज्ञ जो नित्य आपके यहाँ होत है बहुत करीब है ताते विनय है कि आजकल सावकाश हो वो दिल बदे तो रामलीला बाद कृतार्थ किया जाय सब धन्य होहिं जो आवैं का इरादा होइ तो पूर्व ही कृपा पत्र द्वारा जनावल जाई वो श्री काशी जी होते जमनिया स्टेशन उतरि कै भभुआ इखलासपूर के नाम एक्का किया जायगा तो इखलासपूर दरवाजे पर उतारि देई आगे दूर कै बात है ताते संकोच होत है जौ दिल बदै तो आइल जाई नहीं तो कुछ प्रयोजन नहीं यहाँ फसिल अच्छा है अपना सविस्तर कुशलानंद सहित वेगि कृपा करव शुभ मार्ग कृष्न ९ ।।

भैया जानकी प्रसाद जी को सलाम श्री दूबे जी को प्रणाम ।। भाई रामलाल को राम रत्न वो रामदत्त वो दुवो बच्चन को आशीश श्री रामायणी पंडित जी का आशीर्वाद श्री रामचरण सिंह वो वृन्दावन सिंह वो जगन्नारायण का प्रणाम ।।" (पत्र सं०–२)

उपर्युक्त पत्र से साहित्य-मनीषी बैजनाथ जी की देशव्यापी ख्याति के साथ ही गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं के प्रामाणिक पाठ अनुसंधान कार्य की जानकारी मिलती हैं । किसी भी ग्रन्थ का तिलक अथवा भाष्य की रचना करने के पूर्व बैजनाथ जी उस ग्रन्थ के जितने भी पाठ देश में प्रचलित थे, उनको सबको संग्रहीत कर जाँच-परख कर प्रामाणिक पाठ की तिलक अथवा टीका करते थे; जिसे विद्वत समाज द्वारा सिर आँखो धारण करना भी सिद्ध होता हैं ।

बैजनाथ जी के पत्र बड़े महत्व के होते थे – भाषा की दृष्टि से ही नहीं, भाव की दृष्टि से भी । वे अपने नाम भेजे गये प्रत्येक पत्र का उत्तर देते थे, चाहे पत्र भेजने वाले से उनका पूर्व परिचय रहा हो अथवा नहीं । वह प्रायः बड़े पत्र नहीं लिखते थे । थोड़े ही में जो कुछ कहना होता था, लिख देते थे । श्रीयुत लाला सिंह निवासी-महथी, डाकघर-नरहन, जिला-दरभंगा को लिखा गया पत्र द्रष्टव्य है—

"महाशय लाला सिंह जी को बैजनाथ को प्रणाम उभयो: शुभ आपको पठावा ग्रंथ तथा कृपा पत्र पहुँचि कै परम आनंद दिया गोसाई जी के ग्रंथ १४ मिले तिन पर तिलक हो गया रघुनंदन को नख शिख वर्णन सीताराम संयोग पदावली काव्य-कल्पद्रुम ये तीनि ग्रंथ भये पीछे अध्यात्म-रामायण को तिलक हो गया अब वाल्मीकीय में अयोध्या कांड के ७४ सर्ग तक हो चुका इसके समाप्त भये पर याहू को मति अनुसार करेंगे आप कौन वर्ण आस्पद हैं क्या अवस्था कहाँ निवास पुत्र पौत्र वंश जीविका पैसा विद्या उपासना इत्यादि सब हाल कृपा करि लिखिये मार्ग कृष्ण १४, सम्बत् १९५३ ।" (पत्र सं०–३)

उपर्युक्त पत्र से साहित्य-मनीषी बैजनाथ के सहज स्वभाव, जिज्ञासुवृत्ति स्पष्टवादिता और साहित्य-सर्जना का पता चलता है ।

× × ×

४.१५ बजे का समय । आसमान पूर्व दिशा से घिर रहे काले बादलों से घिरता जा रहा है । किसी भी समय पानी बरस कर यहाँ से लौटना मुश्किल कर देगा, यह विचार कर अव शेष फिर कभी देखा जायेगा कहकर हस्तलिखित पोथियों के बस्ते बांध कर रख देता हूँ । ठाकुरद्वारा में विराजमान भगवान राम-जानकी और शिवालय में विद्यमान देवाधिदेव महादेव के चरणों में शीश झुकाकर एवं पुजारी बाबा श्री रघुराज बहादुर को प्रणाम कर वहाँ से चलते हुए एक बार फिर सन्तकवि बैजनाथ की साहित्य-साधना भूमि को हसरत भरी निगाह से देखता हूँ ।

समय की गति को क्या कहें ! जहाँ कभी सदा सुबह शाम कथा-वार्ता, साहित्य-चर्चा के दौर चलते थे; विद्वानों, सन्त महात्माओं के आगमन से चहल-पहल रहती थी; वहाँ आज कभी-कभार भूले-भटके ही कोई साहित्यानुरागी अथवा सन्त-महात्मा पधारता है । यह जानकर किस हिन्दी प्रेमी को दुःख न होगा कि साहित्य-मनीषी बैजनाथ के गांव में उनकी स्मृति में कोई छोटा-मोटा वाचनालय-पुस्तकालय अथवा विद्यालय भी नहीं है ।

❋

देखन जोग सिया दुलही री ।
सुषमा सत्य शृंगार सार लै, रचत न बल विधि बुद्धि गही री ।
कुन्दन वार तड़ित नेवछावरि, सब सुठौर जस अंग चही री ।।
खुलत करोरि चन्द्र आनन द्युति, छहरि छोनि सखि चकि सी रही री ।
कनकालय केकयी सुमित्रा, सुत सेवा हित दीन सही री ।।
माघ हस्त गुरु असित सप्तमी, वधू सूप करु सास कही री ।
छरस तूर्य विधि बहु व्यजन कै, बैठे सब धरि पीढ़ मही री ।।
थार वशिष्ठ भूप राघव दै, भरत लखन पुनि रिपुहन ही री ।
मुनि प्रेरित नृप चूड़ामणि दै, करि भोजन जग द्वार वही री ।।
सासु खवाय दास दासिन दै, आपु बहिनि सह ग्रास लही री ।
अंस बाँह दै लाल प्रिया सह, 'बैजनाथ' बसि हो कबही री ।।

— 'रामचरित मानस टीका' से
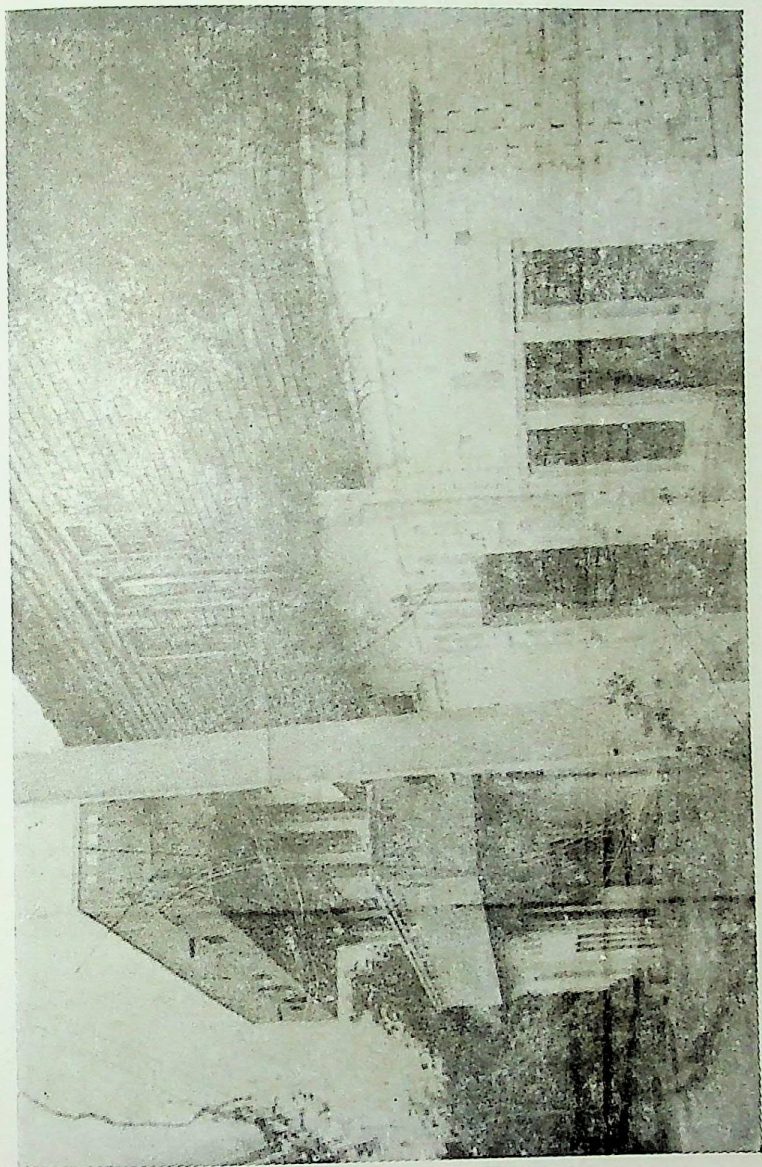
पैतृक-भवन : जिस घर में भक्त कवि बैजनाथ ने जन्म लिया
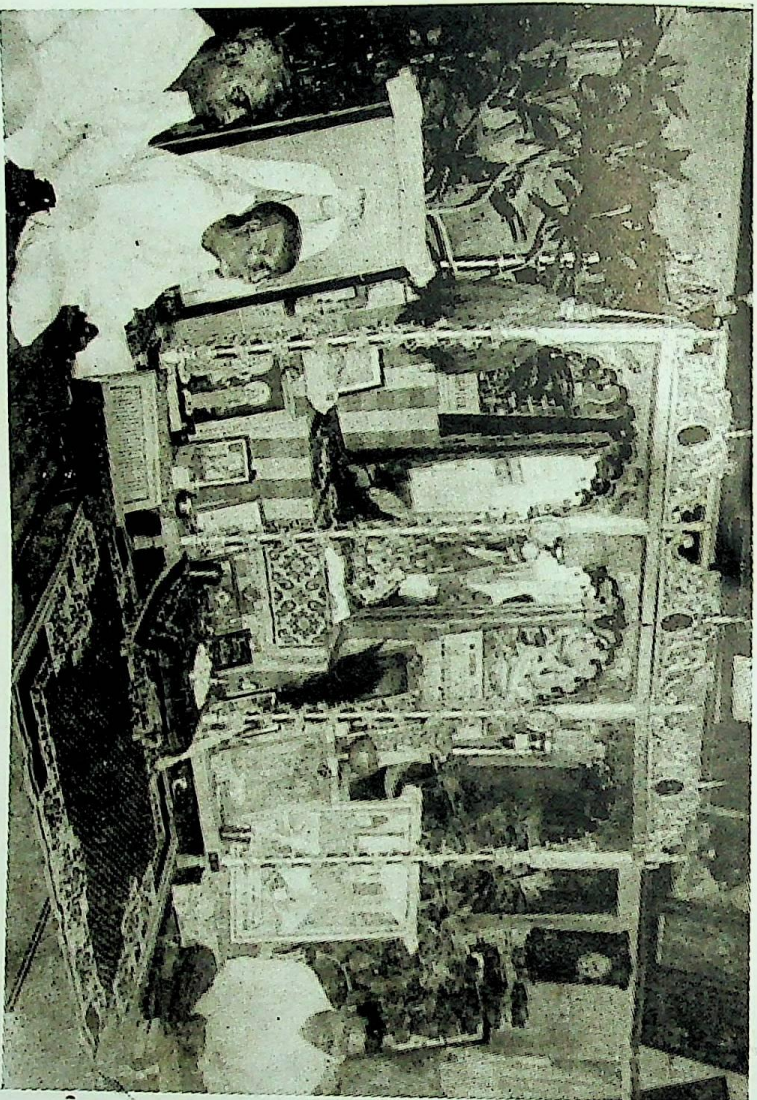
श्री राम-जानकी ठाकुरद्वारा मन्दिर में बैठे हुए बैजनाथ जी के वंशज : बायें से दायें — छोटे पुजारी श्री रघुनाथ प्रसाद वर्मा, पुजारी बाबा श्री रघुराज बहादुर वर्मा और श्री राम प्रताप सिंह ।

श्री राम जानकी ठाकुरद्वारा मन्दिर और शिवालय : एक दृश्य
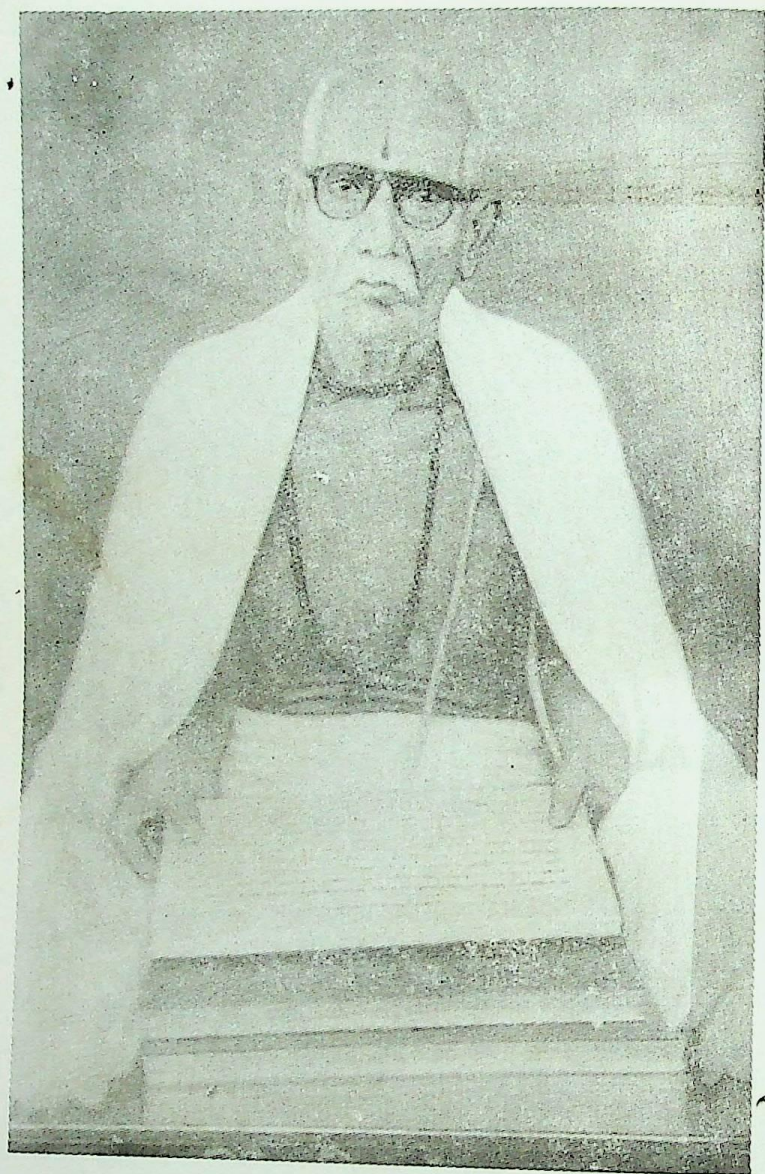
श्री राम - जानकी ठाकुरद्वारा मन्दिर न्यास के संस्थापक
त्यागमूर्ति रामदत्त जी
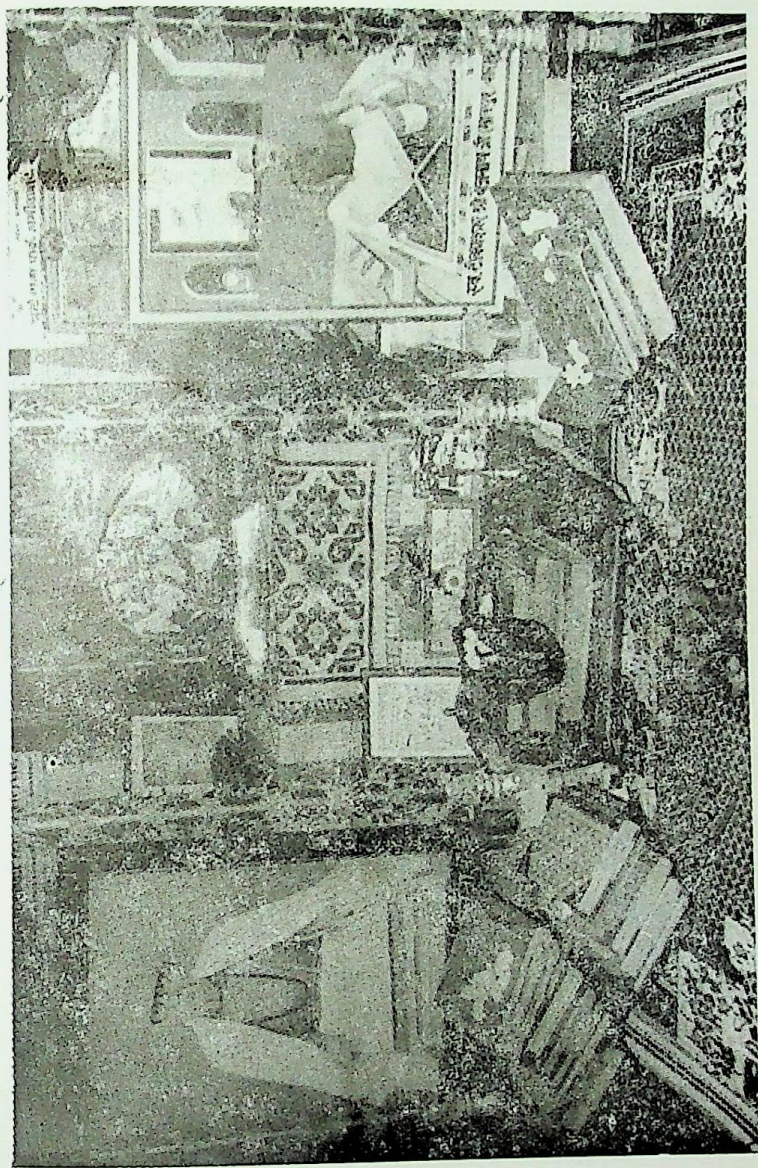
ठाकुरद्वारे में विराजमान भगवान श्री राम - जानकी और उनके सामने
रखा बैजनाथ - साहित्य तथा अन्य स्मृति - चिह्न

रामकथा साहित्य के महान् भाष्यकार बैजनाथ जी की हस्तलिपि
काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ 'काव्य - कल्पद्रुम' से
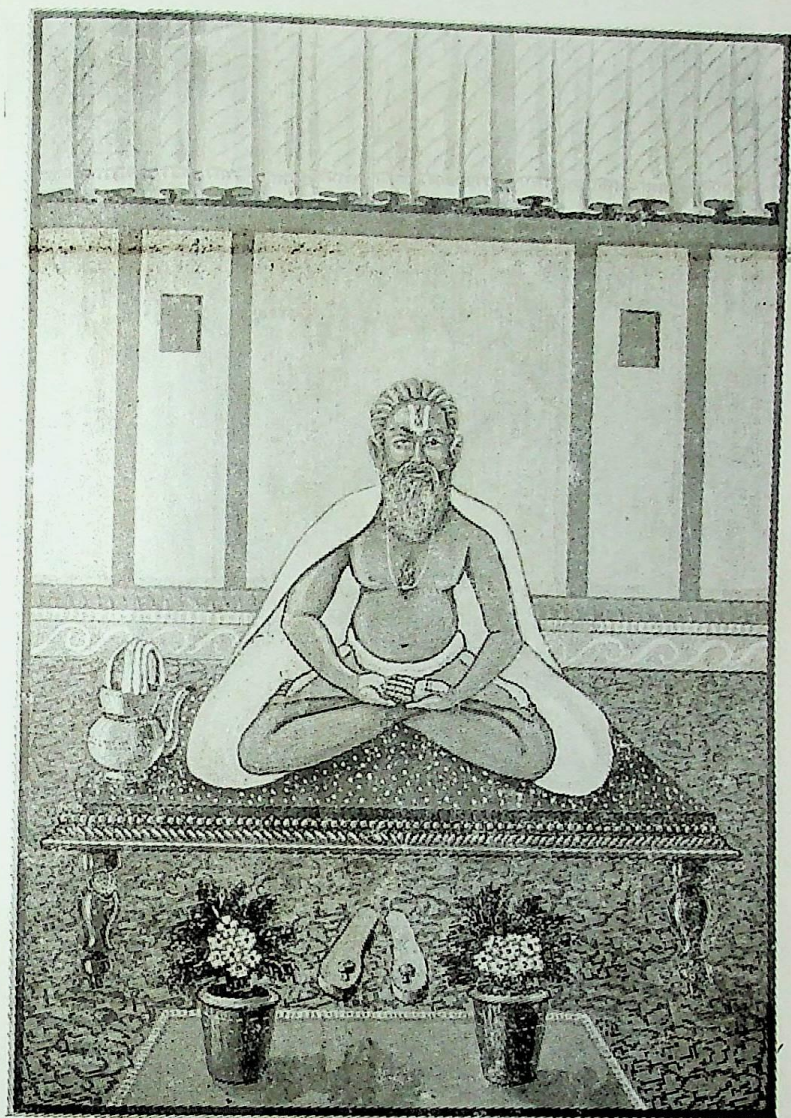
सन्तकवि बैंजनाथ जी के गुरु : सन्त फकीरेराम जी

सन्तकवि बैजनाथ जी का गुरु-मन्दिर : श्री सिय पिय केलि कुञ्ज
रामकोट, अयोध्या

गीतावलीसटीक ॥

मूल गोसाईं तुलसीदासजी व टीका श्रीबैज-
नाथजीकृत ॥

जिसमें

बाल्मीकीय रामायण की सम्पूर्णकथा अनेक उत्तम २
रागों में वर्णित है ॥

उसमें

श्रीरसिकविजन मानसोल्लासक महामहोपाध्याय श्री
बैजनाथजीने हरिभक्तों व सज्जनों के सरलता हेतु
उत्तमरीति से ब्रजभाषा में टीकाकिया ॥

लखनऊप्रदेशान्तर्गत हैदराबाद निवासि मुन्शीदेवी-
दीनजी की अभिरुचि और महात्मा हरिभक्तों व अन्य
विद्यानुरागियों के उपकारार्थ

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोरके छापेखानेमें छापीगई ॥

जनवरी सन् १८८९ ई०

चौथीबार १५००

'गीतावली' का मुखपृष्ठ

इसमें मुद्रित 'महामहोपाध्याय' की उपाधि द्रष्टव्य है ।
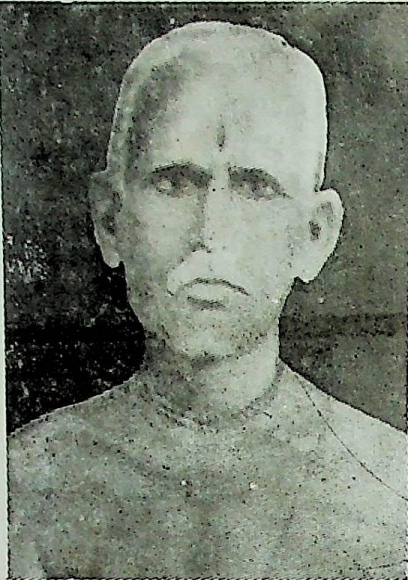
भक्त कवि बैजनाथ

वैजनाथ - साहित्य के प्रकाशक
मुन्शी नवल किशोर भार्गव

EAST INDIA CARD

REPLY

श्रीयुत लाला सिंह निवासी - महथी डाकघर - नरहन जिला दरभंगा को लिखा गया पत्र ।

काव्य-चन्द्रिका

वन्दना

मरकत कनकाभो गौरश्यामो किशोरो ।
तड़ित घन विलासौ पीत नीलाभवासौ ।।
अमल कमल नेत्रौ साधक श्रेयदातौ ।
नमित हरि हरीशौ जानकी जानकीशौ ।। १ ।।

राम राजिव लोचनं गुणनिधि सीतापति राघवम्,
दाशरथि रघुनन्दनं रघुवरं राजाधिराज हरिम् ।
साद्रानद पयोद श्यामल तनुं नाराच पाणौ धनुम्,
वदेऽहं रघुवंश भूषण वरं देवं प्रसन्नाननम् ।। २ ।।

जलधर द्युतिगात्र पूर्णचन्द्राभवक्त्र,
विमलकनकवर्णं पीतवस्त्र दधानम् ।
तड़ितमिकरभासं जानकीवामभागं,
गुणनिधिपररूपं रामचन्द्रं भजेऽहम् ।। ३ ।।

शीर्षे दिव्य किरीटमक्षममलं गण्डस्थले कुण्डलम्,
श्यामाभामरविन्द कोमलतनुं पीताम्बरालंकृतम् ।
पाणौ कार्मुक सायकं कटितटे तूणीरभारामृतम्,
कीर्ति पापभयापहं सुखकरं तं जानकीशं भजे ।। ४ ।।

दशरथसुत रामं शोभया कोटिकामं,
सजल जलद गात्रं भूमिजा स्नेहपात्रम् ।
सुर मुनिजन पालं राक्षसानां हि कालं,
रघुकुलमभिराम देव देवं नमामि ।। ५ ।।

साकेते कल्पमूले वसुदल कमले रत्नसिंहासनस्थं,
सर्वालंकारयुक्तं जलधर रुचिरं संयुतं पीतवस्त्रैः ।
सीतायाः वामभागे धनुशरसहितं ब्रह्मविश्वेश वन्द्य -
मीशानां पारमीशं स्वजन परिवृन्तं स्मरामि ।। ६ ।।

लीला - पद

गावत मंगल कोकिल बैनी ।
मिथिलापुर सिय जन्म भयो सुनि उठि धाई कामिनि बुधि पैनी ।।
झलकत वोप रूप योवन सो आनन चन्द बाल मृगनैनी ।
विचलित हार बार छूटे शिर विगलित वसन विभूषण सैनी ।।
विह्वल गात जात चातक सी दरशन आश स्वाति जल दैनी ।
निरखि निहाल सुता आनन भा पूरण चन्द शारदी रैनी ।।
गोरी हाल चकोरी भोरी यकटक देखि निमेष सिरैनी ।
'बैजनाथ' बलि जात सिया पर तन मन धन बिन मोल बिकैनी ।। १ ।।

भूप सीरध्वज वाम सुता सिय जाई हो ।
सखियाँ घर-घर होत अनंद सु बाजि बधाई हो ।।
नाचि गाय नभ जात अप्सरा छाई हो ।
सखियाँ देत देव जयकार फूल झरि लाई हो ।।
मागध बंदी सूत प्रजा उठि धाई हो ।
सखियाँ ब्राह्मण देत अशीष पाइ मनभाई हो ।।
हरदी दधि फल फूल सुथार सजाई हो ।
सखियाँ गावत मंगलचार नारि पुर आई हो ।।
बाजत डंक मृंदग शंख शहनाई हो ।
सखियाँ 'बैजनाथ' धनि भाग सोहिलो गाई हो ।। २ ।।

खेलत सिया राजमंदिर में मातु पिता सुख पुंज लहे री ।
बाजत पायँ पौंटिया रुनझुन बाल विभूषण झलकि रहे री ।।
सम वय सुता साथ निमिकुल की ग्रह अकाश उड़गण उमहे री ।
छूटे केश सजत आनन पर जनु पूरण शशि राहु गहे री ।।
कबहुँ हेम गुटिका सु उछारत रचत घरौंदा भू सम हेरी ।
विरचि सुपट पुत्रिका विवाहत बसन विभूषण अग ठहे री ।।
आँखि मुँदाय आय मंदिर में लुकत सु आय छुवत यक हेरी ।
हास विलास बाल क्रीड़ा सोइ जा पद रज विधि शंभु चहे री ।।

बाल उछाह जानकी जी के श्रुति सिद्धान्त पुराण कहे री ।
'बैजनाथ' जीवन संतन के सुनत श्रवण अघ पुंज दहे री ॥ ३ ॥

नमो नमो श्री रामलला की ।
रघुकुल कंज प्रकाश भानु खल नाशानय तम निशि सकला की ॥
बीज सुकृति नृप वर्षि विनय विधि भूमि सुहावनि अवध थला की ।
शोभा दल भुज शाख वारि शुचि सींचत प्रीति भूप अबला की ॥
पादप कल्प सफल साधुन को सुखदायक सुर असुर हलाकी ।
'बैजनाथ' सिद्धान्त वेद को मूरति षोडश पूर्ण कला की ॥४॥

बाजै भली अलि आजु बधैया ।
निशिदिन बाज द्वार राजन के आजु सुनात रङ्ग अधिकैया ॥
भई रनिवास मास पूरण जो कर विधि आश सिद्ध मनभैया ।
होइ सुकाल लाल दशरथ के लोक निहाल भाव मनपैया ॥
ता छिन बाल धाय आँगन मैं कहि महराज सुवन भयो मैया ।
'बैजनाथ' सुनि प्रेम उमंगि पुर घर-घर मंगल मोद सुछैया ॥ ५ ॥

राघव गोद खेलावत रानी ।
आजु गई सखि राजमहल में देखि रूप बिन मोल बिकानी ॥
पूरब शरद चंद आनन में कजरारी अँखिया छवि खानी ।
करुणा दया कृपा रसपूरण रंजन संत लोक सुखदानी ॥
पीत झीन झंगुली बिच तन की दरशत श्याम प्रभा तेहि छानी ।
मानहु नील सजल घन ऊपर सुथिर चारु चपला लपटानी ॥
बरणत शेष शारदा शंकर जातन छबि नहि बरणि सिरानी ।
'बैजनाथ' तेहि कौन बखानै नैन समेत थकित मन बानी ॥ ६ ॥

राम बना जस अजाब सलोना ।
तस नहि सुना दीख नहि नैनन भयो न है नहि आगेहु होना ॥
श्याम अनूप भूप लालन को रूप समान विरंचि रचो ना ।
भूलि निरखि मुख चंद माधुरी कामिनि देह गेह सुधि हो ना ॥
औसर आजु राजमंदिर में लेबै लाभ लाज धरि कोना ।
सो पछिनाइ खाइ विष मरिहै खोलि नयन लखि लेबै रि जो ना ॥

मैं भरि अंक सफल तन करिहौं उमगो मैन लाज उरझो ना ।
'बैजनाथ' सीतावल्लभ पै निश्चय आजु पतिब्व्रत खोना ।। ७ ।।

अद्भुत गति रघुनन्द करी री ।
सखि समाज तजि लाज अवस ह्वै अवलोकत नहिं पलक परी री ।।
मृदु मुसकानि कृपान म्यान मुख द्विज प्रकाश खर शान धरी री ।
घायल गात दिखात घाव नहिं काटि हियो दुइ टूक करी री ।।
नेह नवाय कुटिल भृकुटी धनु सजि कटाक्ष विष प्रेम भरी री ।
नयन वाण उर लाग सखी जेहि तरफरात बिन होश परी री ।।
शील रशील अति प्रकाश निसित अति वारि सहित गहि चाह करीरी।
लागत बचन कटार सखी उर बिरह पीर बुधि ज्ञान हरी री ।।
विन अपराध व्याल को शत सुत सखि समाज कुलि कतल करी री ।
'बैजनाथ' परि क्यों उबरै तिय प्रेम गाँठि गर फाँसि परी री ।। ८ ।।

लाल इन देवी के लागहु पाँय ।
जो आवै या कुल में दूलह सब इन पूजै आय ।।
सुमनाक्षत दल गंध धूप दै जो पूजो मन लाय ।
जोइ जोइ मांगो सोइ-सोइ पैहौ सब मन काम अघाय ।।
मन अनुहारि वारि मैं हित सों जो न करो चित चाय ।
सुनि पैहैं यह बात तिहारे तात उठैं खुनसाय ।।
रचना वचन चतुर तिय के सुनि प्रभु बोले मुसकाय ।
तुम पूजित मो चरण की दासी तिन किन इष्ट बनाय ।।
सनकादिक नारद विधि बंदित शंकर ध्यान न पाय ।
'बैजनाथ' सोइ नाथ प्रेम सों रहे पर हाथ बिकाय ।। ९ ।।

सखि सिय राम कोहबर कहँ लाई ।
करि लहकौरि सिखाय गौरि प्रभु सिय सादर बहु भाँति सिखाई ।
कोइ कह लाल जीति यह अवसर कोउ कह सीय जयति यह दाई ।।
बढ़त अधिक आनंद परस्पर हास विलास वरणि नहिं जाई ।
कोइ पदत्राण मूंदि पट अन्तर कहत लाल लागहु पग आई ।।
कपट बिचारि लाल विहँसत मन सखि सब हास करत मन भाई ।

दीप बाति बिलमाइ मिलावत विविध वचन दुहुँ दिशि चतुराई ।
'बैजनाथ' रस बिवस सकल अति सखि समाज मुख लहत अघाई ।। १० ।।

रुचि जानि कलेवा पठवा जनक बोलाय सही ।
आये चारिउ भैया तन शोभा नहिं जात कही ।।
मणि मौर बिराजत भूषण की छवि छाय रही ।
हरषीं सब रानी जीवन को फल आजु लही ।।
सनमान सुबानी सिंहासन बैठारि दियो ।
बहुभाँति रसोई भरि भरि कंचन थार लियो ।।
धरि कै अस बोली जेंवहु मैं बलि लाल गई ।
कछु नेग विचार्यो मणि मुकुता बहु भाँति दई ।।
जब जेंवन लागे सब सखि गारी देन लगीं ।
सुनो राजदुलारे तव जननी पति और पगीं ।।
कहि साँचु हमारी जनि जानो कछु झूठ हहा ।
पितु गौर तुम्हारे तुम श्यामल आश्चर्य महा ।।
दूसरि सखि बोली और सुनी कछु बात महूँ ।
भगनी मुनि ब्याही मिल्यो न राजकुमार कहूँ ।।
सुनतै यह वाणी पुनि सखी तीसरि बात कहै ।
कै और कुवाँरी तव भगनी घर माँझ अहै ।।
सीख मानो हमारी जो तुम्हरे मन बात ठनै ।
इहि छैल कुमारे ब्याहि दियो मिथिलाधि तनै ।।
ऐसे चलि आई की धौं नई यह बात भई ।
कहुँ राजन माँहि की फूफू मुनि सँग गई ।।
यह रीति सदा ई एक बात नहिं जात कही ।
रघु भूप दुलारी चन्द्रावति अस नाम रही ।।
तिनहूँ बिन व्याही कुँवरि हती उर गर्भ धरी ।
सुत नासा कि जायो नाशकेतु तेहि नाम परी ।।
घर छाँड़ि सिधारी आइ महा वन वास करी ।
तिन देखि कुँवारी ऋषि उद्दालक आनि बरी ।।

कहि कौन बखानै बहु बातें यहि भाँति भई ।
कुल माँहि तुम्हारे और सुनी एक बात नई ॥
कोउ राजन माही पुरुष रूपते नारि भई ।
तिनका शशि भोगी तिन यक पुत्र अनूप जई ॥
सखी एक सयानी बोलि उठी मुस्क्याय भला ।
एक बात अनोखी साँचु भई कीधौं झूठ लला ॥
कोउ भूप तुम्हारे पुरुष रूप उर गर्भ लिये ।
सुत जायो अपूरब मान्धात अस नाम भये ॥
अब कौन गनावै अनगनती गनि जात नहीं ।
समरथ कुल भूषण इमि शोभा कुल माँहि रही ॥
यहि भाँति अनोखी गारी दई बहु व्यंग मई ।
अचवन करि बैठे मुख प्रछालि पुनि पान दई ॥
छबि कौन बखानै सह समाज आनन्द भरो ।
सुखमय सिय लालन 'बैजनाथ' उर बास करो ॥ ११ ॥

राम सिया दोउ फागु मचायो ।
फागुन मास प्रमोद विपिन फूलन भार लता झुकि आयो ॥
कोयल कीर कपोत कोकिला चातक चहुँ दिशि शोर मचायो ।
शीतल मंद सुगंधित मारुत भँवर गुंजार सकल बन छायो ॥
देखि उमंग बढ़ो होरी को बाजि उठे डफ बीन सुहायो ।
जयति सीयजय लाल सखा सखि रंग साजसजि चहुँ दिशि धायो ॥
टेसू रंग पतंग सुकेशरि रंग भरी पिचकारी चलायो ।
छूटत मूठि गुलाल कुमकुमा धूरि कपूर अँबीर उड़ायो ॥
लोने छैल किशोर काम से रति स्वरूप नवला सकुचायो ।
सान गुमान भरे नहि मानत निज जय काज लाज बिसरायो ॥
छूटे बार बसन भीजे तन भूषण टूटि धरणि पर आयो ।
धुंध गुलाल सो लाल भयो नभ भूमि कीच मचि जात न गायो ॥
ललकारे उत लषणलाल जी साल ढ़ाल दै कै बढ़ि आयो ।
इति सिय सैन निशंक धाइ सखि झपट लपट ललन गहि लायो ॥

फगुवा मँगाइ भावतो मन करि लाल सीय एकासन आयो ।
निरखत युगल रूप की सुखमा 'बैजनाथ' आनंद न समायो ॥ १२ ॥

हिंडोरे माई झूलत दशरथ लाल ।
सोह बाम दिशि जनकनंदनी कनकलता ज्यों तमाल ॥
शीश सुभग मणि मुकुट विराजत सोहत तिलक सुभाल ।
विथुरी अलक कपोलन राजत कुंडल श्रवण विशाल ॥
पान खात मुस्क्यात परस्पर चितवनि करत निहाल ।
दै गल बाँह लेत जब झोंका उरझि जात मणि माल ॥
श्याम गौर दोउ अंग मनोहर पीत बसन ढ़िग लाल ।
'बैजनाथ' छबि लखि बलिहारी सखि गावत दै ताल ॥ १३ ॥

छवि देखि छकी रघुनंदन की सरयू तट कुंजन में सजनी ।
गज मोतिन माल सजी गर में शिर चदन खौरि अनूप बनी ॥
पगिया जरतार झुकी कलंगी श्रुति कुंडल की द्युति होत घनी ।
अलकैं घुंघुवारि छुटीं मुख पै जनु चंद्र समीप अनेक फनी ॥
कर कंज सरासन वाण लिये कटि पीत दुकूल सों फेंट तनी ।
घन कौन शरीर की लावनता मुख देखि लजात पियूषधनी ॥
यह सुन्दर रूप विलोकत हो मन कंज उदय जनु प्रातमनी ।
अब 'बैजनाथ' नहिं शीरीं लगै ऋतु शीत निशाकर की रजनी ॥ १४ ॥

राघो पियारे को देखो सखी छबि कैसी बनी है सकारे की ।
बिछुरी अलकैं अलसी पलकैं खोलनि दृग रतनारे की ॥
गोल कपोल लोल कुण्डल कल बोल अमोल उचारे की ।
झूकनि झुकनि रुकनि धनि सखियाँ उरझे माल सुधारे की ॥
श्याम स्वरूप अनूप भूप सुत पीत बसन तन धारे की ।
लाजात निरखि कोटि चपला घन का छबि काम बिचारे की ॥
निरखत उठत प्रेम उर अन्तर बदन चंद उजियारे की ।
'बैजनाथ' लखि परनि पलक नहिं भावत नयन हमारे की ॥ १५ ॥

— 'सियाराम संयोग पदावली' से

पावस - विलास

सतत स्वतंत्र परमार्थ पच्छ रच्छकैक,
वेदतत्व सार भूमिभार के हरण हैं ।
साधु जन पाल पुष्ट दुष्टन कराल काल,
घालक अनीति त्यों सुनीति के करण हैं ।।
शीलसिंधु सुलभ उदार दयाबंत वीर,
माधुरी चरित्र करि लोक उधरण हैं ।
हेतु जीव पावन सुयशगाव 'बैजनाथ',
बार-बार बंदि रघुनंद के चरण हैं ।। १ ।।

लोक तापकारक निदाघ ज्वाल जाल देखि,
तास वरखा सचार झिल्लिन सुनायो है ।
पायकै रजाय स्वामि पायन प्रणाम कै,
सुसाध्व संसमाज साथ ग्रीषम सिधायो है ।।
ताहि क्षण लोक सुखदायक सु 'बैजनाथ',
नाथ के निदेश शुभ देश वेस छायो है ।
सेन चतुरंग संग पावस प्रतापवंत,
आनँद सो आय प्रभु पाँय शीश नायो है ।। २ ।।

मेघश्याम सजल समूह ते मतंग झुंड,
लालि श्वेत पीत वाजिराज ठहरात हैं ।
गरज नगार धुधुकार से कठोर घोर,
मंद-मद शोर गज घट घहरात हैं ।।
पाव दल आवत से मारुत प्रचण्ड पूर्व,
स्यंदन समूह बेलि वृक्ष थहरात हैं ।
पावस प्रभाव न बखानि जात 'बैजनाथ',
बीजुली चमाक सो पताक फहरात हैं ।। ३ ।।

कारे मेघ कज्जल से आये आसमान घेरि,
भेरिनाद गरज अँधेरी राति छै रही ।
जुगुनू जमात की मनाक्ति दीप्ति होत जात,
बीच-बीच दामिनी प्रकाशमान चै रही ॥
हाहाकार झमकि झमकि बरषत बारि,
मोर शोर दादुर कलाप धुनि कै रही ।
झंझा पौन झूकन झकोर झोर 'बैजनाथ',
झिल्लीगण झींगुर की झीनी ध्वनि ह्वै रही ॥ ४ ॥

गर्ज सुनि मेघन की चपला चमक देखि,
नाचत मयूर शोर मोरनी मचै रही ।
झाँपिगे सुभानु दीप्ति इन्द्र धनु सोह पांति,
उड़त बलाक व्योम शोभ को सचै रही ॥
बारि अतिवृष्टि भरि पूरित सकल ताल,
नदी नद नारन समुद्र छवि दै रही ।
कै रही कलापटेर चातक सु 'बैजनाथ',
बिदुली सुहावनि हरेरी भूमि पै रही ॥ ५ ॥

सरयू सरित जो सुहावनि लहरि लेत,
धौल स्वच्छ नीर धेनु क्षीर को लजै रही ।
कूजत विहंग बारि फूले बहु कंज मंजु,
तासु तट वाटिका प्रमोद मोद दै रही ॥
'बैजनाथ' ललित बितान से लतान चारु,
फुल गुच्छ मुकुल पुलकि छबि छै रही ।
नारँगी अनार निबु श्रीफल छुहार आंब,
जंबु आमरुत डार भार भरि नै रही ॥ ६ ॥

कंचन सु गचपचि विद्रुम सपोखराज,
हीरा लाल पन्नन प्रकाश पुंज भूमि भूमि ।
बीथि कुंज क्यारिन विचित्र आल बाल वृक्ष,
ललित बितान से लता सु रही झूमि झूमि ॥

मंजु मुक्त झालरें बितान तानि 'बैजनाथ',
धौल धाम उच्च आसमान लेत चूमि चूमि ।
द्वादश दरीचिका सु फटिक पगार चारु,
शीतल मरीचिका सु पौन जात घूमि घूमि ।। ७ ।।

बज्र मै कपाट मणि माणिक विचित्र पौंरि,
गोखन झरोखा जाल जागत सु ज्योति मै ।
दीप्ति दीप वृक्षन प्रकाश गचकांच तैसि,
झूमत वितान तानि झालरैं सुमोति मै ।।
शोभासार वैभव विलास को अबास चारु
मार रति मोहक समृद्धि भाम होति मै ।
शंभु शेष शारदा चकित देखि 'बैजनाथ',
कहौं कौन भाँति पाऊँ बुद्धि कहाँ ओति मैं ।। ८ ।।

सौंध अंतराल शुभ्र विस्तृत बिशाल श्वेत,
चाँदनी बिछाय पै मसद खानि खान की ।
चामर व्यजन छत्र पान पात्र खासदान,
अतर फुलेल पीक गिलनि सुपान की ।।
सेबा साज हाथ लै समाज दासिकाली वृंद,
'बैजनाथ' कौन विधि गति न बखान की ।
भानु सो प्रकाशवंत माणिक जटित चारु,
हेम मै सिंहासनै विराजैं राम जानकी ।। ९ ।।

जटित किरीट हेम हीरन प्रकाश पुंज,
कुंचित कचन ज्योति कुंडल सकान की ।
हीर दंत बिद्रुम अधर मुख पूर्णचद्र,
अक्ष पैन वाण बंक भकुटी कमान की ।।
कंबु कंठ माल सविशाल भुजदंड शुण्ड,
पाणि कंज पीत चीर दामिनी समान की ।
नीलमणि फटिक तमाल चंप 'बैजनाथ',
रति साथ काम किधों राम बाम जानकी ।।१० ।।

झूला साल सानंद पधारे जहाँ कुंज मंजु,
चिंचिनी तमाल चंप प्लक्ष कचनार ही।
बकुल अनार आँब अगर अशोक जंबु,
श्रीफल कदंब रंभ झुकि फल भार ही॥
चातक चकोर चक्क कोकिला कपोत हंस,
मोर शोर दादुर उड़ात शुकशार ही।
'बैजनाथ' आलिन समेत सिय लाल चित्त,
झूलबे कि चाह देखि पावस बहार ही॥ ११॥

काच गच भूमि का सु फटिक पगार पौरि,
माणिक विचित्र चित्त हर परदान है।
द्वार-द्वार दीप पात्र दीपत प्रकाश पुंज,
झालरि मयूष झुकि झूमत वितान है॥
चामर पताक ध्वज खीरकी झरोखा जाल,
माल फूल गुच्छ काम फंद के समान है।
देखि छबि शारद चकित सुनि 'बैजनाथ',
झूला शाल बालन मलारन को गान है॥ १२॥

हेम हीर चित्र शुभ्र विद्रुम विशाल खंभ,
मैन जीति खंभ होत तुच्छता समान की।
पट्टिका प्रबाल पुष्ट बेलन विशाल ज्योति,
जाल भौंर लाल मणि लट्टुन प्रभान की॥
डांडी शुद्ध रचित विचित्र कांति जात रूप,
पन्नन प्रकाश होत पुंज तड़ितान की।
पटली अनूप न बखाने जात 'बैजनाथ',
भव्य मूल झूलनै विराजै राम जानकी॥ १३॥

हरित अवनि सरि पावनि लहरि लेत,
मोदकारि मारुत सुगंध मंद आवती।
नाचत मयूर बारि वृष्टि गरजत मेघ,
बीच-बीच दामिनी प्रकाश नभ छावती॥

बाजत मृदंग बीन शारंगी रबाब ताल,
सुर साधि आलिन मलार राग गावती।
लीय सेव साजं कीय मोद 'बैजनाथ' हीय,
प्रेम सों उमंगि सीय राघव झुलावती ।। १४ ।।

चारि ओर धाय आय गुंजत मलिंद वृंद,
दपट तरंग त्यों सुगंध माल फूलनै।
जागति विभूषण के हीरन प्रकाश पुंज,
नैन चौंधि कौंधि जात गात सुधि भूलनै ।।
संतत अमद युगचंद देखि सीय लाल,
बाल ह्वै चकोरिका विराज दुहुं कूलनै।
आनंद की शूल प्रेम हूल सी कसकि जात,
'बैजनाथ' झूमि - झूमि झोका लेत झूलनै ।। १५ ।।

भूला व्योम भूषण नक्षत्र जाल जाग ज्योति,
बेलि तम शिशुमार चक्रमाल फूलनै।
तड़ित घटा सो छहरात दीप्ति श्याम गौर,
तन फहरात पीत नीलम दुकूलनै ।।
शारदी निशा के युग लालन अमंद चंद,
आनदापलाक्ष हेरि जीव सानुकूलनै।
जौन हाल मोका 'बैजनाथ' सों कहौं का,
चित्त रहत न रोका झूमि झोका लेत झूलनै ।। १६ ।।

जैसी होत खंभन सो दिव्य ज्योति हीरन की,
डांड़िनै प्रकाश पुंज पन्ना ठौर ठौर में।
झालरि मयूख मुक्त पटुलीप राजै दोऊ,
मंजु माल लालमणि शोभ दुहुं ओर में ।।
चंद्रिका तरौन कान कुंडल किरीट दीप्ति,
श्याम गात पीत चीर नील देह गौर में।
'बैजनाथ' लाल सीय झूमि झूमि झोका लेत,
विज्जुल छटा सि होत झूलत हिंडोर में ।। १७ ।।

माणिक सजात रूप मंडित मुकुट मौलि,
कुंडल घटा सों कच भानु भास भोर में।
बाम शीश चद्रिका कि चाँदनी सटीक भाल,
'बैजनाथ' मुद्रित तरौन कान कोर में॥
मंजुल बुलाक माल माणिक मयूख मुक्त,
क्षौम जरतर पीत नीलपट छोर में।
श्याम गौर अंग भव्य भूषण प्रकाश पुंज,
विज्जुल छटा सी होत झूलत हिंडोर में॥ १८॥

आलि एक प्रेम धृत्य नृत्य नील कंठ हेरे,
श्याम गात दिव्य मेदुर घटान की।
स्वाति विंदु माधुरी स्वरूप दर्श खास आस,
चातक सी एक पुष्प प्रेम टेक ठान की॥
चंद्रमास्य कौमुदी चकोरि 'बैजनाथ' एक,
शुद्ध नेह जोरि वृति अंबका पटान की।
एक चकि छकि एक थकित विलोकि होत,
झोकन हिंडोर द्युति विज्जुल छटान की॥ १९॥

दिव्य औध धाम धाम मंगल विनोद मोद,
कानन प्रमोद शुद्ध सारयू तटान की।
बाद्य सुर साध्य ताल गावत मलार आलि,
पावस बहार मोर चातक रटान की॥
सास्वत समाज साज झूलत हिंडोर शोभ,
श्याम गौर गात पीत नील सपटान की।
कीजिये निवास ही अवास 'बैजनाथ' आस,
राम घन श्याम सीय विज्जुल छटान की॥ २०॥

— 'श्री सीताराम पावस-विलास' से

श्रीराम राज्याभिषेक

देवन की भीति सह लोकन अनीति मेटि,
आये रण जीति लिय साथ खास दासनै ।
बाजत निशान पुर धूम आसमान देव,
साजिकै विमान आय अग्र पाकशासनै ।।
छत्र चमर व्यजन अनुज लिये 'बैजनाथ',
वेदगान सोहत सुदीप वृक्ष बासनै ।
राजन के राज महराज राजा रामचन्द्र,
जानकी समेत आजु राजत सिंहासनै ।। १ ।।

वेद धुनि मुनि मनि चौक चित्र दीप दधि,
दूब रोचनाक्ष तस बाल गान वासनै ।
अंकुर सघट रोम पट क्षौम हेम जट,
नटत सनट भट कटक सदासनै ।।
बन्दी सूत मागध सबैजनाथ गान तान,
वदत प्रताप यश कीर्ति अघ नाशनै ।
राजन के राज महराज राजा रामचन्द्र,
जानकी समेत आजु राजत सिंहासनै ।। २ ।।

बाहनी सजग जगमग मगराजै राज,
राजत सनाह नाहतास आस पासनै ।
घुर्मित निशाम शानदार सरदारन की,
रण की सुसज्ज सज्ज शायक शरासनै ।।
सज्जित द्विरद रद उतँग सुतङ्ग तङ्ग,
खैंचि जीन बाजिन की जिनकी समासनै ।
'बैजनाथ' लोकनाथ नाथन के नाथ राम,
जानकी समेत आजु राजत सिंहासनै ।। ३ ।।

फैलि चन्द्रिका सी फोरि फटिक तमारि भास,
दीप्ति दीप बृक्षन की ऋक्षज्योति जासनै ।
झालरि मयूख दर परदा बितान तान,
फबित फरस सम क्षीर फेन तासनै ॥
चामर व्यंजन अनुजन कर आत पत्र,
चौघड़े चँगेर गन्ध पात्र पान वासनै ।
भाषि 'बैजनाथ' लोकनाथन के नाथ राम,
जानकी समेत आजु राजत सिंहासनै ॥ ४ ॥

पुञ्ज फल सफल कदल दल फूल माल,
माल दीप दीपत पतन तन फासनै ।
नृत्य वारि नारि नारि ग्राम ग्राम धूम धाम,
धाम-धाम मंगलाङ्ग अङ्गना सडासनै ॥
मुकुरान्न सात सात कुम्भ कुम्भ वेदि सर्व,
सर्व भद्रकादिका दिशान मोद कासनै ।
'बैजनाथ' लोक शोक जोवन अराम राम,
जानकी समेत आजु राजत सिंहासनै ॥ ५ ॥

सूर भू बिलास कृत चक्रत शतक्रत लो,
प्रतिबद्ध कृतकेतु सक्रतभुगाप भो ।
दुष्कृत दिवान्ध प्रतिघास्मर कुमुद हत,
जीवमन्यु दुष्क्रमाघ मोषक सताप भो ॥
मण्डल अखण्ड पृथु द्योत खण्ड 'बैजनाथ',
सुहृदमनाब्ज हृष्ट ध्वन्त पर दाप भो ।
अनृत तम्यूष पुरपूर्व आस राम भद्र,
आसनोदयाद्रि भानु उदित प्रताप भो ॥ ६ ॥

कुचलान्धकारी छपि सुचल प्रकाश भास
लुकिदघ चोर छपाचर हत दाप भो ।
सुजनाम्बुजात से प्रकाशमान 'बैजनाथ',
नाथ लोक लोक चकबाक से मिलाप भो ॥

आरसीश भानु हिम जोहि थार शीश,
हारसी वृहदभानु छार शीश माप भो ।
अनृत तम्यूष पुर पूर्व आस राम भद्र,
आसनोदयाद्रि भानु उदित प्रताप भो ॥ ७ ॥

बैठे भद्र आसनै समाज राज शीशताज,
भ्राज अङ्ग अङ्ग मणि भूषण झलक है ।
मुनिन समाज सह मुनिराज कञ्ज कर,
कलित ललित कृत हिय में ललक है ॥
'बैजनाथ' सीतानाथ माथ पै विराजै स्वच्छ,
अक्षत निसाक्षत सअक्ष अपलक है ।
सुयश झलक की सुकीर्ति लकालक की,
प्रताप की फलक कीधौं राजसी तिलक है ॥ ८ ॥

बिभ्रददभ्रांशुमूर्ध्नि हाटक सरत्न क्रीट,
मण्डन करनिकार गण्डन सुदेश को ।
विलसि कचानन विभूषित सुकम्बु ग्रीव,
दत्तज समीर हीर हार शुभ्र वेश को ॥
अंशुकजरी के झलाबोर कोर क्षोर रश्मि,
'बैजनाथ' अच्छतै सचक्र मन शेश को ।
सर्सिहसंहनन महेक्ष भद्र आसन स्वर,
स्थित अनूप भूप रूप कोशलेश को ॥ ९ ॥

मण्डित कोदण्ड शर आस्रप समग्र खण्डि,
दुष्क्रमाघ हत क्षोनि हरता दशेश को ।
भवति दबिष्ठ खल व्यस्त कान्दिशीक क्षिति,
'बैजनाथ' मोद मुनि शाश्वत सुरेश को ॥
धीर धुर धार शुभ्र सत्तम अदभ्र यश,
विस्तृत समग्र लोक लोक मण्डलेश को ।
अगुण सगुण रूप व्यूह पर आदि सब,
रूपन अनूप भूप रूप कोशलेश को ॥ १० ॥

चण्ड मारतण्ड क्रीट कुण्डल करन सृत,
वृतगण्ड मण्डल बिशाल भानु भोर को।
विस्तृत प्रकाश पुञ्ज सजल घटा सो तन,
बिज्जुल छटा सपट पीत जर कोर को॥
द्रुत अलकावली सृतानन शरद चन्द,
'बैजनाथ' बिदित सुयश चित्तचोर को।
हेरे सब रूप ऐसो दूसरो न रूप जैसो,
हेरे मैं अनूप रूप कोशल किशोर को॥ ११॥

सघन नक्षत्र नभ तन श्याम हीर हार,
छहरि छटा सी ज्योति पट पीत बोर को।
दीपत प्रताप व्योम विदिशि दिशान क्षिति,
मण्डित मुकुट मौलि माणिक अथोर को॥
कुण्डल मकर गण्ड मण्डित कचानन पै,
पूरित सअग्र द्रुत द्विजन तमोर को।
हेरे सब रूप ऐसो दूसरो न रूप जैसो,
हेरे मैं अनूप रूप कोशल किशोर को॥ १२॥

मण्डल धरारि तम खण्ड दोर दण्ड चण्ड,
दण्डित अदण्ड बरिबण्डहू समल भो।
क्रूर चक्र कातरनि दाघ हृत दैविकादि,
मोखकँन लुकि मुद्रितासर कमल भो॥
स्रवत कृपामृतोत्कजीव जीवमुक्त मोद,
'बैजनाथ' कुमुद विकासित विमल भो।
मुनिमान सानदाब्धि वृहतोर्मि पूर्ण पश्य,
राम चन्द्र चन्द्र यश उदित अमल भो॥ १३॥

भानु दीप्ति घामैं पृथु द्वादश कला मैं द्युति,
चन्द्र चन्द्रिका मैं रत्नसागर मुदित है।
शरद घटा मैं नभ विद्युत छटा मैं स्वच्छ,
शंकर जटा मैं गङ्गधार सी कुदित है॥

'बैजनाथ' नारद मैं धातु रस पारद मैं,
कहिबे को शारद मैं सुबुधि रुदित है।
दिवस निशा मैं एक रस भो रसा मैं व्योम,
विदिश दिशा मैं यश रामैं को उदित है ॥ १४॥

कीरति अपार 'बैजनाथ' कोशलेंद्र जी की,
धरा पै हिमाद्रि श्रृंग गङ्ग उर्मि का सी है।
गङ्ग पै सुकर्म कर्म ऊपर दया सो दान,
दान सनमान पर धर्मशीलता सी है॥
धर्मशील पर शम दम पै विराग त्याग,
त्याग पर शुद्ध रूप ज्ञान दीपिका सी है।
ज्ञान दीप पर मुक्ति चतुर मशाल ऐसी,
मुक्ति पर दीप्ति भक्ति प्रेम लक्षणा सी है ॥ १५ ॥

बिभ्रत सुकीर्ति बैजनाथ राघवेन्द्र जी की,
क्षोणि शीश क्षीरधि पै कुमुद विलासी है।
कौमुदी कुमुद पै सो ता पर शरद घन,
घन पै सुभूरिभाव दीप्ति चपला सी है॥
चपला पै चन्द्र पूर्ण षोडश कला सी रूप,
चन्द्र पै समृद्धि तप विधि बिमला सी है।
विधि तप पै सुहरिहर के प्रभा सी,
हरिहर पै ज्वलित आदि ज्योति की कला सी है॥ १६॥

भानु रामचन्द्र भद्र आसन उदोत होत,
'बैजनाथ' विस्तृत प्रताप ठाम ठाम ही।
चल चलदलन कुचाल सरितान रही,
कूर रह्यो बागन मलीन धूम साम ही॥
भीष उपवीत हीन लाज फागु खेल हारि,
मार शर लक्षन सताप महि घाम ही।
काम निज वाम ही सलोभ यश नाम ही,
सक्रोध क्रूर काम ही रह्यो है मोह राम ही॥ १७॥

साधु यश नीति धर्म लाज भागि कीर्ति ज्ञान,
आदि की अकार बरजोर छोर लीनी है।
सोई मद काम क्रोध लोभ मान मोह बैर,
दोष दूषण के पूर्व युक्त कीनी है॥
हरि विधि लोक सुर लोकन के 'बैजनाथ'
खोलि कै केवांर लै निरय के द्वार दीनी है।
वीर बान मान गुरु दान दीन जनन को,
रामचन्द्र राज्य में अपूर्व रीति कीनी है॥ १८॥

धम धुर धार आपु बैठे भद्र आसन पै,
दासन सुखद धर्मबृद्ध भो अथाहिये।
पाप ताप तिमिर अधर्म कर्म नाश पाय,
हरु सागराम्बरा अनन्त मुदिता हिये॥
नाग मुनि नाह दिग नाह लोक नाह नर,
नाह सुर ताव के पनाह बाह छाहिये।
राज शिर ताज रघुराज महराज तब,
समाज साज राज श्री सदैव राज चाहिये॥ १९॥

—'राजगद्दी के उन्नीस कबित्त' से

श्री संकटमोचन-महिमा

जनमत ही बाल केलि लाल फल जानि भानु,
धाय ग्रास कीन भे उदित परे लोचनै।
होत अंधकार लोक तीनि हाहाकार त्रास,
टारि को सकैगो जीव संकट कुशोचनै॥
देव गण आय जब बिनती सुनाय आपु,
दियो तब छांड़ि मिटे रबि कष्ट शोचनै।
विधि हर साहस बखानै 'बैजनाथ' को,
न जानत तिहारो नाम संकट विमोचनै॥ १॥

बालि बैर त्रास मानि भागत सुकंठ चारि,
ओर तीनि लोक फिरे व्याकुल सकोचनै ।
आवत न बालि ऋषि शाप ते सु ऋष्यमूक,
बास ते सुआवत बिलोकि कंज लोचनै ॥
भीत ह्वै पठाय द्विज रूप आपु आय राम,
चन्द को मिलाय कै मिटाय कपि शोचनै ।
संतत सुकीर्ति साधु गाव 'बैजनाथ' को,
न जानत तिहारों नाम संकट बिमोचनै ॥ २ ॥

सीय शोध हेत जामवंत नल नील आपु,
अंगद के साथ गे अपार कीश को गनै ।
मास अंत बध आव असुधि कह्यौ कपीश,
त्रास उत पक्षि धाय खाय वाय चोचनै ॥
बैठि सब शोचत समाज शोकवंत देखि,
आपु फांदि सिंधु सीय सुधि लाय ताछनै ।
सुयश बदंति भालु कीश 'बैजनाथ' को,
न जानत तिहारो नाम संकट बिमोचनै ॥ ३ ॥

हेरि देखि गुप्त बैठि विटप अशोक आपु,
ता क्षण सनारि तत्र आय बीसलोचनै ।
साम दाम भेद समुझाय हीय हारि गो,
लगाय सीय हीय में कुबैन पैन खोचनै ॥
मुद्रिका दै विपिन उजारि दुष्ट मारि लक,
जारि कै प्रणाम लौटि मेटि सीय शोचनै ।
राक्षस सराहैं जासु बीर 'बैजनाथ' को,
न जानत तिहारो नाम संकट विमोचनै ॥ ४ ॥

कुप्त मेघनाद लुप्त यान पै अरुढ़ गुप्त,
कीश सेन सुप्त ही पै कृत बाण मोचनै ।
बाँधि नाग फांस किय व्याकुल बिहाल कीश,
राघव समेत सब सीदही सकोचनै ॥

नारद को प्रेरि आपु शीघ्र ही खगेश,
आनि सदल कुबंधन छुड़ाय कंज लोचनै ।
बुद्धि गुप्त चातुरी सराहै 'बैजनाथ' को,
न जानत तिहारो नाम संकट विमोचनै ॥ ५ ॥
मेघनाद बाण उर धाय बंधु शोक राम,
शासन सधाम लै सुखेन वैद्य को छनै ।
सुनि तासु युक्ति जाय सहसा उखारि ताहि,
धारि द्रोण गिरि धाय वेग तौन को गनै ॥
आनि दै सजीवनी पिआय वैद्यराज पाय,
लषण जिआय यों मिटाय दुःखशोचनै ॥
वेग बल राघव सराहैं 'बैजनाथ' को,
न जानत तिहारो नाम संकट विमोचनै ॥ ६ ॥
वेष सो विभीषण के सेन महि रावणाय,
लै गयो पताल ही सबंधु कंजलोचनै ।
पूजि विधि देवि को सुआनि बलि दान हेत,
दोऊ जन ठाढ़ कै लगाय सीस रोचनै ॥
जायकै सहाय ह्वै संहारि महिरावनै,
सुदोऊ बधु लायकै मिटाय सेन शोचनै ।
तेज बल बीरता प्रसिद्ध 'बैजनाथ' को,
न जानत तिहारो नाम संकट विमोचनै ॥ ७ ॥
कीन्हे बड़े लोगन के काज महाबीर आप,
दूसरो न स्वामि यों विचार आव मो मनै ।
दीन जन आप को गुलाम कौन मेरा शोक,
मेटि न सकत जो निहारि कोर लोचनै ।
बीर बलबान हनुमान श्री प्रतापवंत,
वेगि ही मिटाइये स्व दास शोच पोचनै ।
सुयश प्रताप लोक छायो 'बैजनाथ' को,
न जानत तिहारो नाम संकट विमोचनै ॥ ८ ॥

— 'श्री हनुमन्नाष्टक सटीक' से

श्री कृष्ण - लीला

जासु नाम पंकज वभूव करतार लोक,
पालत सदैव अरि नाश भव को दमै ।
पारब्रह्म पूरण अखंड सत चिदानन्द,
नेति - नेति वेद यश गावत बिनोद मैं ।।
सिद्ध-साधु-साधक-मुनींद-योगिवृंद योग,
ज्ञान-जाप-ध्यान धरि ध्यावत प्रमोद मैं ।
'बैजनाथ' पोष भरि लालत चराचर मैं,
जग जाकी गोद में सो जसुदा की गोद मैं ।।

व्योम-भू-पताल-नाग-नर-सुर शोचहीन,
मोच दीन छीन होत जानि दुष्ट घाल की ।
मुनि-साधु-सज्जन सुचाल कंज को विकास,
आस हीन कूर गै विभावरी कुचाल की ।।
वसुदेव - देवकी को जीवन की मूरि लाभ,
'बैजनाथ' देव गाइ कीर्ति बृजपाल की ।
जसुदा के नंद जग आनंद को कंद घर,
नंद के अनंद भयउ जै कन्हैया लाल की ।।

गंगा - माहात्म्य

नाम के लिए ते सुर धाम को देखात पथ,
रेणु का करत जमगण मुख कारा है ।
देखत तरंग दुख जीवन को भंग होत,
तीर के समीप तीनों तापन को जारा है ।।
मंजन औ पान हरिधाम को पठाय देत,
कीरति यह सांची चारों वेदन कौं पुकारा है ।
कहैं 'बैजनाथ' चलैं हाथ तीनों देवन के,
गंगा जी की धारा पाप काटने में आरा है ।।

धातु गो लोक की दुकान विधि धाम धरि,
प्रेम की उसास फूंक संसी प्रीति सारा है ।
आगी अनुराग ताप कोयला सुकर्मन को,
धर्म की निहाय नेह हथौर लै सुधारा है ।।
रेती हरिपाँव धोय दाँतहू निकारि विधि,
पाटि आदि तीरथ तट भागीरथ ढारा है ।
कहैं 'बैजनाथ' हाथ चलैं तीनों देवन के,
गंगा जो की धारा पाप काटने में आरा है ।।

— स्फुट पद

ऋतु - वर्णन

रम्मित रसालन में तम से तमालन में,
किंशुकान जालन में लालिमा लसंत है ।
सरिता कलोलन में कोकिला के बोलन में,
मंद पौन डोलन में गंध बरसंत है ।।
कमल अनारन में कुंद कचनारन में,
छवि डार डारन में सोहत अनंत है ।
बन बाग बेलिन में बर बाम केलिन में,
चम्पक चमेलिन में विलसि बसंत है ।। १ ।।

डारन पलासन के फूलिहैं अँगार फूल,
शूल की सी हूल सहकार बौर लाइहै ।
पांडर चमेली चप फूलन को धनु सर,
साजि रतिनाथ हाथ कोप करि धाइहै ।।
घोरि घोरि जहर से बोरिहै समीर,
यमदूत से भयावने मलिंद गन गाइहै ।
होइहै तुरन्त देखि प्राणन को अन्त,
बीर कंत बिन भवन वसन्त ऋतु आइहै ।। २ ।।

बाग बिहार बिलोकि भली,
नव पल्लव लाल तमालन माँहीं ।
गुंज मलिंदन कूजत कोकिल,
फूलि पलाश रहे चहुधाँहीं ॥
बैजसुनाथ बहार बसंतहि मोदित,
दै गर नाह के बाहीं ।
माहक वाहक लाहरि शीतल,
लेत खड़ी सहकार की छाहीं ॥ ३ ॥

भोरहि नाह बिदेश गयो उठि,
ठाढ़ि भई तिय ऊँचि अटारी ॥
यौवन जोम गुमाम भरी तन,
दीप्ति दिपै जनु बिज्जु छटा री ।
आँबन बौर सुगंधित मारुत,
देखत ही वै पलाशन डारी ।
शोग वियोग ते सूखि गिरी,
जनु कंज कली सि तुषार कि मारी ॥ ४ ॥

तावां सी तपावनी पजावा सी सासमान,
भानु दांवां सो लगाइ लोक आँवाँ सी दिवार है ।
आगि की सी ज्वाल जाल चलत प्रचण्ड पौन,
'बैजनाथ' सूखि गये सरि सर नार है ॥
खस के अगार बीच छूटत फुहार लागि,
चारों ओर द्वार गंधसार के केवार है ।
वारि हिमसार घनसार को पसारतहु,
लागत अपार ऋतु ग्रीषम की झार है ॥ ५ ॥

भूत से भयावने ह्वै भ्रमत भभूरि भूरि,
वृष राषि भानु नाहिं भृंगी वृष गायो है ।
धूरि ना उड़ात भरि पूरित विभूति अंग,
लहरि उठत सांप सेल्ही गर छायो है ॥

चलत प्रचण्ड पौन ज्वालन के जालमेल,
'बैजनाथ' वीर अग्र वीरभद्र धायो है।
ग्रीषम त्रिनैन नैन खोलिकै कपाल केन,
फैन देखि मैन पै सुसैन सजि आयो है॥ ६॥

रथी चढ़ि रथ ऐसे भ्रमत भभूरे बड़े,
छोटे छोटे मानहुँ सवार देत काये हैं।
आँधी घोर पैदर से आवत अपार धारि,
उड़त डकूर आगे गजराज धाये हैं॥
'बैजनाथ' सरि सर शत्रु से सहमि सूखि,
आतप प्रताप पुंज लोक सब छाये हैं।
कोपु करि आजु चतुरंग दल साजि मानों,
हिमिदल जीतिवे को भानु चढ़ि आये हैं॥ ७॥

धीर समीर सुगन्ध भरी,
तिमि सींचत नीर उशीरन छानी।
पंकज के दल सो दलदार,
बिछौ नव तल्पहि चादर तानी॥
सोइ रहै सुख बैजसुनाथ,
भरे तन चन्दन ग्रीषम जानी।
चंपकमाल सि बाल विशाल,
तमाल सो लाल गरे लपटानी॥ ८॥

छटा मेघ मूलनि में अवलि बगूलन की,
सुर धनु खूलनि सुहाइ रही घाहरै।
कोकिला कलोलन कलिंदजा के कूलनि में,
बोलनि मयूरन की चातक सु काहरै॥
चंद मुख भूलनि में कुसुम दुकूलनि में,
'बैजनाथ' जासु रूप काम बाम भाहरै।
नाह प्रेम फूलन में बाह गर मूलन में,
लै रही हिंडोलनि पै झूलनि की लाहरै॥ ९॥

उमड़ि घुमड़ि घन घेरि घहरात नभ,
बैजनाथ बुंदन बयारि बह दून री।
झुकि झुकि झूलत हिंडोरे नवरंग पर,
बदन दुचंद होत चंद दुति ऊनरी ॥
श्याम को बुलाव नेक निरखि निहाल होहि,
बार-बार कहत सुनत बात तू न री।
किरिनि सि छूटि तैसे फूटि निसरी है,
मानो यौवन उमंग पै कुसुम रंग चूनरी ॥ १० ॥

ऋतु पावस आवत री सजनी,
रजनी तम छाइ रही गहरै।
तिमि मूल सबोल मयूरन के सुनि,
दादुर चात्रिक की कहरै ॥
अस धीरज कौन धरै जग में,
परबासिन बाम हिये कहरै।
बिरही जन बोरन घोर प्रलै,
उमड़ी नभ श्याम घटा घहरै ॥ ११ ॥

जागत जेवर से जुगुनू तड़िता,
जरि यामिनि श्याम पटी है।
झींगुर नूपुर बैजसुनाथ,
बगावलि माल धमिल्ल घटी है ॥
राग समीर तितार लतावर,
भेक मृदंग मजीर ठटी है।
फाटत ही तिय वित्त बिना नर,
नाचत पावस आपु नटी है ॥ १२ ॥

प्रगट निवास गुहा पूरुब दिशा सो गिरि,
मृगगन गह नभ कानन चरद को।
मत्त झुंड तम कुंभ कुंजर बिदारि बर,
विथरे नक्षत्र मुकुतावलि भरद को ॥

भूषित शृँगारि मारि सुन्दरी निसा लै साथ;
'बैजनाथ' अरि मुख करम जरद को।
पेसरी प्रकाश देस देसरी सवेस,
छाइ बिचर स्वछंद चंद केसरी शरद को ॥ १३ ॥

चाँदनी पयोधि मानों उमगि प्रलै के,
चंद बाड़व अनल जारि करत गरदगी।
बरत अगार से तड़ागन में फूलि कंज,
खंजरीट यमदूत जानन दरद की ॥
व्याधि सी बढ़ाय शीत शीतल समीर धीर,
'बैजनाथ' कोपि सर कुसुम धरद की।
हरद लगाय बिन जरद भयो है तन,
करद सो रैन मोहि लागत दरद की ॥ १४ ॥

थोरे देत बुंदन बलाहक के वृंद नभ,
फोरे देत गमन रयन तम छोरे देत।
जोरे देत नेहिन के उर नेह तागन को,
मैन बनि तागन के मानगढ़ तोरे देत ॥
घोरे देत जहर कहर बिरही को पौन,
भौनपति भामिनि को अमीधार फोरे देत।
कोरे देत दरदन उपहार 'बैजनाथ',
चोखी चाँदनी सदा अमद चंद बोरेदेत ॥ १५ ॥

लोक सदा सुखदा हिमिदा,
विसदा छन दानि सुछावनि देतौ।
ताल जदा बिसदा कुमुदा,
उमदा चकदार सुहावन देतौ ॥
बैजसुनाथ सजा जलदा,
मन षष्ठपदागन गावन देतौ।
आसपदा वनदा मरदा,
शरदा शरदारिनि आवम देतौ ॥ १६ ॥

अंतक से विषधर संत के समान भये,
जंत आतताइन के कुंद भये दंत है।
थहरि कपंत जग अदल अनंत देखि,
गर्व बलवतन के टूटत तुरंत है।।
पवन चलंत हिमि सुभट अनन्त निशि,
सेन सी वढ़ंत पाय सैनो निशिकंत है।
'बैजनाथ' यशवंत कीरति सबलवंत,
प्रबल प्रतापवंत आयो हिमिवंत है।। १७ ।।

कंप सभीत करावन गात,
ससीत समीरहिं धावन देतो।
बैजसुनाथ डरै मति तू,
पटरोमसतूल वोढ़ावन जेतो।।
उच्च उरोज लगे उर में,
बिन शीत न जात तपावन केतो।
आवत कंत तुरन्त बनी,
घर बाल हिमंतहि आवन देतो।। १८ ।।

नारि नवोढ़ द्विरागम जान दे,
गाव दे गीत सुग्रामहि ग्रामिनि।
मोदित लोग सजोग सिंगारत,
सेजहि जानदे कंत सकामिनि।।
बैजसुनाथ को धीर धरै,
बिन नारि सिराइनि श्यामहि यामिनि।
मार्गमहै हरिमार्गन नाडर,
आवदे मार्ग सुमारग गामिनि।। १९ ।।

पौन पछू संग सीत चमू,
सबहै दिशि फैलि चहू सम फैना।
फोरि घरू सहसा तन घूसत,
ओढ़हु तू सपटू सहमैं ना।।

कौन उपाय बचूँ सजनी अब,
वैजसुनाथ जसूस के ढैना।
मूसत धीरज देह में घूसि कै,
खून को चूसत पूस की रैना ॥ १० ॥

शीतल सुगन्ध मंद मारुत मतंग झुण्ड,
मण्डित कुसुम तरु तुरग लसंत को।
रचित रसाल रथ रथी रतिनाथ हाथ,
फूलन धनुष सर सजि बलवंत को ॥
लता गुल्म पैदर सो पाटल सो चोपदार,
कोकिल नकीब 'बैजनाथ' बरनंत को।
जोरदार तोरदार बाँकुरो मरोरदार,
सिसिर उदार सरदार है बसंत को ॥ २१ ॥

टेसू कास मोर लाख कुसुम पतंग रंग,
होजन मजीठ माठ घट भरे बाल की।
गन्धसार अगर कपूर मृगमद कीच,
पिचका अबीर मूठि छूटत गुलाल की ॥
चीर चादरान साल ढ़ाल सो बचाइ चोट,
'बैजनाथ' कुमकुमा चलाइ ओर गाल की।
छल करि अली चली हली श्याम सैन जाइ,
गली गली भली फागु मची लली लाल की ॥ २२ ॥

आपु पट कोट ओट चोटन बचाइ चोट,
छूटत बधूटिन ते छवि छलकत है।
दामिनि सि दमकि चमक अंग अंग जनु,
जोबन उफान मैन फैन फलकत है ॥
फफकि-फफकि फूटि फूटि निज सैनन ते,
जोटिन धरन 'बैजनाथ' ललकत है।
चांद भाग भाल पर गोर गोर गाल पर,
मणि गण जाल पै गुलाल झलकत है ॥ २३ ॥

होरी खेलि गोरी थोरे दिनन किशोरी आइ,
घर रंग बोरी अंग-अंग रूप दून री।
छूटत सुगन्ध क्षिति छहरि प्रकाश ठाढ़ी,
आंगन अकेली साथ दूसरो बधू न री॥
'बैजनाथ' खोलि बंद कंचुकी उतारि उच्च,
कुचनि बिलोकि होत बिलवमन ऊनरी।
मोरि मुख नासिका सिकोरि दंत दाबि ओंठ,
मूठी चापि चुननि निचोरै चोखी चून री॥ २४॥

खेलत खेल उमंग सो रंगन,
भीजि गई तन कंचुकि सारी।
बैजसुनाथ चलावत एकहि,
एकन पै रंग की पिचकारी॥
ढ़ीठि गुवारि बचाइ कै दृष्टिहि,
मूठि गुलाल कि मूठि सि मारी।
मोहि कै लाल बिहाल भये,
तेहि काल सकै नहि देह सँभारी॥ २५॥

कोप भरी फुफकै पिचकारि,
कु नागिनि सी विषधार चलैहै।
लाल अबीर उड़ी चहुधा,
जग आगि के ज्वाल सों देह जलैहै॥
बैजसुनाथ बिना घर लालन,
बागबिबूरि सो श्वास चलैहै।
जा गुन सो बचि एक हुतागुन,
ताग सो लागुन फागुन ऐहै॥ २६॥

—'षट् ऋतु वर्णन' से

परिशिष्ट

परिशिष्ट - १

सन्त कवि बैजनाथ की गुरु - परम्परा

गुरु संप्रदाय प्रचार जग उपजे रामानंद ।
तिनके द्वादश शिष्य में श्रेष्ठ अनंतानंद ॥ १ ॥
गया दास तिनके भये तिनके लक्ष्मी दास ।
तिनके माधव दास भे तासु शिष्य सुख रास ॥ २ ॥
चतुर्दास खोजी भये द्वारा जासु प्रकाश ।
राम दास तिनके भये तासु शिष्य हरिदास ॥ ३ ॥
तिनके कृपा राम जय कृष्ण दास भे तास ।
संतोष दास ता शिष्य भे श्री रघुनाथ सु दास ॥ ४ ॥
पूर्ण दास तिनके भये ब्रह्म दास भे तासु ।
वास किये डाकौर मे अजहूँ मंदिर जासु ॥ ५ ॥
श्याम दास तिनके भये राम दास भे तास ।
सकल धरा को अटन करि पंचवटी कृत वास ॥ ६ ॥
तिनके शिष्य उदार श्री स्वामी वैष्णव दास ।
भूमंडल पर्यटन करि कीन्ह अयोध्या वास ॥ ७ ॥
कृपावारिधर शिष्य तिन विदित फकीरे राम ।
अवध जन्म भू पास ही दक्षिण मुख को धाम ॥ ८ ॥
तिनको सेवक आदि मैं पिता पुत्र के भाय ।
कृपा दृष्टि उर में दिये राम तत्व दर्शाय ॥ ९ ॥
गुरु सिय बल्लभ शरण कहि बैजनाथ पितु धाम ।
रसिक लता सिय कल्पतरु सेवत आठौ याम ॥ १० ॥
बार बार वंदन करौं पद पंकज गुरु देव ।
तिनकी कृपा कटाक्ष ते जानि परत सब भेव ॥ ११ ॥
अधम उधारन नाम ज्यहि रूप सकल गुणधाम ।
चरण कमल वंदन करौं जानक सुता सह राम ॥ १२ ॥

—'वाल्मीकि - रामायण टीका' की भूमिका से

परिशिष्ट - २

सन्तकवि बैजनाथ का वंश-वृक्ष

परिशिष्ट - ३
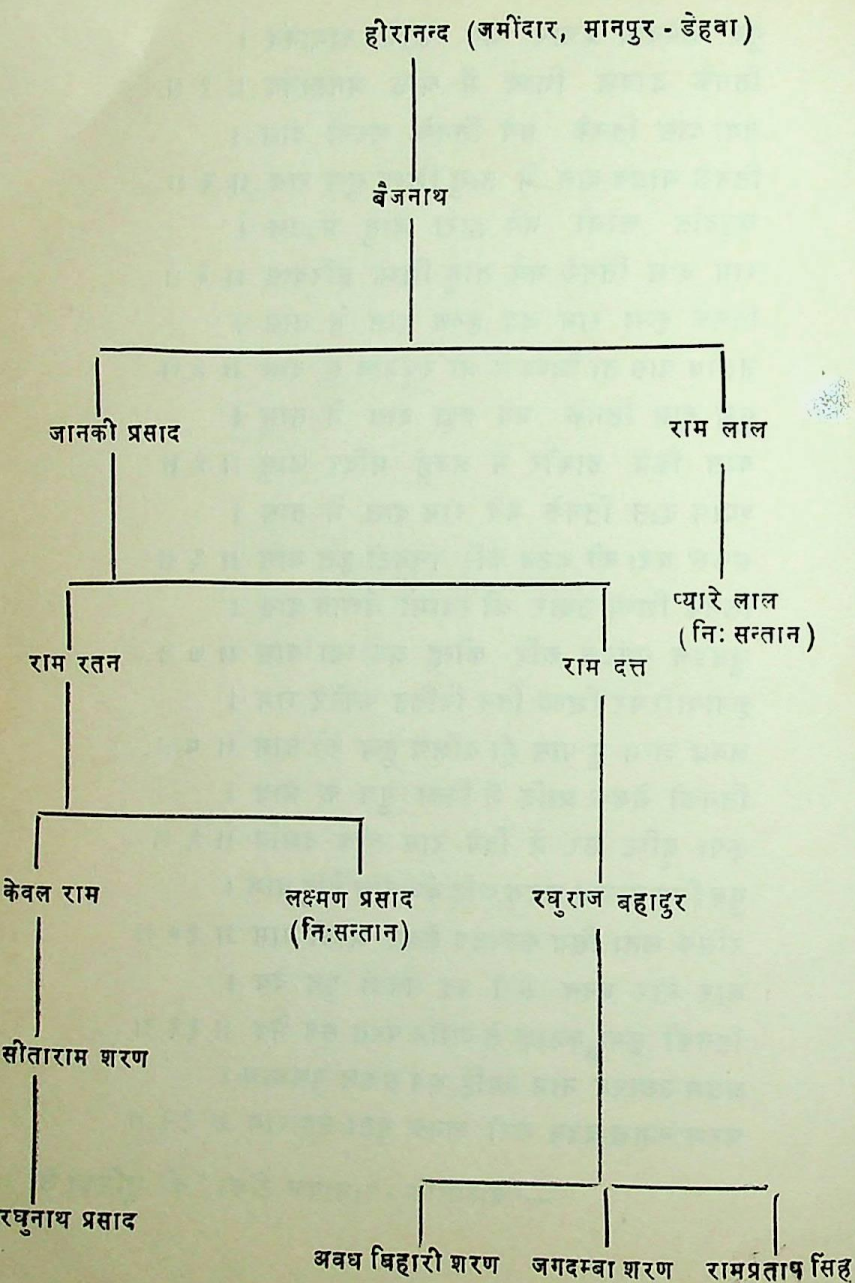
सन्त फकीरे राम का वंश-वृक्ष
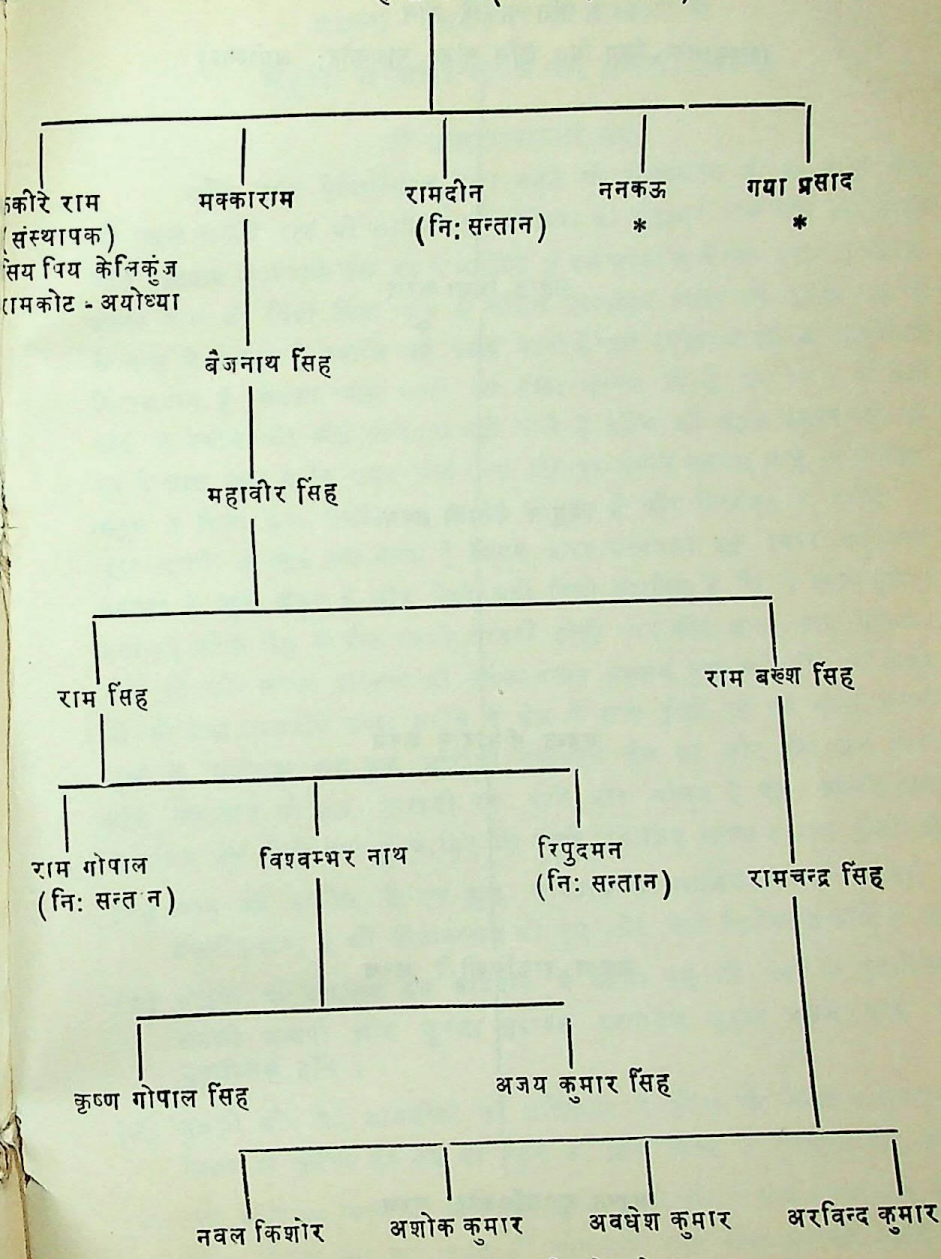
* ग्राम - पतरहा, जिला - बहराइच के निवासी हो गये ।

परिशिष्ट - ४

सन्त फकीरे राम के उत्तराधिकारी शिष्य

सन्त फकीरे राम

(संस्थापक - सिय पिय केलि कुंज, रामकोट; अयोध्या)

|

महन्त सिया शरण *

|

महन्त मैथिली शरण

|

महन्त सीताराम शरण

|

महन्त राजकिशोरी शरण

|

महन्त युगलकिशोर शरण

* यही हैं - सिय बल्लभ शरण अथवा बाबा बैजनाथ ।

परिशिष्ट—५

श्री सिय पिय केलि कुञ्ज - राम कोट, अयोध्या की प्रबन्ध - व्यवस्था के सम्बन्ध में महन्त मैथिली शरण का तमलीकनामा

श्री सीतारामाभ्यां नमः

मन्कि महंत मैथिलीसरन चेला महंत श्री सियासरन जी वा नाती चेला श्री महंत फकीरे राम जी साकिन श्री अयोध्या जी मुहल्ला राम कोट का हूँ इस वक्त जायदाद मुफस्सिले जैल का मैं मालिक हूँ इस जायदाद में एक स्थान है जिसका अस्ली नाम श्री सिया पिया कुँज है लेकिन ज्यादातर स्थान श्री फकीरे राम जी के नाम से मशहूर है क्योंकि वह इसके बानी हैं इस स्थान में जो श्री ठाकुर जी विराजमान हैं उनका नाम नामी श्री सीता बल्लभ जी है इस स्थान में कोई गाँव या जमीन और कोई जायदाद नहीं लगी है बल्कि श्री महत फकीरे राम जी का ये खाश हुक्म है कि अगर कोई सख्स गाँव या जमीन लगाना चाहै तो हरगिज कबूल न किया जाय क्योंकि वह फसाद की जड़ है और विश्वंभर के भरोसे से जुदा करती है सिर्फ चंद सेवक हैं जिनके द्वारा परमात्मा इस स्थान का काम चलाता है मुझे मंजूर है और मेरी यही दिली ख्वाहिश है कि ये स्थान हमेशा बना रहै बल्कि रोज व रोन इसको तरक्की होती जाय और अच्छे साधू महात्मा इस्में रहैं और उनका सतकार हो उनका वाहम सतसंग हुआ करें और श्री ठाकुर जी की सेवा राजभोग उम्दा तरीके से प्रेम के साथ होती रहै इस वास्ते अपनी खुशी से समझबूझ कर कुल आराजी मुफस्सिले जैल का और नीज उस स्थान और मकानात जो उस आराजी पर वाके और मोजूद हैं यह तमलीकनामा वसरायत जैल लिखे देता हूँ चाहिए कि उसके बमोजिब अमल दरामद होता रहै

(१) आज की तारीख से इस कुल जायदाद के मालिक जिसकी बाबत मे तमलीकनामा है श्री सीताबल्लभ जी हुए और मेरी मिल्कियत साकित हुई

(२) आइंदा जो जायदाद इस जायदाद में बढ़ैगी वह भी उसी के मुताल्लिक समझी जायगी और जुमला सरायत दस्तावेज हाजा उसके साथ भी मुताल्लिक होंगे ।

(३) मुझको और मेरे जांनशीनों को अख्तियार न होगा कि किसी जायदाद को हिबा या संकल्प या बय या रहन या और किस्म से मुंतकिल कर सकैं ।

(४) जब कभी इस स्थान के महंती की जगह खाली हो तो जन्म स्थान और मंगल भवन में जो उस वक्त महंत हों और राम रतन वल्द जानकी प्रसाद कौम कूर्मी साकिन व जमींदार मौजे मानपुर तहसील नवाबगंज जिला बारहबंकी

और रामसिंह वल्द महाबीर कौम कूर्मी साकिन व जमींदार मौजे पाटमऊ तहसील नवाबगंज जिला बारहबंकी के या जो कोई उनके खानदान में उस वक्त सब में बड़ा और लायक हो ये चारों शख्श इत्तिफाक राय वसूरत इखतिलाफ वा कसरत राय मेरे चेलों वा नाती चेलों वा गुरुभाइयों व दीगर अंश खास खानदान आजा गुरू से जिस किसी को सतोगुनी व नेक चलन वा लायक समझैं उसको महंत मुकर्रर करैं और जब जब महत मुकर्रर करने की जरूरत परै तब तब यही कायदा इंतिखाब महंत का बर्ता जावै ।।

(५) स्थान के पुजारी करने का अख्तियार महंत को होगा ।

(६) महंत पर फर्ज होगा कि हर रोज कम से कम बारा हजार जुगुल नाम यानी श्री सीताराम नाम जपै और श्री तुलसी कृत रामायण के सुन्दरकाण्ड के तीन पाठ करै और अपना चाल चलन नेक बनाये रक्खै और साधू सेवा किया करै और आमदनी वा षर्च का हिसाब रक्खा करै और अमूर जैल से कत्तई परहेज रक्खै ।।

(१) कोई रोजगार करना ।। (२) देन लेन करना लेकिन अगर किसी सेवक को कर्जा लेने की जरुरत आ पड़ै और महंत के पास रूपिया मौजूद हो तो उसको विला सूदी दे सकता है ।। (३) किसी की जमानत करना ।। (४) पूजा चढ़ने के निमित्त कथा बाँचना ।। (५) कर्जा लेना ।। (६) जो महंत इस दस्तावेज की दफा छ व सात की तामील न करेगा उसको वह चार शख्श जिनका जिक्र इस दस्तावेज की दफा ४ में आया है महंती से मौकूफ कर सक्ते हैं ।।

(७) इस स्थान में औरतों और मधुकरियों को रहने की इजाजत नहीं है ।।

(८) क्योंकि इस स्थान में कोई निबंध यानी मुस्तकिल मुकर्रिरा आमदनी नहीं है इस वास्ते इस स्थान के षर्च का हिसाब इस दस्तावेज में लिखा नहीं जाता बल्कि महंत की राय पर छोड़ा जाता है जिस काम में जो षर्च हो वह मुनासिब समुझ से करैं ।।

तफसील आराजी

मिजुम्ले	नम्बर	रक्बा पोख्ता
,,	५१	ऽ६ – १३
,,	५१	ऽ१० – २
,,	१६७	ऽ२ – १०
,,	१६७	ऽ२ – ३ – ४
		१ऽ१ – ८ – ४

तफसील स्थान वा मकानात

स्थान श्री सिया पिया केलि कुंज ज्यादातर नाम श्री फकीरे राम जी जिस्में ५ दर्जे हैं

१– मंदिर श्री सीतावल्लभ जी कदीम सड़क पुख्ता के उत्तर है

२– इस मंदिर के उत्तर वाला चौक जिस्में कुवाँ और फुलवारी और तीन तरफ मकान और उत्तर तरफ फाटक है

३– इस फाटक के उत्तर वाला हाता जिस्में पाषाना और फाटक है

४– मंदिर के पूरुब वाला हाता जिस्में दो कोठरी हैं

५– लम्वे २ वारे चौक के पूरुब वाला हाता

चौहद्दी आराजी और स्थान की मर्याद

पू० मं भगवद्दास जी वा म० लालता
प० नई सड़क पु० उ० नई सड़क पो०
दक्षिण कदीम सड़क पो०
इस कुल जायदाद की मालियत मुबलिग